मासिक

जय हाटकेश वाणी

jaihaatkeshvani.com

अप्रैल / मई 2015 (संयुक्त) वर्ष : 9 अंक : 11-12

संघर्ष, सेवा और सदाचार की मूर्ति

श्रद्धेय पं. श्री कांताप्रसादजी नागर

प्रभुमिलन-28 मार्च 2015

किशोर टेन्ट हाऊस इलेक्ट्रीक डेकोरेशन व केटरिंग

प्रोप्रायटर : कैलाशचन्द्र रावल मो. 96179-02151, रवि रावल मो. 96696-08782, अर्जून रावल मो. 90987-41508

109-बी, वैभव नगर, ग्राम बिसन खेड़ा, इन्दौर

सौ. शिवाली शर्मा-
चि. आशीष दुबे
(दि. 18 अप्रैल 2015)
को प्रथम
विवाह
वर्षगाँठ
की हार्दिक
शुभकामना

शर्मा परिवार, राऊ, दुबे परिवार बोरिया, तह. देपालपुर
मिश्रा परिवार, भिकनगाँव, नागर परिवार, नलखेड़ा
दीक्षित एवं रावल परिवार, खजराना
मो. 98267 23641, 93000 96973

खनक त्रिवेदी
23 Apr.
(सुपुत्री
सौ. पूजा-अर्पित त्रिवेदी)
को जन्मदिन की
हार्दिक बधाई

शुभाकांक्षी

पं. नित्यानंदजी त्रिवेदी (परदादा), योगेन्द्र त्रिवेदी-श्रीमती कृष्णा त्रिवेदी (दादा-दादी),
छोटे दादाजी-छोटी दादीजी, हेमंतजी त्रिवेदी-सौ. प्रमिला त्रिवेदी (नाना-नानी),
मामा, मामा दादा-मामी दादी, मासी-मासाजी, सुमित दुबे-सौ. अर्चना दुबे,
हिमांशु व्यास-अपर्णा व्यास (बुआ-फुआजी), राम-रचित-निकुंज (भाई)
आर्ची त्रिवेदी (बुआ), अनुराग-आयुष व पार्थ त्रिवेदी (चाचा)।

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं श्री रवीन्द्र नागर, नईदिल्ली
पं श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुंबई
पं श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं श्री दिनेश शर्मा, इटावा (तराना)
पं श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा
सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ. दमिता नवीन झा
-विज्ञापन-
पवन शर्मा
98260 95995
-वितरण एवं शिकायत
दीपक शर्मा
94250-63129

सम्पादक वाणी...

सत्य, सेवा और दान की सेल...

मनुष्य जीवन में कर्म और व्यवहार के साथ ही साथ की गई कुछ क्रियाएं ही यश और मोक्ष दिलाने का कार्य करती है। परिश्रम से धन कमाना आसान है, परन्तु यश और कल्याण के लिए धर्म, सेवा और दान का आश्रय लेना जरूरी है। क्योंकि सत्य ही धर्म है। माना जा सकता है कि कारोबार में जुड़े व्यक्ति के लिए पूर्णतया सत्यवादी होना सम्भव नहीं है, परन्तु आटे में नमक के समान ही उसे झूठ बोलना मान्य है। जो व्यक्ति यथासंभव अपने कार्य और व्यवहार में सत्य का समावेश कर लेते हैं, वे धर्म की दिशा में कदम बढ़ा लेते हैं। कार्य के साथ 'सेवा का सूत्र' भी जरूरी है, यदि आपको परमार्थ के लिए अपनी व्यस्तता से समय न भी मिले तो कार्यस्थल पर ही सेवा की जा सकती है। जरूरतमंद को लाभान्वित करने का तरीका ही सेवा है। कब किसकी दुआ लग जाए और आपके जीवन में यश, दिघार्यु और समृद्धि और सम्पन्नता का सूरज उग जाए पता नहीं, इसलिए कार्य के साथ-साथ सेवा का सूत्र अपनाना आवश्यक है, तथा यह परमात्मा की राह में बढ़ा एक कदम भी होता है। जिस प्रकार आज बाजार में एक के साथ दो या अधिक वस्तुएं सेल करने का प्रचलन है, उसी प्रकार सत्य और सेवा आत्मशांति समृद्धि के साथ परमात्मा के करीब जाने का उपाय भी है। दान का भी ऐसा ही है शास्त्र तो कहते हैं कि परिश्रम से प्राप्त धन की शुद्धि दान से ही होती है, प्रसन्नतापूर्वक योग्य हाथों में दिया गया दान कई कुलों को तारता है। दान भी ऐसा ही सूत्र है जो आत्मशांति के साथ परमात्मा की राह भी खोलता है। यदि आप अपने कार्य एवं व्यवहार में सत्य, सेवा और दान को उतार लेते हैं तो यश एवं समृद्धि घर बैठे चले आते हैं। जो लोग केवल धन कमाने में जीवन खपा देते हैं वे अंत में पछताते हैं, उनकी स्थिति माया मिली न राम वाली होती है। जबकि उपरोक्त तीन सूत्र अपनाने वाले प्रसन्नमुद्रा में परमात्मा की गोद में जाते हैं और यह सब आसान है, केवल अभ्यास की जरूरत है और यह भी समझ लीजिए कि जो व्यक्ति सेवा में अपना समय दे रहे हैं, वे समय का सही मायने में सदुपयोग कर रहे हैं, जो दान कर रहे हैं वे अभाव में नहीं पड़ते, उन्हें उससे कई गुना अधिक धन की प्राप्ति हो जाती है। परन्तु ये सब बातें कहने सुनने में कम समझ में आती है, करके ही महसूस की जा सकती है। जिस प्रकार रक्तदान के बारे में जुमला प्रचलित है कि 'कर के देखो अच्छा लगता है' ऐसे ही मेरे द्वारा उपरोक्त लिखी बातें भी आप करके देखो अच्छा लगेगा। प्रारम्भ आदि और अंत सुधारने के लिए तीन सूत्र अपनाना जरूरी है।

– संगीता दीपक शर्मा

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क : अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो.94250-63129, 98260-95995, 99262-85002
Website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

॥ जय श्री कृष्ण ॥

ग्यारहवां पुण्य स्मरण

मेरी पूज्य माताजी

श्रीमती रामप्यारी देवी नागर

की पुण्य स्मृति पर

सादर अश्रुपुरित

श्रद्धांजलि

15 अप्रैल

श्रीमती रामप्यारी देवी नागर

दुनिया में सबसे बड़ी वो माँ कहलाती है...

एक नन्ही सी जान को जो दुनिया में लाती है,
नजरों से बचाने को वो टीका लगाती है,
सुलाने को जो उसे लोरी सुनाती है,
डर जाने पर जो उसे सीने से लगाती है ।
चुका नहीं सकते कर्ज कभी हम जिसका,
दुनिया में सबसे बड़ी वो माँ कहलाती है।

छोटे से कदमों को जब चलना नहीं आता,
हाथों से आँखों को मलना नहीं आता,
तब वो प्यार से काजल लगाकर,
छोटी-सी जान को दुल्हन सा सजाती है।
छोटे-से कदमों को चलना सिखाती है।
दुनिया में सबसे बड़ी वो माँ कहलाती है।

पढ़ाती थी, लिखाती थी...
जीने का तरीका हमें बताती थी,
जो मिला नहीं उसे वो भी दिया हमें,
कभी मन को मारकर नहीं जीने दिया हमें,
भेद बताती है जो सही गलत का,
पाठ पढ़ाती जो स्वर्ग और नरक का,
जो जीने की हमें नई दिशा दिखाती थी ।
टुटे हुए हौसलों में उम्मीद जगाती थी,
बातों को सुनती थी, रातों को जगती थी,
दिनभर काम करके कभी न जो थकती थी,
पौंछ कर आँसू जो हमें हँसी दिलाती थी।
दुनिया में सबसे बड़ी वो माँ कहलाती है।

न देना दु:ख उसे, अगर खुशी न दे पाओ तो,
बुढ़ापे में छोड़कर उसे तुम कहीं दूर न जाना।
ये कोई ओर नहीं, वो माँ है जिसने
सब कुर्बान किया, बस तुम्हारी हँसी के लिए,
अब कर देना न्यौछावर तुम भी जिन्दगी बस उसी के लिए,
क्योंकि माँ सबके साथ दुनिया में नहीं रह पाती,
खुशनसीब हो तुम जो आज भी वो तुमको टीका लगाती है।
और तुम्हारी खुशियों में जो तुमसे भी ज्यादा खुश हो जाती है।
इसीलिए, दुनिया में सबसे बड़ी वो माँ कहलाती है।

श्रद्धानवत : बेटी - गायत्री बद्री शर्मा

148, राजाराम नगर, देवास, मो.99266 47702

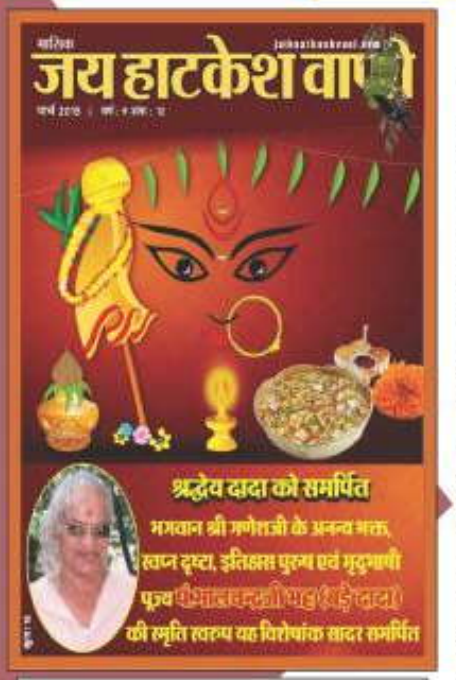

अनुमान के साथ अनुदान

मासिक जय हाटकेश वाणी का प्रदेश स्तरीय आजीवन सदस्यता अभियान वर्तमान में मध्यप्रदेश में चल रहा है। इस अभियान का उद्देश्य है 'वाणी' की आपूर्ति सुनिश्चित करना, आजीवन सदस्य बनाना, परिवार के जो सदस्य दूसरे शहरों में नौकरी कर रहे हैं, उनके ई-मेल आय.डी. प्राप्त करना, ताकि उन्हें मेल पर 'वाणी' उपलब्ध कराई जा सके। इस अभियान के दौरान दो तरह की बातें सामने आ रही है। पूर्व में की गई 250 रू. वाली तीन वर्ष की सदस्यता को ही कई समाजजन आजीवन मान बैठे हैं, वे नई सदस्यता में आनाकानी करते हैं, तो कई समाजजन ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि 550 रू. तो आजीवन शुल्क बहुत ही कम है। समाज में कुछ परिवार ऐसे भी हैं जिन्हें बगैर शुल्क लिए पत्रिका भेजी जा रही है, जबकि कुछ परिवारों पर आजीवन शुल्क का बोझ डालना हमें ही अनुचित लगता है। इन सब विसंगतियों के बीच आखिर 'वाणी' को लगातार मुखर रखने का क्या उपाय हो सकता है। उसे भले ही 'प्रायवेट प्रकल्प' के रूप में प्रचारित किया जाए, लेकिन उसकी मूल भावना में तो समाज उत्थान का ही उद्देश्य है। इस सेवा की प्रतिपूर्ति हेतु शासकीय विज्ञापन भी एक साधन है, परन्तु विगत डेढ़ साल से चुनाव के दौरान आचार संहिता के चलते ये विज्ञापन भी नहीं मिले। समाज के कुछ भामाशाहों ने मुक्त हस्त से अनुदान देकर इस प्रकल्प को जीवित रखा है। आप सब समाजजन सोचें कि प्रतिमाह इस पत्रिका का अनवरत प्रकाशन कितना कठिन कार्य है। वे यदि मानते हैं कि इससे समाज का वास्तव में भला हो रहा है तो वे अनुदान के माध्यम से इसे संबल दे सकते हैं। जो सक्षम परिवार है तथा यह अनुमान लगाते हैं कि 550 रू. में कैसे आजीवन सदस्यता दी जा सकती है, तो वे अनुदान एवं विज्ञापन के माध्यम से इस 'वाणी' को पोषित कर सकते हैं। समाज को एकसूत्र में बांधने, प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने, विवाह सम्बन्ध तय कराने जैसे कई कार्य इस पत्रिका के माध्यम से किए जा रहे हैं। आप यह अनुमान लगाएं कि यह काम कितना मुश्किल है फिर यथासंभव अनुदान देकर इस कार्य को सरल करने में हमारे सहभागी बनें, इसी निवेदन के साथ।

- सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

मैं .....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूं। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूं। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड, (गोराकुण्ड) इंदौर में खाता क्रमांक- 0325201004027 में जमा किया है।

www.haatkeshvani.com

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इंदौर-452002
फोन- 0731-2450018/मो. 99262-85002/99265-63129
Email : jayhotkeshvani@gmail.com/ manibhaisharma@gmail.com

प्रेरणादायी व्यक्तित्व-श्री कांताप्रसाद जी नागर, दास्ताखेड़ी

संघर्ष, सेवा और सदाचार की मूर्ति

प्रभूमिलन, 28 मार्च 2015

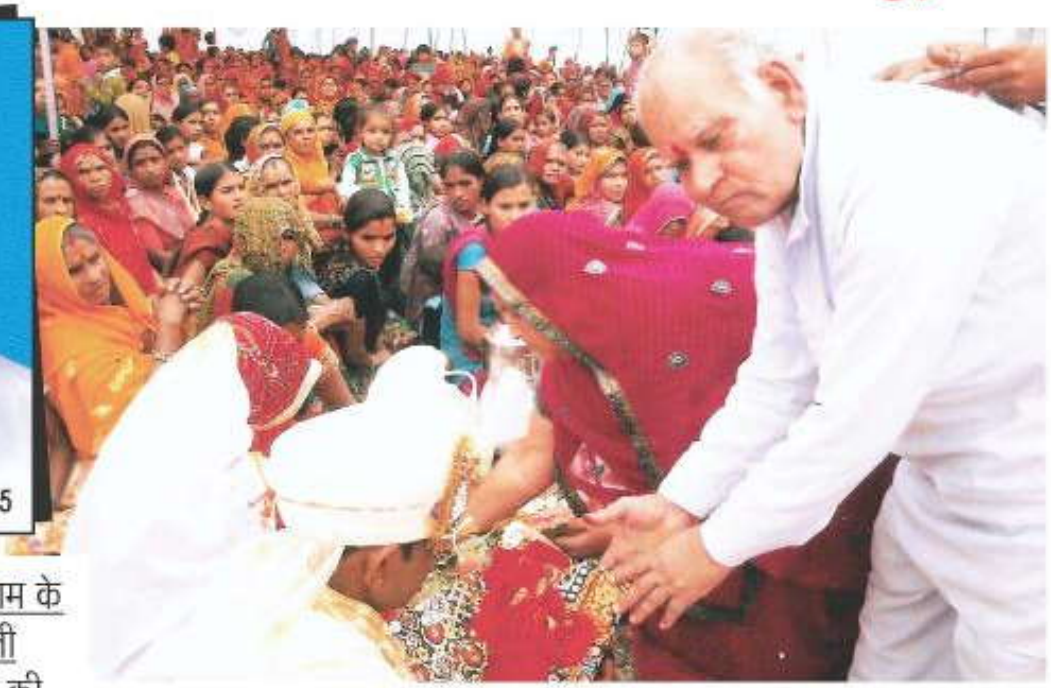

राजगढ जिले के तिनोनिया ग्राम के मूल निवासी श्री कांताप्रसाद जी नागर संघर्ष सेवा एवं सदाचार की मूर्ति थे। हरि-हर के भक्त श्री नागर को भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में जीवन यापन का ठौर मिला और शिवलिंग के निकट पीपल के पेड के नीचे हरि ॐ तत्सत कहकर उन्होंने चिर विदाई ली।

मृदुभाषी, प्रसन्नमुखी एवं स्थितिप्रज्ञ श्री कांताप्रसाद जी नागर का जन्म 11 मार्च 1938 को राजगढ़ जिले के तिनोनिया ग्राम में हुआ। उनके पिताजी का नाम श्री गौरीशंकर जी नागर एवं माताजी का नाम श्रीमती सूरजदेवी था। अध्ययन पठन में आपकी रुचि बाल्यकाल से थी एवं प्रारंभिक शिक्षा ग्राम निपानिया में अपने मामाजी श्री बापूलाल जी नागर के यहां रहकर प्राप्त की। असमय माताजी के देवलोकगमन से विद्यार्जन में अवरोध उत्पन्न हो गया, तथा इसी बीच उन्हें निमोनिया हो गया। उस समय चिकित्सा के साधन इतने उन्नत नहीं थे, गांव के एकमात्र वैद्य ने जब हाथ टेक दिए तो संत तुकड़िया दासजी के एक सद्शिष्य ने एक दिन की तपस्या का फल इनको भेंट किया। बताया जाता है कि इनके पूज्य पिताजी

सन् 2004 में आयोजित सिंहस्थ महाकुंभ का दृश्य

तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर के साथ पं. श्री कांताप्रसाद जी नागर

ने नरसिंहगढ़ में आद्यशक्ति माँ भगवती की आवाज स्वयं अपने कानों से सुनी थी। इनका स्वास्थ्य ठीक होने के पश्चात आगे की पढ़ाई अनेक कष्टों का सामना करते हुए ग्राम मोढ़ी में पं. श्री भंवरलाल जी (ब्याय जी साहब) के वहां रहकर की। कुछ समय पश्चात जब वह अपने गांव लौटे तब पिताजी ने उनका विवाह पं. श्री सांवरलाल जी नागर (लडावद) की सुपुत्री सुशीला देवी के साथ 1963 में किया तथा विवाह के पश्चात वह तिनोनिया ग्राम से शाजापुर जिले के दास्ताखेड़ी ग्राम में भगवान श्री राधाकृष्ण का पूजन करने पधारे।

ग्राम दास्ताखेड़ी में भगवान श्री कृष्णजी की सेवा करते-करते डाक विभाग में कार्यरत हो अपना जीवन यापन किया तथा सुसंस्कारी परिवार का लालन-पालन किया। दो सुपुत्रियों को विद्याध्ययन के पश्चात सर्वश्रेष्ठ वर चुनकर विवाह सम्पन्न करवाया, इनके तीन सुपुत्रों में सबसे बड़े डॉ. राधेश्याम नागर ने गरीबों की सेवा का संकल्प ले चिकित्सा क्षेत्र को अपनाया। द्वितीय पुत्र पं. विनोद नागर (गोविन्द जाने) और तृतीय पुत्र मनीष नागर के विद्याध्ययन के पश्चात विवाह सम्पन्न करवाया। खास बात यह है कि वे अपने सुपुत्रों की सेवा एवं सदाचार की भावना की कद्र करते थे तथा अपने सद्कार्य को हस्तांतरित हुआ मानते थे।

श्री कांता प्रसाद जी नागर प्रेरणादायी व्यक्ति थे, शांत चित्त एवं आंतरिक गुणों से ओतप्रोत निर्विवाद निर्विकार जीवन के पश्चात उनका देवलोकगमन भी ईश्वर का नाम लेते हुए हुआ।

पं. विनोद नागर (गोविन्द जाने) ने धर्मप्रचार एवं भगवद् मंदिर निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया, जिसमें ग्राम दास्ताखेड़ी में शिवालय (श्री पातालेश्वर महादेव मंदिर) की पांच मंजिलों का निर्माण कार्य कर मूर्ति स्थापना कराई गई, साथ ही प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि के समय श्रीमद् भागवत ज्ञान यज्ञ प्रारम्भ कर जनसमुदाय के मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया। श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा के माध्यम से अनेक लोगों को शराब, बीड़ी, सिगरेट छुड़वाकर श्रेष्ठ जीवन शैली का श्रीगणेश किया। श्री कांता प्रसाद जी नागर एक प्रेरणादायी व्यक्ति थे, शांत चित्त एवं आंतरिक गुणों से ओतप्रोत निर्विवाद निर्विकार जीवन के पश्चात उनका देवलोकगमन भी ईश्वर नाम के साथ हुआ। भगवान उनकी आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें तथा उनके परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। यही विनय।

- दीपक शर्मा

सात मार्च को साथ-साथ मनाया होली मिलन

कोलकाता (पं. बंगाल) में सखियों ने 7 मार्च को होली मिलन समारोह बड़े ही धूमधाम से मनाया। रंगों और उल्लासों का त्यौहार और फिर सखी सहेलियों के साथ माहौल के आनंद को दोगुना कर देती है। रंगों से सजे इस मिलन समारोह में हमारी सखियां गुलाबी रंग के परिधानों में आई। आते ही सब एक दूसरे को होली की शुभकामनाएं देने लगी। कार्यक्रम की शुरुआत कविताओं और चुटकुलों से हुई। हिन्दी, राजस्थानी और निमाड़ी गीतों ने समा बांध दिया। बाद में चार ग्रुप बनाए गए। हर ग्रुप ने दूसरे समूह को उपाधियों से नवाजा। सभी के टायटल्स अच्छे थे- होली के गीतों को गाकर नृत्य का मजा भी लिया। सभी ने एक-दूसरे को हरे-पीले, लाल, गुलाबी, गुलाल लगाकर खुशी व्यक्त की। एक खास बात और सबको रंगीन टोपियां भी पहनाई गई। इसी के साथ-साथ योगासन के कुछ आसन हमारी सखी श्रीमती मंजुला याज्ञनिक ने सिखाये। अंत में बढ़िया सी दही-चाट और ठंडाई का आनंद लिया। 5 अप्रैल को कलकत्ता नागर परिषद का हाटकेश्वर उत्सव लक्ष्मीनारायण मंदिर में मनाया गया। वृहत पूजा आरती और भोजन के साथ-साथ छोटे बच्चों के लिए ड्राइंग प्रतियोगिता रखी गई है।

प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को उनके अच्छे परिणाम के लिए पुरस्कृत किया गया।

अणिमा दीप याज्ञनिक
कोलकाता, 9831724829

एक सुझाव-दक्षिण क्षेत्र से

नागर समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री पुरुषोत्तमजी जोशी के हम ह्रदय से आभारी हैं, जो इन्दौर शहर के दक्षिण क्षेत्र में लगभग 75 नागर परिवारों के यहां स्वयं जाकर मासिक जय हाटकेश वाणी का वितरण करते हैं, स्वाभाविक है कि वे इन सभी परिवारों से आत्मिय रूप से जुड़े हैं, तथा उनकी पीड़ा से भी। इस क्षेत्र के नागरजनों की आम शिकायत है कि इंदौर नागर परिषद के सभी आयोजन मध्य व पूर्वी क्षेत्र में होते हैं तथा इनमें वे भागीदारी नहीं कर पा रहे हैं। नागर महिला मंडल की मासिक बैठक भी विजयनगर क्षेत्र में होती है, अतः उन्हें ये स्थान अपने निवास से बहुत दूर पड़ते हैं। इस क्षेत्र के समाजजनों का सुझाव है कि सामाजिक आयोजन शहर के विस्तार के साथ अलग-अलग स्थानों पर हो, ताकि क्षेत्रीय समाजजन भी उसमें हिस्सा ले सके। दक्षिण क्षेत्र में भी अनेक आयोजन स्थल रियायती दरों पर उपलब्ध हैं। इस सम्बन्ध में कोलकाता के महिला संगठन 'सखी' से प्रेरणा ली जा सकती है, इस संगठन के कोई पदाधिकारी नहीं है, सभी सदस्य हैं तथा कोई भी सखी अपनी सुविधानुसार आयोजन करती हैं तथा उसके बुलावे पर सभी सखियां वहां उपस्थित होती हैं। यह महानगरों की मांग है। मुंबई में तो किसी भी सामाजिक आयोजन में पहुंचने हेतु बसों एवं अन्य किराए के वाहनों की व्यवस्था की जाती है। शहरों के विस्तार एवं दूर-दूर बसे नागरजनों की पहुंच सुनिश्चित करना आयोजकों का पहला लक्ष्य होना चाहिए तथा बैठक आयोजित कर इस संबंध में विकल्प तलाशना चाहिए। आयोजक अपनी सुविधानुसार कार्यक्रम स्थल का चयन करने के बजाय बाहुल्य बसाहट वाले क्षेत्रों को और उस क्षेत्र में रहने वाले समाजजनों की राय को महत्व दें। *- सम्पादक*

पाठकों की प्रतिक्रिया

दहेज मांगने वाले कृपया..!

जिन समाजजनों को अपने बेटे की शादी में दहेज की अपेक्षा है, वह कृपया अपना वैवाहिक प्रस्ताव मासिक जय हाटकेशवाणी में प्रकाशन हेतु न भेजें। यह निवेदन **उषा ठाकोर मुंबई** ने भेजा है उनका कहना है कि जय हाटकेश वाणी की बढ़ती लोकप्रियता और गुणवत्ता के लिए आप सबको बधाई। नागर समाज में ये पत्रिका अनोखा योगदान प्रदान कर रही है। मेलापक अंक से बहुत सारे लोगों को लाभ पहुंचा है। विशेष तौर पर यह सुविधा निःशुल्क रखने से समाज की सेवा भी हो रही है। परन्तु खास बात पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगी कि 2013 के मेलापक अंक में से एक अच्छे लड़के के साथ हमारे परिवार की लड़की का रिश्ता तय हुआ, परन्तु लड़के वालों की दहेज की मांग की वजह से यह रिश्ता तोड़ना पड़ा, इससे लड़की को गहरा सदमा लगा। बाद में हाटकेश्वर भगवान की कृपा से उसका रिश्ता एक सम्पन्न एवं सुसंस्कारी परिवार में हो गया। लड़का भी बहुत अच्छा था, शादी के बाद लड़की अपने वैवाहिक जीवन से संतुष्ट और प्रसन्न है। आपसे निवेदन है कि जय हाटकेश वाणी में इस घटना का जिक्र करते हुए उन समाजबंधुओं को आगाह कर दें कि यदि वे दहेज की अपेक्षा रखते हैं, तो कृपया अपनी वैवाहिक सूचनाएं जय हाटकेशवाणी में प्रकाशन हेतु ना भेजें।

कॅरियर गाईडेंस को भी जगह दें

मैं समाज के युवाओं के लाभार्थ आपको सुझाव देना चाहता हूं कि समाज की पत्रिका मासिक जय हाटकेश वाणी में एक या दो पृष्ठों को रोजगार सम्बन्धी सूचनाओं का प्रकाशन भी करें, जिससे समाज के युवाओं को नौकरी पाने एवं बेरोजगारी से निजात मिल सके। उनका भविष्य संवारने का स्वप्न साकार हो सके।

- जे.पी. नागर
बनेठा टोंक (राज.)

होली के रंगों में डूब गया बांसवाड़ा

सुर-असुर संग्राम सनातन सत्य है, विजयादशमी पर रावण के अहंकार का दहन होता है तो होली पर हिरण्यकश्यप की कूटनीतिक चालों का एक मोहरा होलिका दहन है। आग में बैठकर भक्त प्रहलाद को भस्म करने की साजिश में होलिका जल जाती है, परन्तु प्रहलाद भगवद् स्मरण करते हुए बाहर निकल आते हैं। नागरवाड़े (बांसवाड़ा) के सभी चौराहों पर होलिका दहन का कार्यक्रम आयोजित होता है, परन्तु दीनबंधु चौराहा बड़ा होने के नाते अपनी अलग ही छाप छोड़ता है। होलिका को सजाने के पश्चात महिलाएं उसकी पूजा करने आती है, और रात्रि को सभी पुरुष स्वच्छ पिताम्बर धारण कर चौक में एकत्रित होते हैं। पंडित (गोरजी) मंत्रोच्चार के साथ पूजन सम्पन्न करवाते हैं और होलिका दहन की अनुमति देते हैं फिर सारा समाज हर चौक की परिक्रमा पर निकलता है और कुंकू गुलाल उड़ाकर हर्षोल्लास का वातावरण निर्मित करता है। दीन बंधु चौराहे पर ही राधाकृष्ण का मंदिर है, जहां युवकों की टोली होलिका दहन के बाद से ही रंगों की खुमारी में डूब जाती है और दूसरे दिन भी वही आनन्द हिलोरे मारता है। बांसवाड़ा शहर होली पर्व पर बृजनगरी का ही आवरण ओढ लेता है, गली-गली में मंदिर और उसमें उत्सव का वातावरण। संत दुर्लभरामजी के मंदिर में उन्हीं के रचित होली गीतों से समा बंध जाता है, तो केशवाश्रम धर्मशाला में देवदेवेश्वर गोवर्द्धननाथ मंदिर और श्रीजी मंदिर में होली महोत्सव की रंगत कभी फीकी नहीं पड़ती। सभी मंदिर पन्द्रह दिन पहले से ही फागोत्सव के रंगों से सराबोर हो जाते हैं। श्रीजी का मंदिर प्रांगण बड़ा होने से सभी वहां एकत्रित होते हैं, प्राकृतिक फूलों से रंग बनाकर चांदी की पिचकारी से रसिक भक्तों पर रंगों की बौछार की जाती है। कुछ लोग शरारत पसंद होते हैं वे बाहर चबुतरों पर बैठकर भजनों का आनन्द लेते हैं, उनके चेहरे इतने रंगों से रंगे रहते हैं कि कोई एक नजर में इन्हें पहचान न सके। सुबह 8 बजे से 1 बजे तक सभी खाना-पीना भूलकर इसमें खो जाते हैं। समापन पर प्रसादी के साथ ठंडाई का मधुर आयोजन रात तक खुमारी उतरने नहीं देता। होली आई रे कन्हाई... सुना दे जरा बांसुरी, जैसे भजनों पर श्री महेश्वर झा, श्री मुकुंद नागर, श्री कमल याज्ञिक, श्री परमेश्वर झा, श्री शरद नागर, हरबंसलाल नागर, श्री प्रजेन्द्र पंड्या के स्वर फूट रहे थे तो कन्हैया भाई और जलज पंचोली ढोलक पर, गजेन्द्र पंड्या का हारमोनियम पर अनूठा संगम था। दोपहर चार बजे ढोले तासों के संगीतमय वातावरण में जाति के पंचों के साथ घर-घर बधाई देने का सिलसिला आरम्भ किया। घर में गुलाल तो घर के बाहर रंगों वाला पानी सब लोगों पर फेंका जा रहा था। महिलाएं सफेद साड़ी और ड्रेस में थी, युवकों का विचित्र पहनावा। आखिरी आरती हाटकेश्वर और गोवर्द्धननाथ मंदिरों में सम्पन्न हुई और वहां से बिखरकर सभी अपनी-अपनी मित्र मंडलियों में खो गए। फागोत्सव का कार्यक्रम बाद में दस दिनों तक चलता रहा, जहां आनन्द की कोई सीमा न रही।

- मंजू प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा (राज.)

अच्छे अंक लेना..

अध्यापक - शाबाश दीपक , मुझे खुशी है कि तुमने इतने अच्छे अंक लिए। आगे भी ऐसे ही अच्छे अंक लेना।

दीपक - अच्छा सर , पर आप भी परचे भाई साहब के प्रेस में छपवाते रहिएगा।

श्री हाटकेश्वर धाम में दानवर्षा जारी

उज्जैन में हरसिद्धि की पाल पर श्री हाटकेश्वर धाम के नवनिर्माण हेतु समाजजनों से दान की वर्षा सतत जारी है, जिन समाजजनों ने दानराशि की घोषणा कर रखी है, कृपया वे भी अपनी राशि शीघ्र जमा करवाने की कृपा करें।

श्री सतीश नागर परिवार रतलाम

श्री एवं श्रीमती विभाष मेहता रतलाम

श्रीमती एवं श्री सुशील नागर, रतलाम

श्री हाटकेश्वर धाम में दानराशि भेंट

1- श्री सुशील नागर, रतलाम-1100/-
2- श्री सतीश कुमार नागर, रतलाम-5001/-
3- श्री भगवतीलाल भट्ट, रतलाम - 1100/-
4- श्री विभाष मेहता अध्यक्ष, रतलाम - 1000/-
5- श्री ओमप्रकाश जी त्रिवेदी - 14000/- (कुल 25000-11000 पूर्व में जमा)
6- पं. कैलाश जी नागर, पिपलौदी-2100 /-
7- पं. अशोक जी नागर पिपलौदी-2100/-
8- श्री गजेन्द्र जोशी पिपलौदी खेड़ा - 2101/-
9- श्री सुरेश जोशी पिपलौदी - 2111 /-
10- श्री जानकीलाल नागर पिपलौदी-521/-
11- पं. विष्णुप्रसाद नागर पिपलौदी खेड़ा- 505/-
12- पं. गौरव-अनिल नागर पिपलौदीखेड़ा-201/-
13- श्री पारस नागर पिपलौदी खेड़ा-101/-
गणेशाचार्य जी पं. कैलाश नागर (आज तक फेम) 11000/-
अपने पिताजी स्व. बद्रीनारायण जी नागर एवं माताजी स्व. श्रीमती चंद्रकांता देवी नागर की पुण्य स्मृति में कमरा निर्माण 1,25,000 की घोषणा के अंतर्गत प्रारम्भिक राशि
श्री रामकिशन पटेल रूपाखेड़ी-2001 (घोषणा-5001 में से)
श्री हेमंत शर्मा राऊ, 4000 जमा (1000 पूर्व में जमा किए)
श्री मोहन नागर एवं डॉ. राजेन्द्र नागर (सुपुत्र - डॉ. बाबूलाल नागर)- 11111/-
भतीजे- श्री चंद्रशेखर नागर मुंबई द्वारा अपने परिजन श्री जानकी लाल जी नागर, दादाबा श्री बद्रीनारायणजी नागर बेगमपुरा उज्जैन की स्मृति में भेंट।

पिपलोदी

पिपलोदी

खेड़ा

खेड़ा

पिपलोदी

गाजे बाजे के साथ निकली भगवान हाटकेश्वर की भव्य शोभायात्रा

संस्कार ग्रुप परिवार ने किया भव्य स्वागत

शाजापुर में जय हाटकेश,जय हाटकेश के जय जय कारो से गूंजा पूरा नगर इस भव्य शोभायात्रा में पुरूष वर्ग ने कुर्ता पायजामा एवं महिलाओ ने केशरीया साडी एवं जय हाटकेश के टुपट्टे पहनकर शामिल हुए नगर में कई जगह शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया गया ।

नागर ब्राह्मण समाज हरायपुरा स्थित धर्मशाला परिसर में सुबह 8 बजे भगवान हाटकेश्वर का अभिषेक एवं पूजा अर्चना की गई दोपहर में समाज के परिवार प्रमुखों की विशेष बैठक आयोजित की गई जिसमे समाजजनो ने अपने अपने विचार प्रकट किये आगामी कार्यकम की रूपरेखा तैयार की गई जिसमे नागर ब्राह्मण समाज हरायपुरा स्थित धर्मशाला परिसर मे नवीन हाल का निर्माण किया जावेगा। तथा समाज हित मे निर्णय भी लिए गये।

शाम 5 बजे नागर ब्राह्मण समाज हरायपुरा स्थित धर्मशाला से गाजे बाजे के साथ भगवान हाटकेश्वर को पालकी मे विराजित कर भव्य शोभायात्रा प्रांरभ हुई जो नगर के नागनागिनी रोड, सोमवारिया बाजार, छोटा चौक, आजाद चौक, नई सडक, स्टेशन चौराहा से होकर शोभायात्रा पुनः धर्मशाला पहुची शोभायात्रा के बाद नागर ब्राह्मण समाज हरायपुरा स्थित धर्मशाला परिसर में समाजजनो ने भगवान हाटकेश्वर की महाआरती कर महाप्रसादी के रूप में सुस्वादु भोजन लिया। स्थानीय नई सडक पर संस्कार ग्रुप परिवार के श्री आशीष नागर (पप्पु) ,श्री लोकेन्द्र नागर (शासकीय शिक्षक) , श्री संजय नागर (महिला बाल विकास), श्री हितेश व्यास, श्री राजेश नागर (दैनिक अवन्तिका), श्री रितेश व्यास, श्री राहुल व्यास, श्री शुभम व्यास, श्रीमति बबीता नागर ,श्रीमति शीला नागर ,श्रीमति विद्या नागर, श्रीमति शानु नागर, श्रीमति तनुजा व्यास आदि ने शोभायात्रा का पुष्प वर्षा एंव रसपान के साथ शोभा यात्रा का भव्य स्वागत किया।

मंदसौर में भव्य आयोजन सम्पन्न

श्रीमद भागवत कथा एवं सम्मान समारोह

भगवान पशुपतिनाथजी महादेव के नगर मंदसौर में गीता भवन रोड पर नवनिर्मित श्री हाटकेश्वर मंदिर एवं धर्मशाला भवन में सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा, मंदिर पर कलश स्थापना एवं समापन दिवस हाटकेश्वर जयंती पर प्रतिभाशाली विद्यार्थियों एवं वरिष्ठजनों का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में 28 मार्च 2015 को कलश एवं पोथी यात्रा का आयोजन पांच दिवसीय हरिहरात्मक महारुद्र यज्ञ यज्ञाचार्य पं. श्री ललित किशोर जी नागर द्वारा एवं पं. श्री सुनील जी नागर के मुखारविंद से श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन 28 मार्च 2015 से 3 अप्रैल 2015 तक किया गया। 3 अप्रैल हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर मंदिर परिसर पर कलश स्थापना की गई तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों एवं वरिष्ठजनों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर म.प्र. नागर परिषद शाखा मंदसौर के अध्यक्ष श्री जयेश नागर का भी सम्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि 1200 स्क्वेअर फीट के भूखंड पर तीन मंजिल का धर्मशाला भवन एवं मंदिर निर्माण में 70 लाख रु. की लागत आई है। इसमें समाज की ओर से 50 लाख रु. प्राप्त हुए तथा 20 लाख रु. अध्यक्ष श्री जयेश नागर ने लगाए हैं। इस धर्मशाला भवन के निर्माण कार्य को उन्होंने जुनून की तरह किया तथा तन-मन-धन से वे समर्पित हो गए। अपने अभिनंदन पर उन्होंने कहा कि भवन में पर्याप्त प्रबंध ही उनकी प्राथमिकता रहेगी। समाज के उत्थान के लिए उनका योगदान सदैव याद किया जाता रहेगा।

प्रतिभाओं का सम्मान

हाटकेश्वर धाम महावीर कालोनी में चल रही भागवत कथा के दूसरे दिन म.प्र. नागर परिषद के प्रान्ताध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी (टमटा), श्री लव मेहता महामंत्री, श्री हेमंत त्रिवेदी उपाध्यक्ष एवं श्री योगेन्द्र त्रिवेदी कोषाध्यक्ष उज्जैन से आये एवं कथा में सम्मिलित होकर भागवत पौथी की आरती की गई। इस अवसर पर समाज द्वारा हाटकेश्वर धाम की भव्यता से किए निर्माण कार्य एवं हाटकेश्वर जयंती के साथ दिवसीय कार्यक्रम रखे जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की गई एवं सहयोग का पूर्ण आश्वासन दिया गया। दिनांक 30 मार्च को प्रातः आठ बजे से कलश स्थापना का अनुष्ठान शुरू हुए जो पंडित श्री ललित प्रसाद जी नागर के आचार्यत्व में 10 पंडितों द्वारा दिनांक 3 अप्रैल तक निरन्तर चले। कार्यक्रम में म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद एवं न्यास के अध्यक्ष जयेश नागर, उपाध्यक्ष श्री बालमुकुन्द नागर, सचिव सतीश नागर, कोषाध्यक्ष आशीष व्यास, युवा शाखा अध्यक्ष डॉ. संजय नागर, सचिव मोहन नागर, प्रवीण मेहता, महिला शाखा अध्यक्ष श्रीमती मधु मेहता, उपाध्यक्ष श्रीमती अलका नागर, सचिव श्रीमती संगीता नागर ने आभार व्यक्त किया।

भागवत भगवान की आरती

नवनिर्वाचित सरपंच का सम्मान

सम्मान

भक्ति से ही दूर होगी अशाति...

भागवत कथा का हुआ समापन

शाजापुर के समीपस्थ ग्राम कमरदीपुर में पं. दुर्गेश नागर के मुखारविंद से जारी श्रीमद् भागवत कथा का समापन शुक्रवार को हुआ। कथा समापन पर पर अपने प्रवचनों में पं. नागर ने कहा कि वर्तमान अशांति का कारण लोगों का भक्तिभाव कम हो जाना है। यदि व्यक्ति नित्य प्रति अपने दैनिक समय में से थोड़ा भी समय प्रभु भक्ति में लगाए तो तमाम अशांति दूर हो सकती है। कथा समापन के अवसर पर ग्राम में शोभायात्रा भी निकाली गई तथा भंडारा आयोजित हुआ। जिसमें समीपस्थ ग्रामों से आए श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

ईश्वर से प्रेम करना ही सच्ची भक्ति है- पं. मेहता

श्री बांके बिहारी सेवा संस्थान शाजापुर द्वारा आयोजित चतुर्थ श्री गिरिराज, मथुरा एवं वृंदावन यात्रा के दौरान कार्षिणी आश्रम रमणरेवती (मथुरा)में भागवत पंचामृत कथा प्रसंग के अवसर पर पं. लालशंकर मेहता (शाजापुर) के द्वारा कथा व्यास से कहा गया कि -''सुदामा जी द्वारिका श्री कृष्ण से मिलने गये लेकिन श्री कृष्ण से कुछ मांगा नही भगवान ने बिना मांगे ही सुदामा जी को अपने जैसा वैभवशाली बना दिया, इसी प्रकार मांगने से केवल उतना ही मिलता है जितना मांगा जा रहा है,लेकिन बिना मांगे परमात्मा इतना दे देते है कि हमसे संभाला नही जायेगा, अगर भगवान से कुछ मांगना है तो भक्ति ही मांगना चाहिये। सेवा संसार की करो और प्रेम प्रभु से करो यही सत्य है। इसी प्रकार एक अन्य प्रसंग में पं. लालशंकर मेहता द्वारा कथा प्रसंग में बताया गया कि-सतयुग,त्रेतायुग तथा द्वापर में ज्ञान वैराग्य तथा तपस्या ही मुक्ति के साधन थे, किन्तु कलियुग में केवल परमात्मा का नाम सुमिरन ही परमात्मा की प्राप्ति का साधन है, शास्त्रों में कहा भी गया है ''कलयुग केवल नाम आधारा'' यहां ज्ञान दीपक के समान है और भक्ति मणी के समान है। संकीर्तन में पं. मेहता द्वारा निकुंज में बिराजे घनश्याम राधे राधे .....भजनों पर श्रोता भाव

विभोर व भावुक होकर नाचने लगे। तथा कथा विराम के बाद श्री बांके बिहारी सेवा संस्थान म.प्र. की अध्यक्ष, यात्रा संयोजक श्री नीरज व्यास, यात्रा प्रभारी श्री संजय नागर तथा म.प्र. नागर ब्राहमण परिषद के कोषाध्यक्ष श्री योगेन्द्र त्रिवेदी ने पं. लालशंकर मेहता का शाल श्रीफल एंव पुष्पाहार से स्वागत किया। साथ ही हारमोनियम पर संगत दे रहे श्री मोतीराम का संस्था द्वारा स्वागत किया गया।

उल्लेखनीय है कि दिनांक १२ से १६ फरवरी २०१५ तक चतुर्थ निशुल्क पांच दिवसीय श्री गिरिराज, मथुरा, वृंदावन तीर्थयात्रा का आयोजन श्री बांके बिहारी सेवा संस्थान द्वारा किया था जिसमें यात्रा श्री गिरिराज परिक्रमा से प्रारंभ हुई जिसमें भक्तों द्वारा छप्पन भोग लगाया गया, मथुरा में श्री द्वारिकाधीश के दर्शन, यमुना में नौकाविहार श्रीकृष्ण जन्मभूमि दर्शन, वृंदावन में श्री बांके बिहारी जी के दर्शन उनको माखनमिश्री का भोग, कालियादेह, चीरघाट,निधिवन, प्रेम मंदिर, गोकुल रमणरेवती आदि स्थानों का दर्शन कर लगभग २०० भक्तों द्वारा दर्शन कर पुण्य लाभ लिया गया। यात्रा में मुख्य रूप से प्रीतम नागर (इन्दौर) संतोष नागर (देंदला), मनोज नागर, श्रीमती लक्ष्मी नागर, श्रीमती सूर्यकांता शर्मा, श्रीमती कृष्णा त्रिवेदी, श्रीमती विद्या नागर, राधा मेहता सहित कई नागर भक्तों ने भाग लिया।

श्री प्रमोद मेहता केपिटल ब्रांच के अध्यक्ष चुने गए

हाटकेश्वर जयंती पर धार्मिक आयोजन

म.प्र. नगर परिषद शाखा केपिटल ब्रांच भोपाल के तत्वावधान में अरेरा कॉलोनी स्थित हाटकेश्वर मंदिर में 3 अप्रैल को भगवान हाटकेश्वर का श्रंगार, पूजन अभिषेक एवं प्रसाद वितरण का कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर साधारण सभा में अध्यक्ष का निर्वाचन सम्पन्न हुआ, नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री प्रमोद मेहता को उपस्थित समाजजनों ने बधाई दी है। वे आगामी एक माह में अपनी कार्यकारिणी का गठन करेंगे।

पार्षद पद पर श्रीमती प्रियम्वदा नागर विजयी

नगर परिषद भौंरासा (जिला देवास) में नागर समाज की कांग्रेस प्रत्याशी श्रीमती प्रियम्वदा अशोक नागर को वार्ड नं. 3 से विजयी घोषित किया गया। उनकी जीत पर सर्वश्री राधेश्याम जी नानागुरू, लक्ष्मीनारायणजी नागर, मोहनलाल जी लुहारी, दीपक शर्मा देवास, विजय शर्मा, भरतजी रावल खजराना, राम-श्याम नागर, विशाल शर्मा, डॉ. अरविन्द पुराणिक ने बधाई प्रेषित की है।

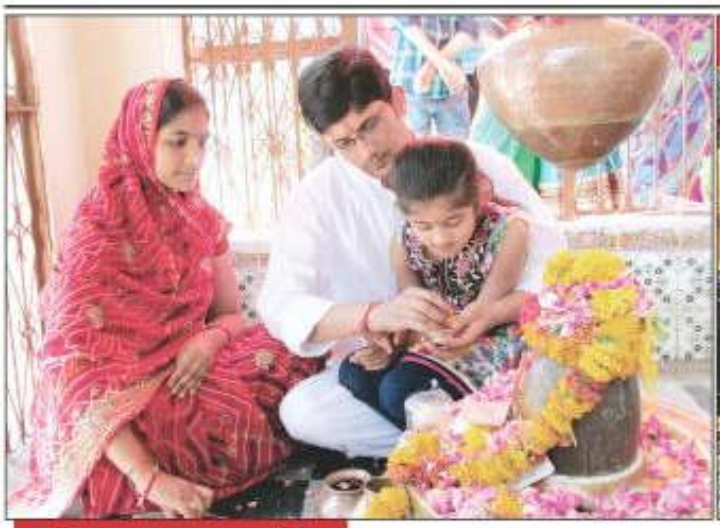

बेरछा में हाटकेश्वर जयंती का आयोजन

नागर ब्राह्मण समाज के आराध्य एवं ईष्ट देव श्री हाटकेश्वर भगवान की जयंती समाजजनों ने मनाई। मुख्य मार्ग स्थित श्री हाटकेश्वर देवालय में विराजित भगवान का पं.महेश व्यास द्वारा पूजन एवं अभिषेक करवाया गया। प्रातः काल से ही भगवान का आकर्षक श्रंगार कर अभिषेक किया गया जिसके बाद महाआरती में क्षेत्र के सभी समाजजनों द्वारा हिस्सा लिया गया तथा बाद में महाप्रसादी का वितरण किया गया। अंत में समाज की वार्षिक बैठक व स्वल्पाहार का आयोजन किया गया जिसमें नागर ब्राह्मण समाज के वरिष्ठ तथा सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक शिवनारायण शर्मा चौंसला वाले का सम्मान नागर समाज बेरछा के संरक्षक व वरिष्ठ चिकित्सक डॉ.मनोहरलाल शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ.ओमप्रकाश नागर, डॉ.मनोज शर्मा, पूर्व जंप उपा.शलभ शर्मा, महेश नागर, बाबुलाल नागर, राजकुमार शर्मा, अनिल नागर, चक्रदत मेहता, दिलीप नागर, मनीष शर्मा, सी.पी.नागर, तरंग शर्मा, शोभित नागर, सतीष नागर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम में क्षेत्र के अलावा तिलावद, बिकलाखेड़ी, किसोनी, लसुर्डिया ब्राम्हण सहित अन्य स्थानों से भी बड़ी संख्या में महिलाएं व बच्चे भी शामिल हुए।

मां अन्नपूर्णा की पावन नगरी में जुटे प्रदेशभर के नागरजन

शाजापुर। मां अन्नपूर्णा की पावन नगरी ग्राम लसुर्डिया ब्राह्मण में नागर ब्राह्मण समाज का ऐतिहासिक कार्यक्रम दिनांक 1 मार्च 2015 को सम्पन्न हुआ। म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद की त्रैमासिक बैठक एवं क्षेत्रीय सम्मेलन स्वल्पाहार पश्चात प्रारम्भ हुआ। बैठक एवं सम्मेलन की अध्यक्षता म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी (टमटा) ने की एवं मुख्य अतिथि के रूप में म.प्र. नागर परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास तथा विशेष अतिथि के रूप में श्री हेमन्त त्रिवेदी, सुश्री शीलाबेन व्यास, श्री बी.एल. मेहता, केदार रावल, श्री लव मेहता, श्री दिलीप मेहता, निलेश नागर, श्री अरूण मोहिनीकांत व्यास, श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, श्री मधुसुदन जी नागर, श्री हेमन्त व्यास, श्री कुश मेहता, डॉ. गोपालकृष्ण व्यास, श्रीमती सोनिया मण्डलोई, डॉ.विजयकृष्ण व्यास एवं हाटकेशवाणी परिवार के श्री दीपक शर्मा की उपस्थिति में सम्पन्न हुई।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि के साथ मंचासीन सदस्यों ने श्री हाटकेश्वर भगवान एवं मां अन्नपूर्णा की पूजा अर्चना कर दीप प्रज्ज्वलित कर बैठक का शुभारम्भ किया, जिसमें श्री हेमन्त व्यास द्वारा श्री गणेश वन्दना एवं कु.दीक्षा व्यास ने मां सरस्वती की वन्दना की गई।

जिसके पश्चात कार्यक्रम में पधारे समस्त अतिथियों का स्वागत शाखा ग्राम लसुर्डिया ब्राह्मण के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र जी व्यास द्वारा श्री गणेश वन्दना एवं कु.दीक्षा व्यास ने मां सरस्वती की वंदना की।

जिसके पश्चात कार्यक्रम में पधारे समस्त अतिथियों का स्वागत शाखा ग्राम लसुर्डिया ब्राह्मण के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्रजी व्यास एवं अन्य पदाधिकारियों सहित क्षेत्रीय समाजजन श्री सुखानंद जी व्यास, श्री शिवनारायण जी शुक्ल, श्री प्रवीण जी व्यास, डॉ.प्रमोद व्यास, श्री बालकृष्ण व्यास, श्री अशोक व्यास, श्री दिपेश व्यास, श्री कृष्णकांत व्यास, श्री नरेन्द्र नागर गुना, श्री रमेश शुक्ला, श्री कमल व्यास, श्री राकेश व्यास, पं. सुरेश नागर, श्री आनंद व्यास, श्री भूपेन्द्र नागर, श्री चन्द्रकांत जी व्यास, डॉ. चन्द्रकांत जी त्रिवेदी, डॉ. अशोक व्यास, डॉ.

नोट :- समस्त स्वजन से निवेदन है कि जिन दानदाताओं का नाम दानदाता सूची में छूट गया है, जिनको कि दान राशि की रसीद प्राप्त नहीं हुई है। ऐसे बंधुओं से विनम्र निवेदन है कि श्री प्रवीण व्यास, श्री रमेश व्यास 8989074999 लसुर्डिया ब्राह्मण मो. नं. 7049929823 से सम्पर्क कर अपनी रसीद प्राप्त कर सकते हैं।

धार्मिक एवं परमार्थिक ट्रस्ट मां अन्नपूर्णा मंदिर
लसुर्डिया ब्राह्मण तहसील टोंकखुर्द जिला देवास
आय व्यय पत्र दिनांक 09.12.2013 से 26.12.2014

दिनांक	आय	व्यय	राशि
09/12/13 से दिनांक 20/12/2014 तक कुल आय व्यय पत्रक	2,15,455 रुपए	कोटा स्टोन सीमेंट कोटा स्टोन भाड़ा स्टोन फीटिंग एवं फिनीशिंग टाइल्स सरिया लेबर (मजदूरी) गिट्टी वाईडिंग वायर आदि बालू रेती	69611 रुपए 13125 रुपए 3000 रुपए 43100 रुपए 6960 रुपए 2000 रुपए 10740 रुपए 1400 रुपए 255 रुपए 5100 रुपए
कुल योग	**2,15,455 रुपए**		**155296 रुपए**

सेवा के साथ सद्भावना जरूरी

लसुर्डिया ब्राह्मण में आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ पं. विजय शंकर जी मेहता ने समाजसेवा के बारे में महत्वपूर्ण बात कही। उन्होंने कहा कि जब तक सेवा के भाव अंर्तमन से उत्पन्न नहीं होंगे, ऊपर स्तर पर दिखावे की सेवा का लाभ किसी को भी नहीं मिल पाएगा। उन्होंने अपनी बात को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से दो मनोरंजक किस्से भी सुनाए। भूत-पिशाच की तुलना उन्होंने क्रोध और अहंकार से की। सेवा करने वाले को क्रोध और अहंकार कभी नहीं आना चाहिए।

मोहन नागर, श्री महेश नागर, श्री अशोक जी नागर एवं मातृशक्ति श्रीमती माधुरी व्यास, श्रीमती विनीता व्यास, श्रीमती आशा व्यास, श्रीमती तनुजा व्यास एवं युवा तरुणाई हितेष व्यास, रितेश व्यास, दीपक व्यास, राहुल व्यास, शलभ शर्मा, मनीष शर्मा, विजय व्यास, संतोष नागर, लोकेन्द्र नागर, संजय नागर शाजापुर, अरविन्द नागर, धर्मेन्द्र मेहता, संतोष नागर द्वारा पुष्पहार से आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया एवं श्री हेमन्त त्रिवेदी, श्री राजेश त्रिवेदी (टमटा) एवं श्री वीरेन्द्र व्यास का उत्कृष्ट समाजसेवा के लिए शाल श्रीफल से सम्मान किया गया एवं श्री के.के. व्यास द्वारा स्वागत भाषण एवं धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट अन्नपूर्णा मंदिर निर्माण सम्बन्धित जानकारी दी, जिसका संचालन श्री गोपालकृष्ण व्यास द्वारा किया गया।

1	श्री विजयकृष्ण व्यास मक्सी	1100/-
2	श्री योगेन्द्र जी त्रिवेदी उज्जैन	1100/-
3	श्री राजेश त्रिवेदी (टमटा) उज्जैन	2100/-
4	श्रीमती सरला मेहता इन्दौर	1001/-
5	श्री जयेश जी झा इन्दौर	1101/-
6	स्व. श्री शंकरयोगी राज बालोन की स्मृति में	1100/-
7	श्री मधुसूदन जी नागर उज्जैन	501/-
8	श्री प्रमोद जी त्रिवेदी उज्जैन	1100/-
9	श्री मनोहरलाल जी शुक्ल उज्जैन	1100/-
10	श्री नरेन्द्र जी नागर गुना	2100/-
11	श्रीमती मधु जी.डी. नागर उज्जैन	1100/-
12	श्री विष्णुदत्त जी नागर उज्जैन	500/-
13	श्री हर्ष मेहता इन्दौर	500/-
14	श्री बालकृष्ण जी नागर देंदला	1100/-
15	श्री राधारमण जी नागर देंदला	1100/-
16	श्री ओमप्रकाश जी नागर ईकलेरा	3001/-
17	श्री लवकुश मेहता उज्जैन	1100/-
18	श्री रमाशंकर पन्नालाल जी मेहता कायथा	6001/-
19	श्री रमेश परोत उज्जैन	500/-
20	श्री सुभाष नागर खोरीया कुमारिया	500/-
21	श्री छगनलाल जी नागर अभयपुर	1100/-
22	श्री रमाकांत जी मेहता अभयपुर	1000/-
23	श्री रंजन जोशी उज्जैन	500/-
24	श्री अशोक व्यास पीपलरावां	1100/-
25	श्री मणीशंकर जी नागर मक्सी	1100/-
26	श्री सुरेशचन्द्र जी नागर उज्जैन	1100/-
27	श्री महेन्द्र नागर शाजापुर	1100/-
28	श्री मथुराप्रसाद जी शर्मा शाजापुर	1001/-
29	श्री अनिल जी नागर शाजापुर	1000/-
30	श्री भेरूसिंह जी नागर पंचोला	1000/-
31	श्री मोहनलाल जी नागर गंधर्वपुरी	1151/-
32	श्री विजय पोराणिक उज्जैन	500/-
33	श्रीमती वत्सला बेन उज्जैन	1100/-
34	श्री ओमप्रकाश श्री नागर दुपाड़ा	500/-
35	श्री मनुभाई मेहता मेहता	500/-
36	श्री सुभाष नागर शाजापुर	500/-
37	श्री जगदीश नागर स्व. शिवनारायण भण्डारी की स्मृति	1000/-
38	श्री देवीलाल जी नागर बेरछा	551/-
39	श्री लक्ष्मीकांत जी मेहता, इंदौर	1100/-
40	श्री कैलाश जी मेहता शाजापुर	1000/-
41	श्रीमती ममता गोपालकृष्ण जी नागर शाजापुर	1011/-
42	श्री ओमप्रकाश जी शुक्ल शाजापुर	5001/-
43	श्री भेरूलाल जी मेहता शाजापुर	5051/-
44	श्री संतोष जी शुक्ल शाजापुर	5051/-
45	स्व. श्री हरीश जी त्रिवेदी की स्मृति में	1151/-
46	श्री परमानंद जी नागर शाजापुर	1100/-
47	श्री अरूण जी नागर नागदा	500/-
48	श्री संजय नागर (शिक्षा विभाग)	1100/-
49	श्रीमती ममता सुधीर नागर शाजापुर	1011/-
50	श्री हरीशंकर जी व्यास - लसुर्डिया ब्राह्मण	5001/-
51	श्री हेमन्त त्रिवेदी उज्जैन	1100/-
52	श्री प्रेमनारायण जी नागर शाजापुर	5001/-

द्वितीय सत्र (सोपान) का संचालन महासचिव श्री लव मेहता उज्जैन द्वारा प्रारंभ कर बैठक के विषयों परिषद की सदस्य संख्या, समाज में महिलाओं की सक्रियता, समाज के निर्धन बच्चों की शिक्षा में जाग्रति, प्रथम से आठवी कक्षा तक के बच्चों को नि:शुल्क पुस्तकों का वितरण आदि विषयों पर बिन्दुवार चर्चा की गई एवं सुश्री शीलाबेन व्यास, डॉ. प्रदीप व्यास, श्रीमती सुनीता मण्डलोई ने समाजहित में अपने विचार व्यक्त किये। अन्य अतिथियों ने अपने-अपने उद्‌बोधन में समाज को एकजुट होकर समाज को गति प्रदान करने में एक-दूसरे का सहयोग देने की बात कही।

उपस्थित स्वजातीय बंधुओं ने मां अन्नपूर्णा मंदिर के जीर्णोद्धार में मुक्त हस्त से सहयोग राशि प्रदान की। इसी अवसर पर म.प्र. नागर परिषद द्वारा समाज के वयोवृद्ध श्री शिवनारायण जी शुक्ल लसुर्डिया ब्राह्मण एवं डॉ. श्री मनोहरलाल जी शर्मा बेरछा का शाल श्रीफल से सम्मान किया गया। आभार डॉ. प्रमोद व्यास द्वारा माना गया।

कार्यक्रम के अगले चरण में समस्त अतिथियों द्वारा सामूहिक भोजन का आनन्द प्राप्त किया। जिसके पश्चात अंत में परम पूज्यनीय पं. श्री विजयशंकर जी मेहता द्वारा प्रवचन के माध्यम से हनुमान चालीसा की चोपाइयों की महत्व और उन पर विस्तृत चर्चा करते हुए जीवन प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अपने स्वभाव में अहंकार को स्थान नहीं दे एवं सदा खुश रहें, प्रसन्न रहे एवं समस्त समाज जन को प्रेमपूर्वक एकजुट रहने की प्रेरणा दी।

स्थानीय शाखा के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने पूज्यनीय गुरूदेव मेहता जी को 51 किलो फूलों का हार पहनाकर एवं शाल श्रीफल स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया। जिसके पश्चात उपस्थित समाजजनों ने पूज्य पं. मेहता जी का आशीर्वाद प्राप्त कर कार्यक्रम का समापन हुआ। ग्रामीण अंचल में सम्पन्न हुए सफल सामाजिक कार्यक्रम की कार्यक्रम में पधारे समस्त अतिथियों ने हृदय से प्रशंसा की। प्राकृतिक विपदाओं के पश्चात भी कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु आशीष (पप्पू) शाजापुर एवं राजेश नागर (दैनिक अवंतिका) शाजापुर की ओर से समस्त ग्राम लसुर्डिया ब्राह्मण की टीम को बहुत-बहुत बधाई शुभकामनाएं। भगवान हाटकेश्वर एवं मां अन्नपूर्णा से आपके और आपके पूरे परिवार के सफल जीवन की कामना करते हैं।

ऋण चुकाने का सिलसिला जारी रहे...

संदर्भ- म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन पुरस्कार

कुछ दिनों पूर्व उज्जैन में एक भव्य और सुनियोजित कार्यक्रम में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अवसर था मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति द्वारा पुरस्कार वितरण का वार्षिक आयोजन। आयोजकों के परिश्रम और सहयोग की भावना का प्रत्यक्षतः अनुभव किया। जिसके कारण संस्था को इतनी लोकप्रियता मिली है। समिति के प्रोत्साहन एवं सहयोग से सफलता के शिखर पर पहुंचे व्यक्ति भी वहां उपस्थित थे।

वहीं यह विचार आया कि विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षण सहायता से लाभान्वित होने वाले आखिर इस ऋण से कैसे मुक्त होंगे? अपनी समृद्धि और संसाधनों से वे प्रतिभावान एवं जरूरतमंद लोगों को किस प्रकार मदद करते रहेंगे। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है सज्जन एवं संस्कारी व्यक्ति यह सोचता है कि मुझे आगे बढ़ने में समाज से जो सहयोग मिला है, उसे जरूरतमंद लोगों को किस प्रकार लौटाऊंगा?

वे ऐसी संस्थाओं तथा व्यक्तियों को जो उच्च शिक्षा के लिए सहायता या ऋण देते हैं, वे प्रशिक्षण एवं छात्रवृत्ति के रूप में भी मदद करते हैं, समाज को मदद करने के इच्छुक व्यक्ति सीधे अथवा ऐसी विश्वसनीय संस्था/व्यक्ति के मार्फत अपनी सामर्थ्य अनुसार एकमुश्त या किश्तों में अपना योगदान दे सकता है। यह सहायता नकद अथवा शिक्षक प्रशिक्षण सामग्री के रूप में जैसे कम्प्यूटर, महंगी पुस्तकें व दृश्य श्रव्य सामग्री, कम्प्यूटर उपकरण आदि के रूप में भी दे सकता है।

एक विकल्प यह भी है कि ऐसे व्यक्ति स्वयं, अपनी धर्मपत्नी या अन्य परिवारजनों को अपने पड़ोस के ही छोटे-बड़े बच्चों को एक-दो घंटे निःशुल्क ट्यूशन दे सकता है। इसका व्यापक एवं गुणात्मक लाभ होगा। स्त्री शिक्षा, महिला गृहोयोग में मार्गदर्शन सहायता, जरूरतमंद व्यक्तियों को चिकित्सा सहायता, शारीरिक क्षति वालों को उपकरण के रूप में भी सहायता दी जा सकती है। सार्वजनिक पुस्तकालयों, वाचनालयों को भी समृद्ध बनाने में सहायता दी जा सकती है। हमें आगे बढ़ने में जो, जिसकी सहयोग मिला है, उसे हम अन्य जरूरतमंद को देकर इस ऋण से मुक्त हो सकते हैं। जय हाटकेश वाणी के युवा पाठक उपरोक्त विचारों से प्रेरणा ले सकें और इनका प्रचार कर सके तो मैं इस लेख के उद्देश्य को फलीभूत समझूंगा।

- अनिल कुमार मेहता
भावनगर
(गुजरात)

श्रीमती सुमन नागर सरपंच चुनाव में विजयी

श्रीमती सुमन नागर निवासी आदर्श कालोनी **शाजापुर** ग्राम दोबड़ा जागीर तहसील सारंगपुर जिला राजगढ़ से सरपंच चुनाव में 100 वोट से विजय हुई। श्री सुमन नागर जो कि श्री जगदीश नागर (मार्केटिंग सोसायटी) शाजापुर की धर्मपत्नि है। जो कि मूल निवासी ग्राम मोढ़ी के है। सरपंच चुनाव में भारी मतों से विजयी होने एवं नागर समाज का नाम गौरवान्वित करने पर आशीष नागर (पप्पू) शाजापुर, नागर युवा परिषद शाजापुर के अध्यक्ष श्री संजय नागर (शिक्षा विभाग), श्री संजय नागर पार्षद प्रतिनिधि शाजापुर, श्री संजय नागर नीमवाड़ी शाजापुर, श्री लोकेन्द्र नागर शाजापुर, श्री राजेश नागर (दैनिक अवंतिका) शाजापुर, हितेष व्यास लसुर्डिया ब्राह्मण, अश्विन नागर दास्ताखेड़ एवं संस्कार ग्रुप शाजापुर के समस्त सदस्यों की ओर से एवं समस्त समाजजनों एवं इष्ट मित्रों की ओर से बहुत-बहुत बधाइयां शुभकामनाएं। भगवान हाटकेश से प्रार्थना है कि वे आपको यश, कीर्ति, स्वास्थ्य प्रदान करें एवं उन्नति के पथ पर अग्रसित करें।

प्रेषक-
आशीष नागर शाजापुर
9926023944

श्रीमती कुसुम नागर सरपंच पद पर निर्वाचित

मंदसौर जिले के उदपुरा गांव में सरपंच पद पर नागर समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री बालुजी की धर्मपत्नी श्रीमती कुसुम नागर निर्वाचित हुई। श्रीमती नागर ने पूर्व सरपंच अम्बाराम बैरागी को पराजित किया। श्रीमती नागर ने भाजपा प्रत्याशी के रूप में यह चुनाव लड़ा।

खुद्दारी से जीने के लिए संबल दिया

बचपन में हमारे पड़ोस में रहने वाले निसंतान बुजुर्ग दंपति में से पत्नि के निधन के पश्चात उनके पति श्री हीरालालजी भटोरे के लिए अपना जीवन काटना मुश्किल हो गया था। उनके सभी रिश्तेदारों जिनकी शादी, अध्ययन, व्यापार आदि के लिए हरसंभव मदद आजीवन उनके द्वारा की गई थी, जब तक आर्थिक मदद उनके द्वारा की जाती रही, उन्हें अपने साथ रखा। पश्चात कोई भी अपने साथ रखने को तैयार नहीं था। उनकी हमारे परिवार से आत्मियता होने के कारण वे हमारे घर आकर हर बात बताते थे और कहते थे कोई मंदिर की पूजा पाठ का काम मिल जाए तो शेष जीवन भगवान के श्रीचरणों में बीत जाएगा और खाने पीने की व्यवस्था भी हो जाएगी। हमने हमारे घर में रहने का प्रस्ताव दिया, लेकिन वे इसके लिए तैयार नहीं थे, तब हमारी मां ने पवन भैया (दैनिक चैतन्यलोक) को उनके बारे में बताकर कुछ व्यवस्था करने को कहा। पवन भैया ने एक होटल जहां मंदिर भी था उनके ठहरने खाने की व्यवस्था कर दी, लेकिन वे इसके लिए तैयार नहीं हुए। इसके बाद उनके लिए पवन भैया ने उनके कहे अनुसार प्रतिमाह नकद राशि रुपए 550/- देने की व्यवस्था कर दी, जो लगभग विगत कई वर्षों से जारी थी और पिछले 1-2 वर्ष से उनके ठहरने की व्यवस्था एक मंदिर सालवी बाखल नंदलालपुरा मंडी स्थित हो गई थी जहां के पुजारी श्री ओमप्रकाश जी पंचोली उनकी पत्नि, पुत्र एवं पुत्री द्वारा उन्हें अपने परिवार के बुजुर्ग सदस्य के भांति ही स्नेह दिया जाता था।

विगत दिनों उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने पर पुजारीजी उन्हें अपने निज निवास ले गए और उल्टी-दस्त होने पर पूरे परिवार ने उनकी सेवा अपने पितृ पुरुष समझकर की और अधिक स्वास्थ्य खराब होने पर 2-3 बार अलग-अलग अस्पतालों में इलाज करवाया गया, जिसका खर्च भी पुजारीजी ने स्वयं वहन किया। स्वास्थ्य संबंधी सूचना उनके रिश्तेदारों को दिए जाने पर भी कोई उन्हें न देखने आया न ही किसी तरह से आर्थिक मदद की गई।

अंत में कुछ दिनों की सेवा लेने के पश्चात दिनांक 15.03.15 को उन सज्जन का 95 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया, जिनका अंतिम संस्कार भी श्री पंचोलीजी द्वारा अपने पुत्र के द्वारा मुखाग्नि दिलवाकर विधि-विधान से करवाया गया एवं अन्य समस्त कर्म भी उनके द्वारा अपना सदस्य समझकर करवाए गए।

आज के समय में जहां रिश्तेदारों द्वारा अपने परिवार के बुजुर्गों का ध्यान नहीं रखा जाता है, वहां एक अनजान बुजुर्ग के लिए श्री पंचोलीजी एवं उनके परिवार द्वारा तथा श्री पवन भैया द्वारा जो भी सहयोग किया गया वह अत्यंत ही स्तुत्य एवं प्रेरणादायी है।

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि श्री हीरालालजी की आत्मा को मोक्ष प्रदान करे और पंचोली परिवार तथा दैनिक चैतन्यलोक परिवार पर धन, धान्य, सुख-संपदा और कृपादृष्टि का आशीर्वाद सदैव बनाए रखे। धन्य है, ऐसे परिवार जो औरों के लिए प्रेरणा बने। निश्चित ऐसे ही मनुष्यों को कारण कलियुग में मानवता शेष है।

- संदीप रावल
रामबाग, इंदौर

मौज नहीं मोक्ष के लिए मिला है मानव शरीर

सूरज नगर में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन

मनुष्य जीवन हमें मौज के लिए नहीं, मोक्ष के लिए प्राप्त हुआ है। भगवद प्राप्ति तभी संभव है जब मौज का तिरस्कार कर हम सतोगुण की वृद्धि करें, तभी मोक्ष हमारे सम्मुख खड़ा होगा जैसा कि ध्रुव, प्रहलाद के साथ हुआ। राजा परीक्षित ने भी अपने जीवन के 60 वर्ष राजपाट, घर-गृहस्थी, मौज में बिताए मगर इन सबको छोड़कर वे जब मोक्ष मार्ग के साधन में तत्पर हुए तो उन्हें मात्र सात दिन में मोक्ष सुलभ हो गया, अतः हमें भी मौज के बजाय मोक्ष के साधन जुटाना चाहिए। हमारा व्यवहार ऐसा हो कि बाल खराब न हो, खाओ ऐसा कि पेट खराब न हो, राह ऐसी हो कि जिसमें साथ खराब न हो, बोलो ऐसा कि दिमाग खराब न हो, पहनो ऐसा कि संस्कृति खराब न हो एव कर्म ऐसा करो कि जीवन खराब न हो। उपरोक्त विचार पं. श्री दिनेश नागर (डेलची वाले) ने सूरजनगर में 13 से 19 मार्च तक आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में व्यक्त किए। इस भव्य कथा का पुण्य लाभ बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने लिया।

हाटकेश्वर जयंती पर

आराधना और प्रतिभा सम्मान

इंदौर में 3 अप्रैल 2015 को हाटकेश्वर जयंती के उपलक्ष्य में भगवान हाटकेश्वर की आराधना के पश्चात शाम को साधारण सभा एवं प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ।

समाज के सूरजनगर स्थित श्री हाटकेश्वर मंदिर में श्रंगार, अभिषेक एवं प्रसाद वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शाम को साधारण सभा आयोजित की गई, जिसमें मुख्य अतिथि श्री जयदेव शर्मा अपर आयुक्त वाणिज्यिककर विभाग, कार्यक्रम अध्यक्ष योगाचार्य श्री ए.के. रावल, उपाध्यक्ष श्री हिमांशु पुराणिक, महासचिव राजेन्द्र व्यास, महिला मंडल से श्रीमती प्रमिला त्रिवेदी, सचिव सोनिया मंडलोई ने दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम की शुरुआत की। सरस्वती वंदना कु. सलोनी व्यास ने प्रस्तुत की। स्वागत श्रंखला के पश्चात नागर परिषद की वार्षिक रिपोर्ट श्री हिमांशु पुराणिक ने प्रस्तुत की, महिला मंडल की सचिव श्रीमती सोनिया मंडलोई ने तथा शिवांजलि पारमार्थिक ट्रस्ट की रिपोर्ट सचिव दीपक शर्मा ने प्रस्तुत की। इस अवसर पर वाणिज्यिककर विभाग में पदोन्नति पर अपर आयुक्त श्री जयदेव शर्मा, योगाचार्य अश्विनी कुमार रावल, एलेन कॅरियर इंस्टीट्यूट में प्रमुख के पद पर आए श्री विशाल शर्मा, प्रिंसिपल गुजराती कन्या महाविद्यालय श्रीमती संगीता मेहता एवं औद्योगिक न्यायालय में प्रभारी चेयरमैन के पद पर पदोन्नति हेतु श्री प्रवीण त्रिवेदी को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री विशाल शर्मा ने समाज के बच्चों को एलेन इंस्टीट्यूट में 10 प्रतिशत शुल्क में छूट की घोषणा की। सम्मान पत्र की फोटोकॉपी प्रस्तुत करने पर 5 प्रतिशत अतिरिक्त छूट प्राप्त हो सकेगी।

शिवांजलि पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा धर्मशाला निर्माण हेतु धनसंग्रह अभियान चलाने तथा निर्माण कार्य प्रारंभ करने की घोषणा साधारण सभा में की गई। इस अवसर पर उपस्थित मुख्य अतिथि श्री जयदेव शर्मा परिवार सहित अनेक समाजजनों ने दान देने की घोषणा की। ज्ञातव्य है कि मासिक जय हाटकेशवाणी में निर्माण की प्रगति रिपोर्ट के साथ दानदाताओं की सूची फोटो सहित आगामी अंक से प्रकाशित की जावेगी। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने निर्माण कार्य जल्द से जल्द करने का संकल्प व्यक्त किया।

नागर महिला मंडल की बैठक

गायत्री मंत्र साधना और प्रभाव के बारे में चर्चा

नागर महिला मंडल की मार्च माह की बैठक श्रीमती शारदा मंडलोई के निवास पर सम्पन्न हुई। उपस्थित 25 महिला सदस्यों ने गायत्री मंत्र साधना और प्रभाव विषय पर महू से पधारीं श्रीमती नीता वानखेड़े से ज्ञान प्राप्त किया। चैत्री नवरात्रि के बीच यह कार्यक्रम सभी उपस्थित सदस्यों के लिए लाभदायक रहा। इस अवसर पर श्रीमती सोनिया मंडलोई एवं श्रीमती चारु मित्रा नागर ने सबको धन्यवाद दिया। श्रीमती शारदा मंडलोई ने अतिथियों का स्वागत किया।

आगामी बैठक 29 अप्रैल को

अप्रैल माह की बैठक 29 अप्रैल को श्रीमती शारदा मंडलोई के निवास विजयनगर में आयोजित है। कृपया एक दूसरे के सम्पर्क में रहकर अधिकाधिक उपस्थिति सुनिश्चित करें। सभी उपसीति महिला सदस्यों को एक व्यंजन विधि 4 मिनिट में सुनाना होगी। वयंजन गर्मी के मौसम के अनुसार होना चाहिए। मनोरंजक गेम्स एवं पुरूस्कार वितरण भी होगा। अन्य जानकारी हेतु मो. 9425059101 पर सम्पर्क करें।

जज श्री प्रवीण त्रिवेदी बने औद्योगिक न्यायालय के प्रभारी चेयरमैन

इंदौर। मप्र औद्योगिक न्यायालय इंदौर का प्रभारी चेयरमैन न्यायाधीश पी.के. त्रिवेदी को बनाया गया है। एस.ए. नकवी लगभग तीन माह पहले इस पद से रिटायर हुए थे। इसी कारण डेढ़ हजार प्रकरणों की सुनवाई नहीं हो रही थी। औद्योगिक न्यायालय प्रदेश में इंदौर, भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर व रीवा में है। इंदौर के औद्योगिक न्यायालय का कार्य क्षेत्र इंदौर-उज्जैन संभाग है। यह एक बोर्ड होता है, जिसमें चेयरमैन के अलावा पांच जज सदस्य होते हैं। जज त्रिवेदी इंदौर में इसी बोर्ड के सदस्य भी हैं। प्रदेश के श्रम मंत्रालय द्वारा आदेश जारी करने के बाद उन्होंने पदभार ग्रहण कर लिया।

मध्य प्रदेश नागर ब्राह्मण परिषद शाखा इंदौर के अध्यक्ष श्री जयेश झा ने कार्यकारिणी के सदस्यों के साथ श्री जयदेव जी शर्मा को एडिशनल कमिश्नर,कमर्शियल टेक्स के पद पर पदोन्नत होने पर उनके निवास पर पहुँच कर पुष्पहार से स्वागत कर उनको बधाई दी, इस अवसर पर श्री शर्मा ने इंदौर शाखा को रू.11,000/-की सहयोग राशि भी प्रदान की। हम श्री शर्मा को धन्यवाद के साथ भगवान हाटकेश्वर से उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

नए वर्ष का आगाज़ "मां" की महिमा के साथ

21 मार्च 2015 को स्थानीय रवीन्द्र नाट्यगृह में आयोजित सुरभित संध्या में जीवन प्रबंधन गुरू पं. विजय शंकर जी मेहता ने 'मानस में मां की महिमा' विषय पर सारगर्भित उद्‌बोधन दिया। इस आयोजन में इंदौर नागर समाज के सदस्यों ने हिस्सा लेकर पं. श्री मेहता का अभिनंदन किया।

पं. मेहता ने कहा कि रामायण में जो दो प्रमुख पात्र राम एवं रावण के हैं, उनमें से एक अपनी माँ कौशल्या के सुसंस्कारों के प्रतीक है तथा रावण अपनी मां के कुसंस्कारों के प्रतीक हैं। इसी प्रकार महाभारत में पांडव एवं कौरव भी मां के संस्कारों के परिणाम है। गांधारी की तरह जब मांए अपनी आंखें होते हुए भी उन पर पट्टी चढ़ा लेगी तो सन्तान को अत्याचारी, अनाचारी बनने से कोई रोक नहीं पाएगा। यदि सन्तान को सुसंस्कारी बनाना है तो उन्हें भगवान हनुमान के सुपुर्द करना पड़ेगा। भगवान हनुमान को उनकी मां अंजनी ने तीन सूत्र दिए थे- (एक) कड़ा परिश्रम (दो) प्रार्थना तथा तीसरा धैर्य।

आज भी वे सूत्र प्रांसगिक है। सफलता का शार्टकट नहीं होता। उन्होंने वीर शिवाजी का प्रसंग भी उद्‌घृत किया कि एक बार उनके सैनिक लूट के माल के साथ एक खूबसूरत स्त्री को अपने साथ ले आए, तथा शिवाजी के सुपुर्द कर दिया। शिवाजी की मां के जो संस्कार थे कि अपने ऊपर अनाचार से घबरा उठी स्त्री को उन्होंने कहा कि हे स्त्री अगर तू मेरी मां होती तो मैं कितना खूबसूरत होता। वह स्त्री शिवाजी महाराज के पैरों में गिर पड़ी। बच्चों में संस्कार डालने का कार्य मां ही कर सकती है। नए वर्ष का आगाज मां की महिमा के साथ करने पर नागर समाज इंदौर के सदस्यों ने भी पं. विजय शंकर जी मेहता का अभिनंदन किया।

सखी सहेली ग्रुप, राऊ

होली मिलन के अवसर पर गौसेवा

सखी सहेली ग्रुप द्वारा 8 मार्च 2015 रविवार को विश्वकर्मा मंदिर राऊ में मीटिंग आयोजित की। नागर बहनों ने भजनों के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। कार्यक्रम का समापन विश्वकर्मा मंदिर की गौशाला में गायों को हरी घास खिलाकर किया गया। बहनों द्वारा होली के अवसर पर एक दूसरे को गुलाल लगाकर बधाई दी गई। बैठक में सौ. माया गिरिजाशंकर नागर, सौ. सुनीता अनिल नागर, सौ. हेमलता, सुश्री श्याम चक्कीवाले, सौ. मंजुला सुभाष त्रिवेदी, सौ. ललिता महेश नागर, सौ. मोनिता शैलेष जोशी, सौ. ममता विकास शर्मा, सौ. विनीता चिन्मय पंड्या। राऊ के नागर परिवारों से ओर महिला सदस्यों को ग्रुप में जोड़ा जाना प्रस्तावित है। विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र - सौ. अर्चना बसंत शर्मा मो. 8518885385, सौ. सुनीता नागर, सौ. उर्मिला शर्मा, सौ. मोनिता जोशी, सौ. श्रद्धा-मनीष नागर है।

सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार समारोह 21 अप्रैल को

म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद शाखा इंदौर द्वारा मंगलवार 21 अप्रैल 2015 अक्षय तृतीया के पावन दिवस पर सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन किया जा रहा है। ज्ञातव्य है कि इंदौर में इससे पूर्व कई सफल आयोजन सम्पन्न हुए हैं। आयोजन स्थल इस कार्य हेतु उपयुक्त, दर्शनीय तथा अलौकिक शक्ति स्थल है। आयोजन के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी हेतु अध्यक्ष श्री जयेश झा मो. 9826051728, महासचिव श्री राजेन्द्र व्यास 9893715930, श्रीमती शारदा मंडलोई अध्यक्ष नागर महिला मंडल 9425085052 एवं सचिव श्रीमती सोनिया मंडलोई 9826344266 से सम्पर्क कर सकते हैं।

कु. टीशा नागर

सुपुत्री-सौ. दीपिका जितेन्द्र नागर
7 मार्च
शुभाकांक्षी-नागर परिवार मोती बंगला देवास
मो. 9827678692

श्रीमती कोमल - 28 मार्च
श्रीमती रेखा त्रिवेदी - 6 अप्रैल
श्रीमती रत्नप्रभा - 5 अप्रैल
श्री रमेश नागर - 6 अप्रैल
द्वारा
मनीष-रश्मि भोपाल, सचिन-ममता झालावाड, ललित, यश, समर्थ, अनंत, उज्जैन
मो. 9977050413

पं. प्रभूदयाल-श्रीमती पार्वती नागर

26 अप्रैल
(कनवासा, धार)
शुभाकांक्षी-नागर परिवार-कनवासा खाचरोदा
पौराणिक परिवार - रंथभंवर
मो.-98267-20795

चारु-अर्पणा मेहता-हैदराबाद
14 अप्रैल
शुभाकांक्षी-शर्मा, मेहता परिवार
प्रेषक-गायत्री मेहता, इंदौर

स्तुति शर्मा (नासिक) - 8 अप्रैल
अर्पणा मेहता (हैदराबाद) - 12 अप्रैल
अंकित मिश्रा (पुना) - 13 अप्रैल
दक्ष वोरा (मुंबई) - 14 अप्रैल
नताशा वोरा (मुंबई) - 21 अप्रैल
वीरेन्द्र शर्मा (बैंगलोर) - 30 अप्रैल
- शुभाकांक्षी
सौ. गायत्री मेहता, इंदौर

दक्ष वोरा

सौ. जया-राहुल व्यास
18 अप्रैल 2014
नागर परिवार करनावद, घुंसी, व्यास परिवार, मड़ावदा 9977764835

जन्मदिन की बधाई

श्रीमती अंजना गणेशराम पुराणिक
5 अप्रैल 2015

चि. आशीष कृष्णकांत व्यास
6 अप्रैल 2015

शुभाकांक्षी- जोशी, नागर, जाधव, तिवारी परिवार
प्रेषक- पी.आर. जोशी, इंदौर

जन्मदिन की बधाई
कुशाग्र नागर पिता सुरेन्द्र नागर
निवासी राजनगर कालोनी शाजापुर
9 अप्रैल

मनोज नागर मो. 9977729306

श्री जी इलेक्ट्रिकल्स

10-बी, पंचशील नगर, देवास म.प्र.
07272-254031

मोटर रिवाईंडिंग, सबमर्सीबल पम्प, गीजर एवं घरेलू उपकरण, पंखे, कूलर, मिक्सर व सभी प्रकार के रिपेयरिंग कार्य किया जाता है। साथ ही ट्यूबवेल मोटर निकालने व डालने का कार्य भी किया जाता है।

सुबह से लेकर रात तलक

सुबह से लेकर रात तलक, दसो दिशाओं में खुशहाली हो।
होली जैसा रंगीला दिन हो, राते जगमग दिवाली हो।।
बरसाए लक्ष्मी जी सदा धन, सरस्वती जी दें सद्बुद्धि।
विघ्न विनायक शुभ-लाभ के संग हो साथ ऋद्धि सिद्धि।।
अबाल वृद्ध सबके मन में, मोह का हो कोई ओर न छोर।
कलम विचारक क्रांति लाए, भारत बढ़े प्रगति की ओर।।
धान का कटोरा भरा रहे, रोटी की डलिया रहे भरपूर।
दूध की नदिया बहती भारत में, फिर हो दुनिया में मशहूर।।
फिर केशर की क्यारी को हमें, श्रम जल से नहलाना है।
वसुधैव कुटुम्बकम् संदेश देकर, हमें विश्वगुरू कहलाना है।।
धर्म के रक्षक अमन, शान्ति का, पाठ सभी को सिखलाएं।
हम सब भारत के प्रिय बेटे हैं, ऐसा बनकर दिखलाएं।।
खाली हाथ न हो कोई भी, हर हाथ को काम मिले।
श्रमवीर, धरती पुत्र को सुख शांति आराम मिले।।
इंच-इंच भूमि हो सुरक्षित, जो खोया था उसे हम पाएंगे।
पीठ दिखाकर देश के बेटे मां का दूध न लजाएंगे।।
सीमा पर प्रहरी की आंखें, रहे न कभी सोयी-सोयी।
कारगिल, होटल ताज की घटना कर न पाए फिर से कोई।।
असमय न मौत हो किसी की और न कोई भूखा सोये।
विस्फोटों में मां बाप को खोकर, अब न कोई बच्चा रोये।।
श्रवण से सेवी बेटे हो, मां बहनों की ममता अथाह हो।
नदियों के कलकल जल के संग, प्रेम सुधा का अविरल प्रवाह हो।
फिर शबरी के बेर चखने, श्रीराम उतरे भारत भूमि पर।
धर्म न्याय सत्य स्थापित करे, रख पितृ आज्ञ सिर ऊपर।।
कृष्ण उतर आधुनिक पार्थ को, कर्म पे निष्ठा सिखलाएं।
अहं ब्रह्मास्मि का संदेश देकर, निज विराट रूप दिखलाएं।।
आजाद भगत बन आज के युवा, देश-धर्म पर बलि जाएं।
आशीषों का आंचल हमारे शीश, रख भारत माता मुस्कुराएं।।

- रमेश नागर
66, तृप्ति परिसर, नानाखेड़ा, उज्जैन
मो. 9977050413

डॉ. मनोज शर्मा एवं प्रीति शर्मा को विदेश जाने का उपहार

डॉ. मनोहरलाल शर्मा (बेरछामंडी) के सुपुत्र डॉ. मनोज शर्मा एवं उनकी पुत्रवधु श्रीमती प्रीति शर्मा (म.प्र. नागर महिला परिषद की सचिव) जून माह में एक्साइड लाइफ इंश्योरेंस कंपनी की ओर से विदेश (मलेशिया) जावेंगे। श्रीमती प्रीति शर्मा ने विगत 5 माह पूर्व एक्साइड कंपनी ज्वाइन करने के बाद जनवरी 2015 में सिल्वर क्लब एवं फरवरी माह में गोल्डन क्लब टारगेट पूरा कर म.प्र. का बेस्ट परफार्मर का रिकार्ड बनाया। कंपनी ने उन्हें उनके कार्य से प्रभावित होकर कई बार पुरस्कार एवं ट्राफियां प्रदान की हैं एवं इसी तारतम्य में माह जून में विदेश (मलेशिया) जाने का उपहार दिया है। म.प्र. नागर ब्राह्मण महिला परिषद, म.प्र. नागर युवा परिषद, म.प्र. नागर परिषद एवं शर्मा परिवार बेरछामंडी उज्जैन, इंदौर, शाजापुर, रतलाम, खण्डवा, लसुर्डिया ब्राह्मण आदि स्थानों से समाजजन के वरिष्ठ लोगों द्वारा शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रेषित किए हैं। नागर समाज दोनों के उज्जवल भविष्य की कामना करता है एवं विदेश जाने की बधाई देता है।

- विजय शर्मा
16 नजरअली मार्ग, उज्जैन
9752927313

श्री गजेन्द्र पंड्या का सम्मान

7 से 11 मार्च तक उदयपुर (राज.) में दक्षिण एशियाई (सार्क) देशों का युवा सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसकी मेजबानी सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं पेसिफिक विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से की। इस फेस्टिवल के लिए एक गीत एवं संगीत बांसवाड़ा के नागर श्री गजेन्द्र प्रसाद पंड्या ने दिया, जो पूरे समारोह में आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा। इस गीत के बोल थे- भारत, श्रीलंका, नेपाल और मालदीव, भूटान, बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान हमारा साउथ एशिया, साउथ एशिया, हमारा साउथ एशिया। इसके लिए उन्हें एक स्मृति चिन्ह देकर तथा शॉल ओढ़ाकर पेसिफिक युनिवर्सिटी में सम्मानित किया गया। श्री गजेन्द्र जी ने इस अवसर पर अपने परम मित्र आस्ट्रेलिया के हरिहर झा, उदयपुर के श्री भंडारीजी के मार्गदर्शन हेतु आभार व्यक्त किया।

कवि पं. नागर को मिला मालवा का महारथी सम्मान

शाजापुर। नगर के कवि पं. अशोक नागर को मालवा के महारथी सम्मान से सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम राऊ इंदौर में आयोजित किया गया था। नगर पालिका परिषद राऊ इंदौर द्वारा स्थापित प्रथम मालवा के महारथी सम्मान से हजारों काव्य प्रेमियों की उपस्थिति में मध्यप्रदेश शासन के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने पं. नागर को सम्मानित किया। कार्यक्रम में विधायक जीतू जिराती, सैनिक लव दुबे, कवि मदनमोहन समर, योगेंद्र शर्मा, अजात शत्रु, श्वेता सरगम, अतुल ज्वाला आदि मौजूद थे।

चि. रितेश याज्ञनिक का चयन

(सुपौत्र स्व. श्री मदन शंकर नागर-श्रीमती रामप्यारी नागर) (सुपुत्र श्री अरूण शंकर नागर-श्रीमती कविता नागर) का कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित संयुक्त स्नातक परीक्षा-२०१३ द्वारा केन्द्रीय सचिवालय सेवा (CSS) में चयन होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

शुभाकांक्षी- समस्त नागर परिवार (भगवतगढ वाले।)

विदेश प्रस्थान

श्री आदित्य जोशी(भोपाल) सुपुत्र श्री सुभाष-चेतना जोशी दिनांक 10-04-2015 को विदेश (यू.एस.ए.) को प्रस्थान करने वाले है। आप इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर है और टी.सी.एस. कंपनी पुणे(महाराष्ट्र) में सीनियर सिस्टम इंजीनियर के पद पर पदस्थ है, तथा कंपनी के प्रोजेक्ट के सिलसिले मे लुइसविल(केंटकी) जा रहे है। उनकी इस उपलब्धि पर समस्त जोशी परिवार के और से हार्दिक बधाईया एवं शुभकामनाएं।

श्री रूपेश शुक्ला को पीएचडी की उपाधि

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय द्वारा श्री रूपेश कुमार शुक्ला को वाणिज्य संकाय में उनके शोध प्रबंध 'ए कम्परेटिव्ह स्टडी ऑफ द इम्प्लीमेंटेशन ऑफ ई-गवर्नेन्स इन गुजरात एण्ड मध्यप्रदेश विथ स्पेशल रेफरेन्स टू इण्डस्ट्रिल सेक्टर' पर पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। उन्होंने डॉ. असगर अली आदिल, शा. महाविद्यालय, सुखतवा, होशंगाबाद के निर्देशन एवं डॉ. छाया मिश्र, श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर के सहनिर्देशन में शोध कार्य किया है। श्री रूपेश कुमार शुक्ला वर्तमान में श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर में सहायक प्राध्यापक (कम्प्यूटर) है।

शुभकामना सन्देश

कु. नीलमणि त्रिवेदी सुपौत्री स्व. श्री मणिशंकर त्रिवेदी एवं सुपुत्री श्री मिथिलेश त्रिवेदी ने सी.ए. फाइनल की आई.पी.सी.सी. एग्जाम में सेलेक्ट होने के बाद मुंबई स्थित महाजन- ऐबरा कंपनी में सिलेक्शन हुआ है। नीलमणि ने इसके साथ साथ विक्रम यूनिवर्सिटी से बी. कॉम. ऑनर्स फाइनल की परीक्षा भी 80प्रतिशत से पास की है। नीलमणि मुंबई स्थित महाजन- ऐबरा कंपनी में अपनी 3 साल की ट्रेनिंग पूरी करेगी। नीलमणि के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए आशा करते है कि इसी तरह अपने परिवार और समाज का नाम गौरवान्वित करती रहे।

अंकुश कमलेश त्रिवेदी
उज्जैन (म.प्र.)
9977891389

विदेश प्रस्थान पर बधाई सन्देश

मानस त्रिवेदी सुपौत्र स्व. श्री मणिशंकर जी त्रिवेदी (पूर्व नागर ब्राह्मण समाज अध्यक्ष) एवं सुपुत्र श्री मिथिलेश त्रिवेदी का चयन सद गुरुदेव डॉ स्वामी दिव्यानंद जी महाराज भिक्षु तपोवन हरिद्वार के आशीर्वाद से उनकी कंपनी एच एस बी सी बैंक पुणे द्वारा लंदन में होने वाले जी पी एस प्रोजेक्ट के लिए हुआ है। मानस एच एस बी सी बैंक पुणे में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर विगत 3 वर्षो से कार्यरत है। मानस 21 मार्च 2015 को मुंबई से लंदन के लिए प्रस्थान करेंगे हम सब उनके उज्जवल भविष्य के लिए भगवान हाटकेश्वर से प्रार्थना करते है वो आगे इसी तरह अपने परिवार और समाज का नाम गौरवान्वित करते रहे।

अंकुश कमलेश त्रिवेदी उज्जैन
9977891389

वामा™ क्रीम
सेल्समेन चाहिये
हमारे विभिन्न उत्पादकों की बिक्री हेतु पूरे भारत में टूरिंग विक्रय प्रतिनिधियों की आवश्यकता है।
वेतन- योग्यता अनुसार
अनुभव- आयुर्वेदिक दवा या कॉस्मेटिक्स विक्रय का 2 वर्ष का अनुभव अनिवार्य
अपना बॉयोडाटा शीघ्र भेजें
अंजू फार्मास्यूटिकल्स
111/112, अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इन्दौर फोन 0731-2527415
मो. +91-98935-62415, (नवीन झा), 94250-62415
Email : navin@anjupharma.com Website : www.anjupharma.com

वैवाहिक प्रस्ताव (युवक)

पवन मणीशंकर नागर

जन्म - 09-07-1988
समय - 3.00 बजे/देवास
शिक्षा - एम.ए. संस्कृत
मासिक आय - 15000/-
सम्पर्क - 9977764835

जय शैलेष कुमार भट्ट

जन्म - 24.09.1985
गौत्र - भारद्वाज
समय - 6.45एएम, रायचुर (कर्नाटक)
कद - 5'11'', **वजन**- 65
शिक्षा - बी.कॉम प्रथम वर्ष
कार्यरत- व्यापार
सम्पर्क - 08532655418, 09036550414

हार्दिक गिरीशचंद्र पंड्या

जन्म - 12.07.1983
गौत्र - पाराशर
समय - 3.05पीएम, खंडवा
कद - 5'7'', **वजन**- 68
शिक्षा - एम.कॉम, पीजीडीसीए
कार्यरत- ऑफिस असिस्टेंट एमआयटी कॉलेज, उज्जैन
सम्पर्क - 0734-2517824, 9827348396

प्रमोद कुमार कमल किशोर नागर

जन्म- 16.08.1988
कद-5'7''
कार्यरत- म.प्र. पुलिस
सम्पर्क- मो. 9827267611, 9039722625

जयेश शुक्ला

जन्म-07.01.1986
समय- रात 12.30
कद-5'3''
कार्यरत- शासकीय सेवा (शिक्षा)
सम्पर्क- मो. 9907650012

नितिन गोपालकृष्ण दशोरा

जन्म-08-07-1987/उदयपुर (राज.)
कद-6'
शिक्षा-बी.ई.मैकेनिकल
कार्यरत- सीनि. इंजीनियर आदित्य बिडला ग्रुप रायपुर (छत्तीसगढ़)
सम्पर्क- नाथद्वारा (राज.) 02953-233749, 09414541196

वैवाहिक प्रस्ताव (युवती)

कु.सलोनी ज्योतिषचंद्र पंड्या (मांगलिक)

जन्म - 22.07.1989
गौत्र - पाराशर
समय - 12.15एएम/नडियाद (गुज.)
कद - 5'4'', **वजन**- 60
शिक्षा -एम.ई., अंतिम वर्ष
कार्यरत- स्वयं की कोचिंग क्लास
सम्पर्क - उज्जैन 0734-2521688, 9406605600

निधिका स्व. सुगाषचंद्र जी शर्मा

जन्म - 22.03.1994
गौत्र - कश्यप
समय - 10.50एएम
कद - 5'
शिक्षा - बी.एस.सी. (माइक्रोबायोलॉजी) पीजीडीसीए (अध्य.)
सम्पर्क - मक्सी 9098372009 9713666073

कु. मोनिका अशोक नागर

जन्म - 27.02.1990
समय - दोप.3.00 बजे/देवास
शिक्षा- एम.ए. फायनल
कार्यरत- गेस्ट फेकल्टी, हायर सेकेंडरी स्कूल भौंरासा
सम्पर्क- भौंरासा (जि. देवास) 9300249481

अर्पणा अरुणाशंकर नागर

जन्म-19-02-1993
समय-1.50 पीएम/सवाई माधोपुर
कद- 5'6''
शिक्षा- बी.ए. (इंग्लिश लि.), एम.ए. (अध्ययनरत) आरटीईटी, ईटीटी (जम्मू)
सम्पर्क-ग्रा.पो.- भगवतगढ़, जि. सवाई माधोपुर 08764076354, 09667290857

आरती सोमदत्त नागर

जन्म- 7 अक्टू. 1987
समय- 7.55 एएम, जयपुर (राज.)
कद- 5'5''
शिक्षा- एम.ए. (संस्कृति एवं राजनीति विज्ञान)
डिप्लोमा- अर्ली चाईल्ड हुड केयर एंड एजु.
सम्पर्क- जयपुर, 0141-5132244, 9772573380

चित्रा गोपालकृष्ण दशोरा

जन्म-01.11.1990/उदयपुर (राज.)
कद- 5'6''
शिक्षा- बी.टेक कम्प्यूटर साइंस
सम्पर्क- नाथद्वारा, 02953-233749, 09414541196

'मेलापक' से जुड़े कई रिश्ते

चि. महेन्द्र व्यास एवं विजेता नागर

सौ.कां.गुंजन-चि. पंकज

जनवरी 2015 में प्रकाशित जय हाटकेश वाणी के मेलापक अंक से अनेक वैवाहिक सम्बन्ध तय हुए हैं। मनपसंद एवं मनमाफिक रिश्ते तय होने पर अनेक अभिभावकों ने वाणी परिवार का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया है। प्रथम सम्बन्ध 75 नं. पर प्रकाशित वैवाहिक प्रस्ताव चि. अभिषेक महेन्द्र व्यास उज्जैन का सम्बन्ध 53 नं. पर प्रकाशित कु. विजेता सुपुत्री सतीश कुमार नागर रतलाम से हुआ। जिनकी विधिवत तिलक रस्म 8 मार्च 2015 को रतलाम में सम्पन्न हुई। शुभविवाह 28-05-2015 को उज्जैन में किया जाना तय किया गया। नागर परिवार ने वाणी पत्रिका का आभार व्यक्त किया है।

इसी प्रकार जय हाटकेशवाणी के माध्यम से सौ. कां. गुंजन (शुभि सुपुत्री सौ. सीमा-नीरज नागर राजगढ़ (म.प्र.) का विवाह चि. पंकज सुपुत्र-श्रीमती शशि स्व. माधवराम नागर लखनऊ के साथ सम्पन्न हुआ। परिवार ने आभार व्यक्त किया है।

मेलापक 2015 के माध्यम से राऊ निवासी श्री राजेन्द्र शर्मा (गट्टू) की सुपुत्री कु. लवलीन शर्मा का विवाह सम्बन्ध राजगढ़ निवासी श्री महेश जी नागर के सुपुत्र चि. राहुल नागर के साथ होना तय हुआ है। चि. राहुल का वैवाहिक प्रस्ताव मेलापक में 44 नं. पर प्रकाशित हुआ है।

अनेक परिवार हैं जो 'वाणी' के माध्यम से विवाह सम्बन्ध तय होने के मामले में लाभान्वित होते हैं इनमें से बहुत कम समाजजन हैं जो सम्बन्ध तय होने की सूचना हमें भेजते हैं। कई तो विवाह समारोह सम्पन्न होने के बाद यहां वहां मिल जाते हैं तब बताते हैं कि हमारे यहां जय हाटकेश वाणी में प्रकाशित सूचना के आधार पर सम्बन्ध हुआ है। वर्ष में एक बार मेलापक के अलावा प्रतिमाह प्रकाशित वैवाहिक प्रस्तावों से भी विवाह सम्बन्ध तय होते हैं। मनपसंद रिश्ते एवं सफल वैवाहिक जीवन का यह सशक्त माध्यम बन चुका है। इस सुविधा को नि:शुल्क रखने का मकसद यही है कि सभी नागरजन इसका लाभ ले सकें।

सौ. कां. निहारिका (सुपुत्री विनोद जी दशोरा अहमदाबाद) का विवाह कर्मा (सुपुत्र अतुल कुमार रावल अहमदाबाद) के साथ सम्पन्न हुआ।

निस्वार्थ सेवा कभी निष्फल नहीं जाती...

सहसा ही कुछ लोग सेवा कार्यों से जुड़ जाते हैं, कुछ ऐसे होते हैं जो निस्वार्थ भाव से ही सेवा करते हैं, अर्थात उन्हें प्रतिफल की आशा नहीं रहती। उनकी भावना होती है कि उन्हें सेवा करना है, न नाम की चाह है, न दाम की। ऐसे लोगों को परमात्मा की ओर से पुरस्कार प्राप्त होते हैं। जो लोग कम मेहनत में ज्यादा सुख-सुविधा प्राप्त करते पाए जाते हैं, वे कहीं न कहीं निस्वार्थ सेवा से जुड़े होते हैं। कई बार लोगों को आश्चर्य भी होता है कि एक ही काम एक ही दाम पर करने वाले लोगों में उन्नति की गति भिन्न-भिन्न क्यों है। आत्म संतोष एवं बाहरी समृद्धि साथ-साथ चलने वाले विषय है, परन्तु तभी तब व्यक्ति सेवा से जुड़ा हो... खासकर निस्वार्थ सेवा से जो लोग केवल कर्म से जुड़े हैं वे आत्मसंतोष की दौलत नहीं पा सकते। क्योंकि यह आंतरिक विषय है, कर्म के साथ आपको सेवा का भाव रखना जरूरी है, यह बात सही है कि उसमें समय भी देना पड़ता है। परन्तु वह समय की बर्बादी कतई नहीं है।

दो समान कार्य करने वाले व्यक्ति में से सेवा करने वाला व्यक्ति आखिर ज्यादा समृद्ध क्यों होता है जबकि उसे तो पिछड़ जाना चाहिए। इसके पीछे वही तथ्य काम करते हैं, कि सेवा के लिए दिए गए समय की भरपाई परमात्मा करते हैं जबकि कार्य के लिए दिए गए समय का पारिश्रमिक तय होता है। कई उदाहरण देखने को मिल जाएंगे, सेवा में रत लोगों को आत्म समृद्ध देखकर अन्य लोग तरह-तरह की बातें भी बना सकते हैं, लेकिन इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सेवा का मूल्य कोई और चुका रहा है। कई लोगों को कार्यों में बहुत सारी कठिनाइयां आती हैं, जबकि कुछ के काम आसानी से सम्पन्न हो जाते हैं, कुछ लोग सदैव तनाव में देखे जाते हैं तो कुछ एकदम बेफिक्र रहते हैं। इन सबके पीछे निस्वार्थ सेवा का सूत्र ही काम करता है। कई लोग गुप्त सेवा करते हैं, उनका आडंबर नहीं होता, परन्तु लाभ तो उन्हें मिलता ही है। कहा जाता है कि अच्छे कार्य की सुगंध चारों और फैलती है, उनका मौखिक प्रचार होता है, परंतु यहां निस्वार्थ भाव की बहुत जरूरत है। कुछ लोग सेवा करते हुए फोटो खिंचवाकर अखबारों में छपवाते है या उसका प्रचार करते है तो वह स्वार्थवश सेवा हो गई। उसका प्रतिफल देने के लिए परमात्मा बाध्य नहीं है। अपना प्रचार एवं वाहवाही ही उसका हासिल है। अतः अपने कार्य के साथ निस्वार्थ सेवा को जोड़े... ऐसी सेवा जिसमें न कुछ पाने की आस हो, न प्रचार की प्यास हो... आप देखना ऐसी सेवा कभी निष्फल न गई है, न जाएगी।

इस सम्बन्ध में अपने विचार हमें 25 अप्रैल 2015 तक अवश्य लिख भेजें। आगामी अंक में उन्हें प्रकाशित किया जाएगा।

- सम्पादक

समय अनुसार परिवर्तन जरूरी है

विषय - कहां से कहां आ गए हम

हम नागर ब्राह्मण है- ये सत्यता को कोई नहीं झुठला सकता है, लेकिन हम कहने के ब्राह्मण रह गए... । गौरवमयी परम्पराएं जो थी वो सब धीरे-धीरे खत्म हो रही है। आज के इस भौतिक युग या यू कहे तेज गति की जिन्दगी में ये सब संभव नहीं है। शोला पहनकर खाना बनाना शेष हो गया, लेकिन उसकी जगह घर की महिला सदस्य कम से सुबह नहाकर शुद्धता से भोजन बनाए और ईश्वर को भोग लगाकर सबको दे, लेकिन हमारे यहां सभ्यता खत्म होती जा रही है। सुबह जल्दी-जल्दी बिना नहाये खाना बनाया। टेबिल पर रखा उसके बाद नहाकर काम पर चले गए, लेकिन इसी को थोड़ा सा बदल दे तो हमारे संस्कार यथावत् रहेंगे। थोड़ी-सी मेहनत करने की जरूरत है। आज कल शादी ब्याह में सभी एक साथ खाना खाते हैं, लेकिन हां अन्न का नुकसान न कर प्लेट में उतना ही ले जितने की जरूरत हो। इसे अनुशासन ही कहते हैं। समय के हिसाब से रीतिरिवाज को बदलना समय की मांग है। आज यदि हम उन्हीं पुरानी धार्मिक एवं सामाजिक गति विधियों के हिसाब से चलाएंगे तो शायद समाज के सभी सदस्य उसमें हिस्सा नहीं लेंगे- लेकिन अपने समाज की मर्यादाओं में रहकर खूबसूरती से उसी कार्यक्रम को करेंगे, हर कोई हिस्सा लेगा। लेकिन इन सबके लिए युवा पीढ़ी के साथ तजुर्बेदार लोग साथ देंगे तो सब कुछ संभव हो सकेगा। धार्मिक और सामाजिक बातों को यदि लेते हैं- देखिए जिस घर यदि किसी की मौत हो गई तो उस घर में 15 दिनों तक शोक का माहौल रहता था, यदि पुरुष अकेला रह गया तो वो बेचारा ये सोचता रहता है अपने बच्चों के साथ जीवनयापन कैसे करेगा- वैसे भी पहले से ही पुरुषों पर कोई प्रतिबंध तो थे नहीं। लेकिन यदि कोई स्त्री विधवा हो जाती है तो उस पर तरह-तरह के प्रतिबंध लगाना शुरू कर देते हैं परिवार और रिश्तेदार लोग।

तुमको ये नहीं पहनना है, ये नहीं खाना है, बाहर नहीं जाना है आदि...

शायद बोलने वाले लोग ये नहीं जानते एक तो उस स्त्री का पति चला गया है। अपने बच्चों को कैसे पालेगी? कैसे जीवनयापन करेंगे- मैं स्वयं सबसे पूछती हू कभी आपने उस स्त्री के मन को टटोलने की कोशिश की- उसकी मन की दशा क्या है। इसके लिये समाज को अपने नियम बदलने होंगे और इसी संदर्भ में मेरे परिवार ने नियम बदले मैं स्वयं इस वक्त इसी दौर से गुजर रही हूं। 27 सितम्बर 2013 को मेरे पति नहीं रहे। मेरे दो बेटे बड़ा 12वीं में और छोटा 9वीं में पढ़ रहा था। 13 दिन के पगड़ी, ब्राह्मण वगैरह करवाने के बाद उन लोगों ने मुझे कहा- तुम बाहर जाकर आफिस का काम देख सकती हो, खाना, पहनना, सभी तरह से मुक्त कर दिया। मैं अपने ससुराल और पीहर के सदस्यों की आभारी रहूंगी, जिनकी वजह से मैंने अपने पति के आफिस के सारे कार्य खुद जा-जाकर सम्पन्न करवायें और अपने दोनों बच्चों के साथ अकेले कलकत्ता में जीवनयापन कर रही हूं। परिवार यदि आपको कोई छूट देता है तो आपको अपनी मर्यादाओं में रहकर पूरा करना होगा। तभी आप सही है। इसी तरह हमें नए समाज की रूपरेखा तैयार करके उसे हमारी नई पीढ़ी के सामने प्रस्तुत करना होगा, जिससे उनको वो बोझ न लगे। जहां अनुशासन होता वही प्यार दिखाई देता।

- अणिमा दीप याज्ञनिक
कोलकाता, 9831724829

झांककर तो देखिये जरा आदमी के भीतर चांद और सूरज से वह कुछ कम नहीं होता

विषय :- कहां से कहां आ गए हम..!

देश के अतीत, वर्तमान और भविष्य के प्रति सोच के बारे में प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा था- हम क्या थे-क्या हो गये और क्या होंगे आगे?

हम क्या थे- यह तो इतिहास बता देता है। हम क्या होंगे- हम भविष्य के गर्भ में बंद है। किंतु वर्तमान में हम क्या हो गये हैं, यह सोच का विषय है। इसी तरह हमारा विचारवाणी का विषय भी है। जिसके सिक्के के दो पहलू की तरह दो उत्तर हो सकते हैं- एक आशावादी और उत्साहजनक तथा दूसरा निराशावादी व चिंताजनक।

आशावादी उत्तर तो यह है कि हम आज समय की लय के साथ हैं, पीछे नहीं है। जितनी तरक्की जमाने ने कर ली है हम उसी स्तर पर है। क्या नहीं है हमारे पास? रोटी-कपड़ा-मकान सभी तो है स्तरीय। शिक्षा का जितना विस्तार हुआ है, उतनी शिक्षा भी हमने हासिल कर ली है, और उसी के बल पर आज हमारे पास अच्छा सा जॉब है।

रहने के लिए सर्वसुविधायुक्त मकान है, पहनने के लिये जमाने के अनुरूप परिधान है, खाने-पीने का भी उम्दा इंतजाम है, मनोरंजन के पर्याप्त साधन हैं, आवागमन हेतु वाहन है, मेडिकल सुविधाएं हैं..। घर में कोई फंक्शन हो, चाहे बर्थडे हो या सगाई हो या विवाह हो सभी में खूब पैसा खर्च कर रहे हैं आज हम। भौतिकता की किस ऊंचाई को हमने छुआ नहीं है? सभी तो हमारे पहुंच में है। ... अस्तु।

किन्तु निराशावादी या चिंताजनक उत्तर में काफी कुछ लिखने की गुंजाइश है। हमारे यहां निमाड़ में बड़े- बूढ़े एक नुक्ता कहते हैं- 'भण्या पर गुण्या' नहीं याने पढ़ लिख तो गये किन्तु गुण हासिल नहीं किये। बस यही चिंता का विषय है और यही सबसे बड़ा सबब है समाज में अक्सर देखी जाने वाली विकृति का।

समाजशास्त्री इस विकार को कहते हैं- सोशलाइज्ड एंटीसोशल पर्सनालिटी डिसऑर्डर याने समाजिकृत असामाजिक व्यक्तित्व विकार। इनका मानना यह भी है कि शहरी जनसंख्या अधिक प्रतिशत में इस विकार से ग्रसित है।

अनुशासनहीता जैसे इस विकार को लेकर चिन्ता होना स्वाभाविक भी है किंतु सूर्य के नीचे इस धरा पर ऐसी कोई बुराई (विकृति) नहीं है जिसका इलाज न हो। इसे जड़ से उखाड़ना असंभव नहीं, किन्तु कठिन अवश्य है। इसके लिये समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस गोवर्धन पर्वत को उठाने हेतु अपनी-अपनी अंगुली का सहारा देना होगा। सामाजिक इच्छाशक्ति जागृत करना होगी तभी सब के सहयोग से इस विकृति को दूर किया जा सकता है।

माइकल एंजेलो के अनुसार- छोटी-छोटी बातों से पूर्णता हासिल होती है किंतु पूर्णता कोई छोटी बात नहीं होती। ऐसा नहीं है कि हमारे पास उस गरिमामय, मर्यादित समाज की विरासत नहीं है। समय तो पंछी की तरह उड़ जाता है, किंतु अपनी परछाइयां अवश्य पीछे छोड़ जाता है।

कहां गये वे लोग? जिनमें अनुशासन के प्रति कितनी आस्था थी, इसी कारण उनमें संकल्प शक्ति व विवेक कूट-कूट कर भरा था। सभ्यता ही जिनका आचरण था। कितने कर्तव्यनिष्ठ थे वे लोग। वे लोग तो वापस नहीं आ सकते किंतु उनकी विरासत को हम कोशिश करके अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

कार्य बड़ा है- इसे मजाक ना समझे, कार्य कठिन भी है- इसे हलके में ना लें, अवसर कम है- कहीं देर ना हो जाए, राह भी सकरी है- कहीं भटक ना जाए, किंतु इसका पुरस्कार अवश्य ही इतना शानदार होगा कि सब चकित हो जाएंगे।

चिंतक एच.डब्ल्यू लांग फेलो ने इस विषय में सलाह दी है कि सभी लोग छोटे-छोटे कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं बशर्ते वे बड़ी-बड़ी महत्वाकांक्षाओं से अभिभूत ना हों।

जनसाधारण को यह भी समझना होगा कि समस्याओं का हल केवल एक संतुलित मस्तिष्क में ही होता है। कहते है शिष्ट व्यवहार (मेनर्स) अंक गणित में शून्य की तरह होते है, वे अपने आप में भले ही बहुत कुछ ना हो किंतु अन्य सभी का मूल्य बढ़ाने की क्षमता उनमें खूब होती है।

जिम गुडविन ने कहा है- इम्पॉसिबल इज ऑफन द अनट्राइड याने असंभव हमेशा बिन-कोशिश होता है। अतः कोशिश की जाये तो कुछ भी असंभव नहीं है।

और अब अंत में विश्वप्रसिद्ध होटल व्यवसायी चार्ल्स फोर्ट अपनी आत्मकथा में अपने पुत्र रॉको से कहते हैं कि मैं जो अभी कह रहा हूं वह आज से पांच हजार वर्ष पहले भी सत्य था और आज से पांच हजार वर्ष बाद भी सत्य रहेगा, उन्होंने कहा- स्वच्छता, ईमानदारी, शालीनता, दूसरों के प्रति आदर भाव, विनम्रता, अच्छा आचरण, अक्षतता (इंटीग्रिटी), अनुशासन ये सभी कभी भी आउट आफ डेट (पुराने) नहीं होते।

अतः इन्हीं गुणों को अपनाकर हम जहां थे वहीं पहुंच सकते हैं, और अपनी उस मर्यादित विरासत को प्राप्त कर सकते हैं। टू गेदर वी केन एण्ड टू गेदर वी विल।

अंत में चलते-चलते :-

कौन कहता है, आदमी में दम नहीं होता।
जहां आदमी है वहां रोशनी है- तम नहीं होता।।
झांक कर तो देखिये जरा आदमी के भीतर।
चांद और सूरज से वह कुछ कम नहीं होता।।

- मोरेश्वर मंडलोई
खंडवा

संसार में भक्ति सहज है...

आपकी उलझनें सुलझाए गणेशाचार्य श्री कैलाश नागर (गुरूजी)

आपके साथ मेरे मन के भाव रखने का ये छोटा सा प्रयास कर रहा हूँ। मैं और आप या कहूँ कि हम मिलकर भाव की एक नयी डगर पर साथ साथ चलते हैं। इस भावपूर्ण यात्रा में आप और हम पथिक होंगे; ज्ञान का दीपक मार्ग को आलौकित करेगा, संस्कारों की गंगा निर्मल स्नान का हमें सौभाग्य देगी। ऋद्धि - सिद्धि दायक गणेश जी की कृपा से हम इस जीवन डगर के टेड़े मेढे रास्तों को पार पाने की शक्ति माँ पार -वती से प्राप्त करेंगे। जब मन का पलड़ा दु:ख के पहाड़ से भारी होगा तब हम करुणा के सागर शिव के कैलाश के शिखर से शांति की वर्षा का प्रसाद ग्रहण करेंगे। जब हमें दिशा -विदिशा का भरम पैदा होगा तो कार्तिकेय हमारे प्रारब्ध का माया जाल काटकर सु -कर्म का उदय करेंगे। हमारी ये यात्रा शुभ लाभ और आमोद प्रमोद के साथ भी होगी; किन्तु ये यात्रा आपके बिना पूरी नहीं हो पायेगी आप मेरे साथ जुड़े रहेंगे इ-मेल, एसएमएस, पत्रों या व्हाट्सप्प के द्वारा। चलिए आज की यात्रा शुरू करते हैं भक्ति से भक्ति में सबसे अधिक भाव की आवश्यकता होती है।भाव भी वो जो भव सागर से मिला दे; भाव के सबसे निकट का मित्र है विश्वास। अब होता क्या है कि आपके पास भाव भी है ,विश्वास भी है फिर भी भक्ति नहीं है। होता ये भी है कि आपके पास भाव भी नहीं विश्वास भी नहीं फिर भी भक्ति है। फिर सवाल कि भक्ति कौनसी ? ये तो तय है कि भाव दोनों में है , पर एक भक्ति में भाव के साथ अभाव है विश्वास का। एक भक्ति होती है भय की ;आजकल कलयुग में इस भक्ति का पलड़ा भारी है।ये भय भक्ति कहलाती है - इसमें भक्त नित्य मंदिर तो जाता है ,माथा भी टेकता है मगर भयवश भाव नहीं ला पाता।ये भक्त घर में भी पूजा करेगा तो भय से हाथ भी जोड़ेगा तो भय से आरती भी उतारेगा तो भगवान से आँख नहीं मिलाता क्यों ? क्योंकि उसके पाप कर्म का भय उसे भगवान के सामने सताने लगता है। यहाँ भक्ति का भाव

तो देखिये मन पाप कर्म या अपराध को याद कर रहा है किन्तु शरीर भगवन के सामने खड़ा है। ताली भी बज रही मुंह आरती भी गा रहा किन्तु मन कुछ और गा रहा। अब सवाल ये की इस अनन्य भक्ति का क्या करें? भगवान इस भक्ति को किस रूप में लेंगे ? काश की कुछ यूं होता कि इस भक्ति में देह कहीं और होती और मन भगवान के साथ होता। पर ये भी संभव नहीं क्योंकि इसके लिए योग भक्ति की आवश्यकता होती और यदि योग भक्ति जीवन में होती तो अपराध हुवा ही नहीं होता और यदि अपराध हुवा भी होता तो प्रायश्चित भाव के द्वारा उसका शमन हो चुका होता तो भक्ति के मार्ग में अवरोध पैदा नहीं होता। भक्ति के अन्य प्रकारों या उसकी गहराइयों में न जाते हुवे उसके मर्म को समझें . सकाम भक्ति ,निष्काम भक्ति के आलावा हम आपसे सहज भक्ति पर बात कर रहें हैं .परमात्मा प्राप्ति का उद्देश्य मूल है कोई भी भक्ति छोटी या बड़ी नहीं होती .भक्ति में प्रयोजन क्या है ये भूल जावो ये याद रखो कि परमात्मा को अपना मानकर सुख भोगने की आशा न रखते हुवे दूसरों की सेवा मांगना भी भक्ति है .कर्म करना और अभिमान को छोड़ना भी भक्ति है .संसार में जो सहजता से प्राप्त कर सकते हो वो सिर्फ भक्ति है .परिस्थितियां अनुकूल नहीं हो रही ,जो मांगते हो वो मिलता नहीं और जो मिल गया वो स्थिर नहीं वो न आज है न कल है ,जो स्थिर है ये जनम भी अगले जनम भी वो सिर्फ भक्ति है .जो सदा से है और सदा ही रहेगी वही परमात्मा का तत्व है -भक्ति।

ये भक्ति की धारा लगातार बहती रहेगी आगे भी इसी बीच कुछ प्रश्न हैं -कलकत्ता से मुकुंद झा का पूछते हैं कि पूजा पाठ करता हूँ पर मेरे मन को फिर भी शांति नहीं ?

आप चिंता के साथ पूजा पाठ करते होंगे मुकुंद जी .पूजा के पूर्व प्राणायाम करें , गायत्री मन्त्र की एक माला करें . मन को स्थिर करने के लिए सुबह भ्रामरी प्राणायाम करें. याद रखें पूर्ण श्रद्धा के साथ भयरहित पूजा पाठ करें . भय और भगवान एक साथ नहीं रहते . हालांकि आपने बताया नहीं कि आप कौनसा पाठ और पूजा करते हैं. कृपया अगली बार अवगत कराएं.

दूसरा प्रश्न हेमंत जोशी जी का बनारस से ? कहते हैं मैं नास्तिक हूँ पर फिर भी बनारस में रहकर ये सोचता हूँ कि मेरे आसपास सभी धार्मिक हैं फिर मैं भी कभी कभी माँ गंगा के किनारे बैठ कर घंटों स्वयं से बातें करता रहता हूँ कि क्या मैं सही हूँ ?

हेमंत जी याद रखिये जीवन में कभी पतन न होगा यदि मनुष्य दो बातें याद रखें एक

मृत्यु और दूसरा भगवान को . आपके प्रश्न में ही उत्तर निहित है .आपने लिखा है कि मैं कभी कभी गंगा के किनारे जाकर बैठ जाता हूँ ,मतलब साफ़ है आप अपने अंदर आस्तिकता लेकर ही गंगा माँ की गोद में जाते हैं .नास्तिक लोगों से कई बार बात हुई मैंने उनसे यही पूछा कि आप किसको नहीं मानते हो ? तो जवाब था कि भगवान को , चलो मुझे यही खुशी हुई कि उनकी वाणी से भगवान निकला . यानिकि भगवान हैं वो साबित कर देते हैं . आप नित्य गंगाजल से स्नान करें राहु का दोष दूर हो जायेगा।

दुबई से हितेश रावल जी की समस्या कुछ अलग ही है वो लिखते हैं कि मैं ज्यादा पूजा करता हूँ तो मेरा बदन भारी हो जाता है और बहुत जोरों से उबासी आती है ? हे मेरे गणेश जी क्या जवाब दूँ .....! हितेश जी तम कंय राक्षस गण में तो नी आया था नी दुनिया में ?? ,चलो जी होता है कि राक्षस गण भी पूजा पाठ के समय बदन भारी कर देता है.आप का नक्षत्र भी अभिशिप्त हो सकता है .लेकिन आप घबराएं नहीं आप चाँदी के बर्तन में पानी पियें।

आप पाठक भी श्री गणेशाचार्य जी से विभिन्न विषयों पर अपने प्रश्न पूछ सकते हैं। गुरूजी का मोबाइल नं है- 9893888498 ।

परिवार और समाज विधवा-विधुर विवाह हेतु पहल करें

विधि के विधान के आगे हम सब असमर्थ एवं नतमस्तक हैं। नागर समाज में 30 से 40 वर्ष की आयुवय के जो महिला-पुरुष अपने जीवन साथी से बिछड़ गए हैं, उनके पुनर्विवाह हेतु उनके परिवार एवं समाज को पहल करना चाहिए। सबसे पहले उनके परिवार को। जहां तक लड़की के मायके पक्ष का सवाल है, वे अपनी लड़की की मर्जी को इस सम्बन्ध में सर्वोपरि मानते हैं। लड़की ने कह दिया कि मैं अब पुन: ब्याह करना नहीं चाहती तो वे मान जाते हैं। ससुराल पक्ष के परिवारों पर ही इस बारे में ज्यादा जवाबदारी होती है। उन्हें इस बारे में पहल करना चाहिए, कई घटनाएं समाज एवं अन्य स्थानों पर हुई हैं जिसमें श्वसुर ने अपनी बहु को बेटी बनाकर उनका विवाह किया है। यह बड़ी हिम्मत का लेकिन प्रशंसा भरा कदम कहा जा सकता है। परन्तु हमारे समाज में स्थिति उलट है। शासकीय नौकरी में रत एकमात्र कमाऊ बेटे के विवाह का दर्द उस सम य कुछ कम हो पाता है जब उसके स्थान पर उनकी बहू अनुकम्पा नियुक्ति पाकर बेटे का फर्ज निर्वाह करने लगती है। ऐसे परिवारों को यह सोचना पड़ेगा कि युवा उम्र तक तो ठीक है परन्तु बहु जब सेवानिवृत्त होकर घर में अकेली रह जाएगी तब क्या? बच्चे अपना घर बसा लेंगे, वे अपनी दुनिया में खो जाएगे, उस समय के बारे में सोचना चाहिए। विधवाओं के मामले में जहां पारिवारिक पहल अनिवार्य है, उन्हें समझाइश देकर पुनर्विवाह के लिए तैयार करना, वहीं विधुर विवाह हेतु समाज का दायित्व है कि वे ऐसे युवाओं को समझाइश देकर पुनर्विवाह हेतु तैयार करें। हमारे समाज में पूर्व में ऐसे पुनर्विवाह किए जा चुके हैं। यह जरूरी है कि परिवार एवं समाज पहलकर ऐसा कदम उठाए कि उस समय के लिए विधवा-विधुर को तैयार किया जाए कि जीवन के जिस पड़ाव पर पति-पत्नी को एक दूसरे की सबसे ज्यादा जरूरत रहती है। मेरी नजर में आज के लिए यह सबसे बड़ी समाजसेवा होगी तथा जो भी इस कार्य में प्रयत्यक्ष-अप्रत्यक्ष मदद करेगा, वह बड़े पुण्य का भागी होगा।

- दीपक शर्मा

चरणामृत

भारतीय संस्कृति में ईश्वर की आराधना विभिन्न रूपों द्वारा की जाती है। भारतवर्ष में प्रचलित विभिन्न धर्मों जैसे हिन्दू, जैन तथा बौद्ध धर्म में मूर्तिपूजा का एक विशिष्ट स्थान हैं। अनेक धार्मिक आयोजनों पर मूर्ति का अभिषेक कर प्रसाद के रूप में चरणामृत वितरित किया जाता है। चरणामृत का शाब्दिक अर्थ भगवान के चरणों से प्राप्त अमृतरूपी द्रव पदार्थ से है। यह पांच वस्तुओं का मिश्रण हैं जिसमें घृत (घी), शहद, गंगाजल, दही एवं तुलसी पत्र प्रमुख रूप से होते हैं। कभी-कभी दूध, शक्कर तथा मखाने को भी इसमें सम्मिलित किया जाता है। ईश्वर की भक्ति/आराधना में मूर्तिरूपी भगवान के चरणों का विशेष महत्व हैं। इसी कारण व्यक्ति, मूर्तिपूजा में चन्दन, मूर्ति के ललाट पर लगाता हैं परन्तु स्वयं के लिए मूर्ति के चरणों से गृहण करता है। भारतीय संस्कृति में ईश्वर या अपने ज्येष्ठ व्यक्तियों के चरणस्पर्श कर, उनके प्रति अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करना सुसंस्कारों का पर्याय माना गया है।

चरणों की महत्ता को प्रतिपादित करने हेतु आध्यात्मिक ग्रंथों में उल्लेखित कुछ उद्धरणों का उल्लेख करना समीचीन होगा।

भरत का अनुराग

भगवान श्रीराम, सीता तथा लक्ष्मण के वनवास जाने का समाचार जब अनुज भरत को ज्ञात हुआ तब वे अत्यंत ही दुखित, द्रवित एवं माता कैकई पर क्रोधित हो श्रीराम, सीता एवं लक्ष्मण को वापस अयोध्या लाने का निर्णय करते हैं। चित्रकूट पहुंच कर भरत, श्रीराम से मिलकर पिताश्री के स्वर्ग सिधार जाने का समाचार सुनाकर सभी को अपने साथ वापस अयोध्या चलने का आग्रह एवं अनुनय करते हैं। श्रीराम अश्रुपूरित नेत्रों से भरत के आग्रह को अस्वीकार कर उन्हें अयोध्यावासियों के व्यापक हित में राज्य का शासन संभालने का आदेश देते हैं तब विनयशीलता के पुरोधा भरत, श्रीराम को चरणस्पर्श कर उनकी चरणपादुका मांगते हैं तथा अपने इस निर्णय की घोषणा करते हैं कि जब तक आप सभी वापस अयोध्या नहीं आ जाते, तब तक वे स्वयं भी एक बनवासी का जीवन निर्वाह कर श्रीराम की चरणपादुका को सिंहासन पर प्रतिष्ठित कर अयोध्या की सुरक्षा का दायित्व निभाएंगे।

हनुमानजी की निष्ठा

रावण द्वारा सीता हरण पश्चात जब हनुमानजी अशोक वाटिका में विराजित माता जानकी के दर्शन तथा लंका दहन कर वापस श्रीराम के पास लौटकर माता जानकी के कुशलक्षेम का वर्णन करते-करते श्रीराम के चरणों में गिर जाते हैं। इस स्थिति को गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस के सुन्दरकाण्ड में वर्णन किया है कि-

बार-बार प्रभु चहहू उठाया। प्रेमांगन तेहि उठव न भावा।।
प्रभु करद पंकज कपि कें सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरी सा।।

प्रभु उनको (हनुमानजी) बार-बार उठाना चाहते हैं परन्तु प्रेम में डूबे हनुमानजी को चरणों से उठना सुहाता नहीं। प्रभु का कर कमल हनुमानजी के सिर पर है। उस स्थिति का स्मरण कर के शिवजी भी प्रेम मग्न हो गए।

अर्जुन का ज्ञान

कौरवों एवं पाण्डवों के मध्य जब कुरूक्षेत्र में महाभारत का युद्ध अवश्यभावी हो गया तब दुर्योधन तथा अर्जुन दोनों ही याचक बन, श्रीकृष्ण से सहायतार्थ द्वारका पहुंचे। संयोग की बात है कि अर्जुन तथा दुर्योधन का एक ही दिन थोड़े अन्तराल से श्रीकृष्ण के द्वार पहुंचना था। श्रीकृष्ण उस समय शयन कक्ष में आराम कर रहे थे। कक्ष में प्रवेश कर दुर्योधन श्रीकृष्ण के सिरहाने रखे एक ऊंचे आसन पर जा बैठा। चूंकि अर्जुन पीछे था अतः वह श्रीकृष्ण के चरणों के समीप हाथ जोड़े खड़ा रहा। श्रीकृष्ण की नींद खुली तो सामने अर्जुन को खड़े देखा तथा बाद में घूमकर आसन पर बैठे दुर्योधन को देखा तथा दोनों की कुशलक्षेम पूछकर द्वारका आने का कारण पूछा। दुर्योधन ने कहा कि जैसा कि आप जानते हैं, कौरवों एवं पाण्डवों के मध्य युद्ध होना है अतः मैं आपसे सहायता मांगने यहां आया हूं, चूंकि मैं पहले आपकी सेवा में पहुंचा हूं अतः आप पहले मेरी सहायता करें। यह सुन श्रीकृष्ण बोले- 'राजन! यह संभव है कि आप पहले आए हो परन्तु मेरी नजर तो चरणों की तरफ खड़े अर्जुन पर पहले पड़ी अतः पहला मांगने का अधिकार अर्जुन का है। मैं यह विश्वास दिलाता हूं कि कर्तव्य भाव से समान रूप से सहायता करूंगा। वैसे भी अर्जुन उम्र में तुमसे छोटा है, अतः छोटों का अधिकार पहले होता है। यह कहकर श्रीकृष्ण ने स्वयं

की प्रतिज्ञानुसार युद्ध में शस्त्र न उठाने की बात कहकर अपनी अजेय नारायणी सेना की विशेषताओं का उल्लेख किया। बिना किसी हिचकिचाहट के अर्जुन बोला- भगवान, आप शस्त्र उठावें या न उठावें, आप चाहे लड़ें या ना लड़ें, मैं तो आपको ही चाहता हूं। यह सुन दुर्योधन के प्रसन्नता की सीमा न रही एवं उसने तुरन्त नारायणी सेना मांग ली। महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी बन पाण्डवों की विजय के सूत्रधार बनें।

लक्ष्मण को शिक्षा

भगवान श्रीराम तथा महाबली लंकापति रावण के मध्य युद्ध में जब रावण वीरगति को प्राप्त हो अंतिम सांसें ले रहा था तब यह जानकर कि रावण की मृत्यु से उसका ज्ञान भी संसार से विदा न हो जाए। अतः श्रीराम ने अनुज लक्ष्मण को यह आदेश दिया कि वह रावण की मृत्यु के पूर्व उनसे ज्ञान/शिक्षा प्राप्त कर लेवें। तदनुसार लक्ष्मण ने रावण के सम्मुख जाकर सिर के पास खड़े हो, ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा व्यक्त की। यह देख रावण ने अपना मुख दूसरी ओर फेर लिया। उक्त दृश्य देख श्रीराम के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई, जिसे देख लक्ष्मण ने कारण जानना चाहा। भगवान श्रीराम ने लक्ष्मण को कहा कि यदि ज्ञान अथवा शिक्षा प्राप्त करना हो तो धनुष जमीन पर रख रावण के चरणों के समीप खड़े रहो। तभी शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। उक्त कथनानुसार लक्ष्मण, रावण के चरणों के पास खड़े हो, अपना धनुष पृथ्वी पर रख, हाथ जोड़कर रावण से ज्ञान प्राप्त करने की प्रार्थना की। अंततः रावण ने लक्ष्मण को कूटनीति एवं राजनीति संबंधी ज्ञान प्रदान किया।

संदेश

भगवान की मूर्ति के समक्ष भक्ति आराधना अथवा अभिलाषा में व्यक्ति याचक का ध्यान उनके चरणों में केन्द्रित होना चाहिए न कि उनके मुख पर। अभिवादन चार प्रकार से किया जा सकता है- पहला (श्रेष्ठतम)- ईश्वर या ज्येष्ठ व्यक्ति के चरणों में शीश रखकर। दूसरा (श्रेष्ठ)- दोनों हाथों से चरणों को छू कर। तीसरा (उत्तम) - दोनों हाथ जोड़कर शीश नवाकर तथा चौथा (सामान्य)- केवल नमस्कार कर।

- प्रो. राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
वी-40, चन्द्रनगर एम.आर.-9

सद्गृहस्थ का जीवन

ऋषि-मुनियों को आरण्यक भी जो सुख दिला न पाया।
युगऋषि ने वह सुख गृहस्थ में पाना हमें सिखाया।।
सद्गृहस्थ में प्यार और सहकार जनम लेते हैं,
दो सहचर जीवन-नैया को मिल-जुलकर खेते हैं,
वहां न होता कर्त्तव्यों का किसी समय बँटवारा,
वृक्ष-बल्लरी से वे दोनों बनते सबल सहारा,
उन पर होती परमेश्वर की सदा सुमंगल छाया।
युगऋषि ने वह सुख गृहस्थ में पाना हमें सिखाया।
उनको विचलित कभी न करतीं जीवन में विपदाएं,
हाथ थामकर सह लेते हैं वे विपरीत हवाएं,
वहां त्याग से आत्मतृप्ति की विमल भावना भरती,
दया, क्षमा, करुणा, ममता ही सदा दृष्टि से झरती,
उन्हें नहीं लगता वसुधा पर कोई कहीं पराया।
युगऋषि ने वह सुख गृहस्थ में पाना हमें सिखाया।
होती है पूरे समाज की घर-परिवार इकाई,
कला सफल जीवन की इसमें जाती सहज सिखाई,
है सौभाग्य, जिन्होंने पाया सद्गृहस्थ का जीवन,
संयम, सेवा, सहिष्णुता का मिलता जहां प्रशिक्षण,
जहां संत-ब्राह्मणवत् जीवन जाता है अपनाया।
युगऋषि ने वह सुख गृहस्थ में पाना हमें सिखाया।
जहां शांति घर में हो, बाहर वही शांति ला पाते,
दृढ़ रिश्ते ही इस समाज में अपनापन फैलाते,
ऐसी कोशिश करें कि हम भी सद्गृहस्थ बन जाएं,
उच्चादर्शों से प्रेरित हो निज परिवार बनाएं,
फिर परिवार-परिधि में होगा सारा जगत समाया।
युगऋषि ने वह सुख गृहस्थ में पाना हमें सिखाया।

- गायत्री मेहता,
इन्दौर 9407138599

सीखना है तो यह सीखो..

बोल सको मीठा बोलो, कटु बोलना मत सीखो।
बता सको तो राह बताओ, पथ भटकाना मत सीखो।।
जला सको तो दीप जलाओ, दिल जलाना मत सीखो।
कमा सको तो पुण्य कमाओ, पाप कमाना मत सीखो।।
लगा सको तो बाग लगाओ, आग लगाना मत सीखो।
छोड़ सको तो पाप छोड़ो, चरित्र छोड़ना मत सीखो।।
पा सको तो प्यार पाओ, तिरस्कार पाना मत सीखो।
रख सको तो विद्या रखो, बुराई को रखना मत सीखो।।
पोंछ सको तो आंसू पोंछो, दिल को दुखाना मत सीखो।
हंसा सको तो सबको हंसाओ, किसी पे हंसना मत सीखो।।

- जे.पी. नागर
बनेठा टोंक (राज.)

तारीफ करना साहस का काम

किसी की बुराई करना, बुरा बताना और निंदा करना जितना अधिक सहज, सरल और आनंददायी है उससे कई गुना कठिन है किसी की तारीफ करना। तारीफ के मामले में दो प्रकार के व्यवहार माने जाते हैं। कुछ लोग हमेशा ही सामने वाले की तारीफ कर दिया करते हैं, चाहे वह योग्य हो या नहीं। इन लोगों के जीवन का एकसूत्री एजेण्डा यही होता है कि जो सामने मिलता है, उसकी जी भर कर तारीफ करना। ऐसे लोगों को आज के मनुष्य की भूख-प्यास और सम-सामयिक व्यवहार मनोविज्ञान का अच्छी तरह पता होता है कि आजकल हर आदमी तारीफ से खुश होता है, भले ही यह तारीफ कितनी ही झूठी क्यों न हो।

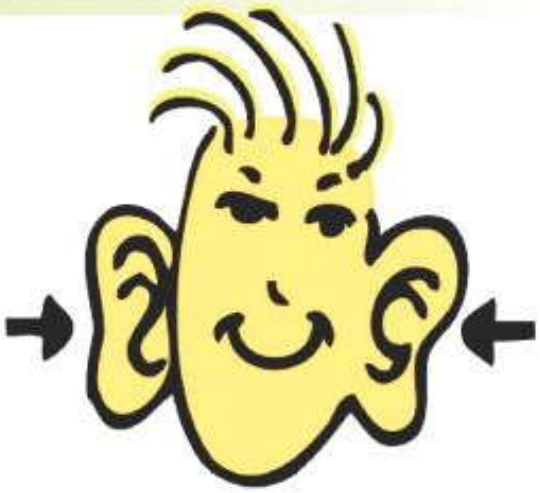

हर आदमी अपनी प्रशंसा सुनने और करवाने को उतावला बना रहता है। आदमी की फितरत में है कि वह कोई काम करे या न करे, उसकी पावन मौजूदगी की चर्चा तथा उसकी भागीदारी का मिथ्या गान सर्वत्र होना ही चाहिए।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हर मंच और अवसर पर भले ही स्वयं कुछ भी न करें, लेकिन उन्हें यह हमेशा बना रहता है कि मंच से उनके बारे में अच्छी-अच्छी और लुभावनी बातें कही जाएं। उनका जिक्र बार-बार हो, उनकी भागीदारी हो न हो, उनकी भूमिका को सराहा जाए। मंच संचालकों का ऐसे बहुत सारे लोगों से आए दिन पाला पड़ता रहता है, जो अपना नाम पुकारने के लिए अपने प्रशस्तिगान के लिए स्लिपें भेजते रहते हैं। यहां तक कि ढेरों सामाजिक, धार्मिक, सरकारी, गैर-सरकारी, राष्ट्रीय दिवसों, पर्वों आदि आयोजनों में भले ये कुछ न करें, मगर उनके नामों का गुणगान करना और करवाना आयोजकों और संचालकों की मजबूरियों में सर्वोपरि है जो हर बार सामने आ ही जाती है।

यह तो बात रही मंचों और आयोजनों की। इसी प्रकार आदमी अपने व्यवहार में भी इतना बहुरुपिया हो गया है कि वह तारीफ के मामले में अपने अलग ही समीकरण अपनाता रहता है।

कुछ लोग हर सामने वाले की उसके सामने ही तारीफ तो भरपूर करते रहते हैं, मगर जब कहीं मौका मिलता है, पीठ पीछे निंदा करने से भी नहीं चूकते। इन लोगों के लिए अपने स्वार्थ ही प्रभावी होते हैं, शेष सारा गुण एवं अवगुण का पैमाना इनके लिए नाकारा ही रहता है।

इन लोगों द्वारा की गई किसी भी प्रकार की तारीफ का कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि सभी लोग इनके लोभी व स्वार्थी स्वभाव से वाकिफ होते हैं और उन्हें पता होता है कि इन लोगों द्वारा जो कुछ कहा जा रहा है वह सिर्फ मिथ्या ही है। कई सारे लोग किसी भी अच्छे व्यक्तित्व से अच्छी तरह वाकिफ होते हैं, मगर उनकी सार्वजनिक तौर पर प्रशंसा करने से कतराते हैं और वह भी इसलिए कि कहीं सामने वालों को उनसे अधिक लाभ या सम्मान नहीं मिल जाए।

बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो सत्य और यथार्थ को स्वीकारते हैं और सामने वालों का मूल्यांकन गुणों के आधार पर करते हैं और ऐसे लोग किसी भी श्रेष्ठ व्यक्तित्व की प्रशंसा करने में कहीं पीछे नहीं रहते। जहां कहीं बड़े लोगों और मंचों के बीच जाने का मौका मिलता है, ये लोग गुणीजनों के यथार्थ को पूरे कौशल के साथ अभिव्यक्त करते हैं। यह प्रयास करते हैं कि सामने वाले लोग गुणियों के व्यक्तित्व और खूबियों से परिचित होकर उनके बारे में अच्छी धारणाएं बनाएं तथा दोनों पक्षों को आवश्यकता और अवसरों के समय पारस्परिक लाभ हो अथवा समाज या देश के हित में इनकी सेवाओं का यथोचित उपयोग लिया जा सके।

इस लिहाज से देखा जाए तो बहुत कम संख्या में ही ऐसे लोग मिलेंगे जो बिना किसी स्वार्थ के उपयुक्त और पात्रजनों की तारीफ करे। वह भी ऐसे लोगों के सामने जो प्रभावशाली और निर्णायक भूमिका में होते हैं।

योग्यजनों की उपयुक्त अवसरों पर तारीफ और उनके गुणों को प्रकट करना हर किसी के बस में नहीं होता। इसके लिए दिव्यत्व, दैवत्व और उदारता चाहिए। बहुत कम लोग मिलते हैं जो सही और कर्मठ व्यक्तियों का परिचय भी कराते हैं। उनकी खूबियों को भी अच्छी तरह जताते हैं। यह प्रशंसा नहीं होती बल्कि यथार्थ का सहज-स्वभाविक उद्घाटन ही है।

अपने भीतर ऐसी विलक्षणता पैदा करना मानवीय आदर्श का ही प्रतीक है कि जिसमें इंसान गुणों और हुनर के मानदण्डों पर श्रेष्ठजनों के बारे में सही-सही कहे और इस प्रकार कहे कि इसमें न कोई झूठ हो, न किसी भी तरह की मिलावट। जो बुरा है उसे हतोत्साहित करें, जो अच्छे हैं उनके बारे में औरों को बताएं, उन्हें हरसंभव प्रोत्साहन, संबल और स्नेह प्रदान करें और आगे बढ़ाएं।

हममें से काफी लोग एक-दूसरे के मौलिक

गुण धर्म और विलक्षणताओं से परिचित नहीं हुआ करते। यही कारण है कि झूठे, बेईमान और मक्कान लोग झूठी प्रशंसा, चापलूसी और दिखावों का दिग्दर्शन कराते हुए किसी न किसी के कंधे पर सवार होकर या कि ले-दे कर अथवा अपनी ही किस्म के नालायकों का आशीर्वाद, सानिध्य और मार्गदर्शन पाकर आगे बढ़ चलते हैं। वहीं योग्यजन पिछड़ कर पीछे रह जाते हैं।

जो अच्छा है उसे न सिर्फ हृदय से स्वीकारें, बल्कि उनके लिए हरसंभव मददगार भी बनें और जमाने को भी उनके बारे में अच्छी तरह बताएं। इसी प्रकार जो लोग बुरे हैं उनके बारें में भी बिना किसी हिचक के अपना स्पष्ट मंतव्य दूसरों के सामने रखें, आज के युग में इतना ही कर लेना बहुत बड़ा पुण्य भी है और समाज तथा देश की सेवा भी। दोहरा चरित्र छोड़ देना अपने आप में राष्ट्रीय और वैश्विक चरित्र बन जाता है।

संकलन- पवन शर्मा
9826095995

अमूल्य है आदर्श

बात बहुत पुरानी है। एक राज्य था उस राज्य में एक किसान रहता था। वह किसान बहुत ही मेहनती, ईमानदारी और अपने आदर्शों का पक्का था। उसके मन में तनिक भी लोभ व छल कपट नहीं था। वह अपनी मेहनत की कमाई में ही विश्वास रखता था।

एक दिन की बात है, वह किसान अपने खेतों में हल चला रहा था। एकाएक उसके हल की नोंक किसी कठोर चीज से टकराई उसने झुककर मिट्टी हटाई तो उसे जमीन में गड़ा एक कलश सा दिखलाई पड़ा। किसान ने वह कलश बाहर निकाल लिया। कलश को खोलने पर उसे उसमें सोने की गिन्नियां दिखाई दी।

उस गरीब किसान के लिए वह धन किसी खजाने से कम नहीं था। किन्तु उस ईमानदार किसान ने उस कलश का मुंह बंद कर दिया। उसने धन को छुआ तक नहीं और उसे लेकर सीधे राजा के दरबार में जा पहुंचा।

राजा के सामने पहुंचकर किसान ने सारी बात साफ-साफ राजा को बता दी और सोने की गिन्नियों से भरा वह कलश भी राजा को सौंप दिया।

उसकी ईमानदारी देखकर राजा भौचक्का रह गया। मन ही मन वह बहुत प्रसन्न हुआ कि ऐसे ईमानदार लोग भी उसके राज्य में है। राजा ने उस किसान से पूछा- क्या तुम जानते हो कि इनकी कीमत कितनी होगी?

जी हां, महाराज, इन सोने की गिन्नियों की कीमत अवश्य ही हजारों रुपए होगी। किसान ने कहा कि राजा ने प्रश्न किया, जब तुम इनकी कीमत जानते थे तो तुमने इन्हें अपने पास ही क्यों नहीं रख लिया।

किसान ने तुरंत जवाब दिया 'महाराज मेरे आदर्शों की कीमत इन सोने की गिन्नियों से कही अधिक है। मेरे आदर्श दुनिया की किसी भी वस्तु से मूल्यवान है। उसकी बात सुनकर राजा बहुत प्रभावित हुआ तथा उसे सौ गिन्नियां इनाम में देने की बात की तो किसान ने इनाम की गिन्नियां लेने से विनय पूर्वक इंकार करते हुए कहा- राजन, जो इनाम प्यार

के शब्द धन्यवाद में है, वह लाखों रुपयों से भी सर्वोपरि है।

यह कहकर किसान चला गया। राजा प्रशंसा भरी नजरों से उसे देखता रहा। शिक्षा- बच्चों हमें इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि हमें किसी भी कीमत पर आदर्श नहीं बदलना चाहिए।

- इंदू मेहता
मकोडिया आम, उज्जैन

अपनी प्राणशक्ति को इतना सूक्ष्म करो,
इतना शक्तिशाली बनाओ कि...
आप संसार के संघर्षों में अडिग रह सको।

आईये पंचांग देखना सीखें

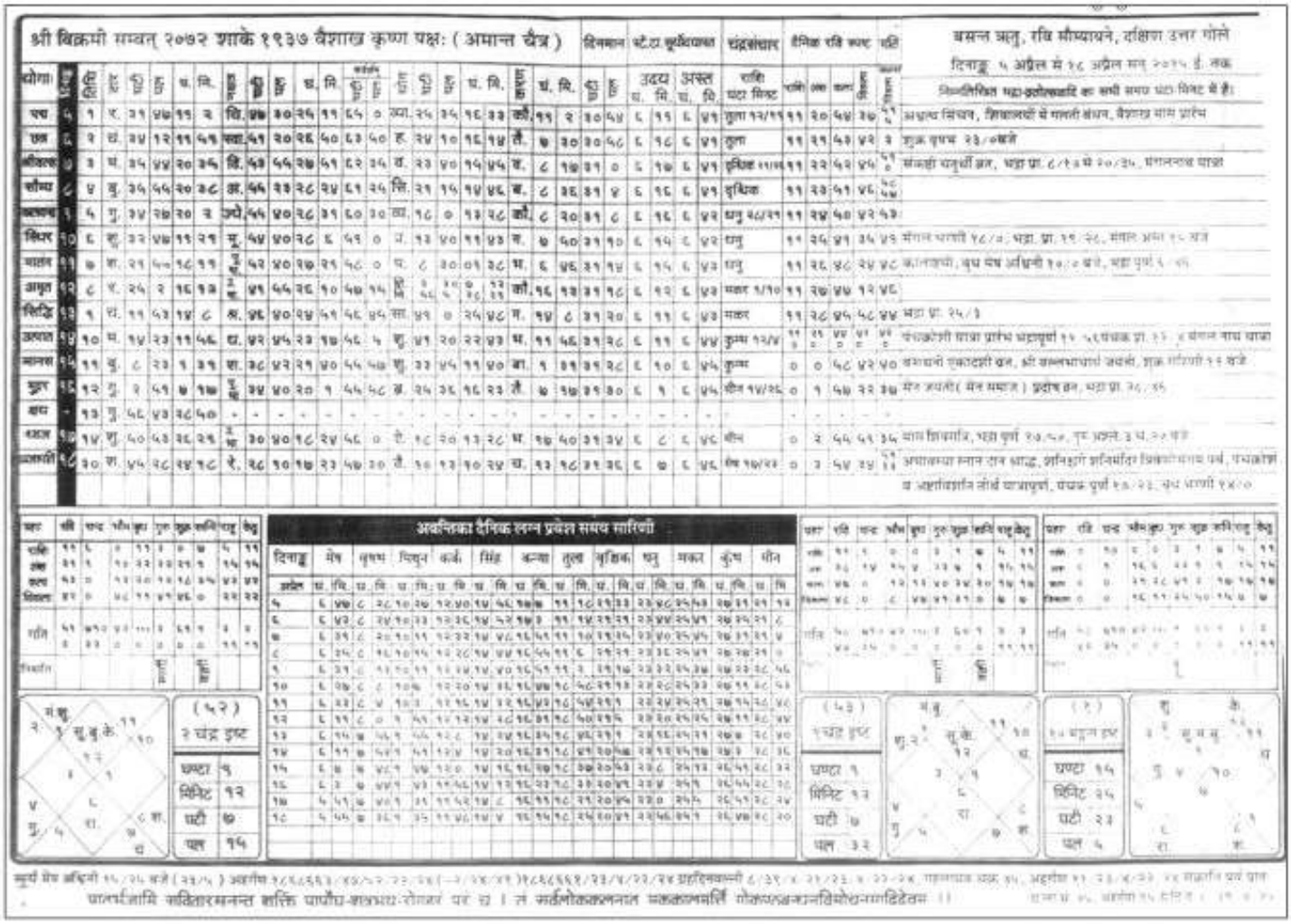

'सात वार और आठ त्यौहार' की उक्ति भारत में प्रसिद्ध है क्योंकि भारत तीज-त्यौहारों का देश कहलाता है। आधुनिक पीढ़ी तो तिथि-नक्षत्र और भारतीय पर्वो के प्रति इतनी अनजान है कि देवनागरी हिन्दी के अंक और अक्षर भी उन्हें सरलता से समझ में नहीं आते। सामाजिक सोच ने सचमुच हमें 'काले अंग्रेजों' की पीढ़ी में बदलना प्रारम्भ कर दिया हैं। अस्तु। पंचांग भारतीय जनजीवन का मार्गदर्शक लेखाजोखा माना जाता है। विभिन्न पर्व, त्यौहार, तिथियों आदि का निर्णय पंचाग देखकर किया जा सकता है। कई बार छोटी-छोटी जानकारी और निर्णय करने का आत्मविश्वास हममें तब आ सकता है जब हम खुद पंचांग देखना सीख लें। तो कोशिश करते हैं पंचाग को देखने-पढ़ने और समझने की।

'पंचानां अंगानां समाहार' इति पंचाग: - 1 स्पष्ट है कि पंचांग के मुख्य पांच अंग है-

1.तिथि, 2. वार, 3. नक्षत्र 4. योग 5. करण

इनमें से रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार, और शनिवार - इन सातो नामों से हम भली-भॉति परिचित हैं और किसी भी कैलेण्डर मे हम इन्हें पहचान ल`ते हैं। प्रारम्भिक परिचय के लिये श्री कुलुका विक्रमादित्य पंचांग के चैत्रमास की प्रविष्टियों का पृष्ठ इसी अंक में दिया जा रहा है। कृपया उक्त पृष्ठ खोलकर एक-एक प्रविष्टि को समझने की कोशिश कीजिए।

तालिका की सबसे ऊपर की प्रविष्टियों को देखते जाइये।

1.श्री विक्रमसंवत् का वर्ष मालवा में राजा विक्रमादित्य द्वारा 2062 वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया गया माना जाता है। शाके 1937-यह शकसंवत् 1937 वर्ष पूर्व शालिवाहन शकसंवत् के नाम से प्रारम्भ हुआ। शासकीय कार्यो के लिये सामान्यत: शकसंवत् प्रयुक्त होता है।

चैत्र शुक्ल पक्ष - विक्रमीसंवत् और शकसंवत् के नववर्ष का प्रारम्भ इसी चैत्र. मास से होता है। जैसे-जैसे पंचांग के अगले पृष्ठ हम पलटते जाएंगे क्रमशः वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन आदि इन पृष्ठों पर लिखे मिलते जाएंगे। सामान्यतः शुक्लपक्ष के बाद इन्हीं मासों के कृष्ण पक्ष की प्रविष्टियां छापी जाती हैं। मालवा क्षेत्र में नये मास का प्रारम्भ पूर्णिमा के अगले दिन यानी कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से माना जाता है। जो पृष्ठ आपके हाथ में है उस पर अंकित चैत्रशुक्ल के पिछले पन्द्रह दिन चैत्र कृष्ण पक्ष के थे। इसलिये अगले पृष्ठ पर अंकित वैशाख कृष्णपक्ष के पास कोष्टक में (अमान्त चैत्र) लिखा गया है। सामान्यतः गुजरात, महाराष्ट्र में अमान्त मास प्रचलित हैं।

दिनमान - सूर्योदय से सूर्यास्त तक की अवधि दिनमान कहलाती है। पूरा अहोरात्र (दिन रात) 60 घटी का माना जाता है। 60 घटी में से दिनमान के घटीपल घटाने पर रात्रिमान ज्ञान किया जा सकता है। आधुनिक गणना के अनुसार अहोरात्र का मान चौबीस घण्टे माना गया है। एक घटी का मान 24 मिनिट होता है।

स्टै.टा.सूर्योदयास्त - सूर्योदय और सूर्यास्त का समय नीचे की तालिका मे घण्टा-मिनिट मे दिया गया है। आपकी दिनचर्या का घड़ी का स्टैण्डर्ड टाइम यहां बतलाया गया।

चन्द्रसंचार -राशि-घण्टा-मिनिट-देखकर चन्द्र किस राशि में है और कितने बजे (स्टैण्डर्ड टाइम से) दूसरी राशि में चला जाएगा-यह जाना जा सकता है।

दैनिक रवि स्पष्ट - (राशि-अंश-कला-विकला) सूर्या राशि में जितने अंश-कला-विकला पर था यह ज्ञात होता है।

गति - सूर्य की गति सामान्यतः कला विकला में लिखी जाती है। प्रथम प्रविष्टि में कला विकला लिखे होते है, अगली प्रविष्टियों में विकला का परिवर्तन ही अंकित किया जाता है। आगे अयन, गोल तथा दि. 21 मार्च से 4 अप्रैल 2015 स्पष्ट है। निश्चित रूप से आपको इनमें से कुछ जानकारी या तो पहले से ज्ञात होगी या निरर्थक लग रही होगी। क्रमशः इनकी उपयोगिता ज्ञात होती जाएगी।

2. अब थोडा नीचे बढ़ते है -

योगा - इस शब्द के नीचे क्रमशः कुछ नाम लिखे गये है। इनकी चर्चा आगे करेंगे। दिनांक - इस काली पट्टी में सफेद अक्षरों में जो अंक लिखे गये है उनका सम्बन्ध इस्वी सन् 2015 के महीनों की तारीखों से है। इस पृष्ठ में 21 मार्च से 4 अप्रैल तक के अंक स्पष्टतः लिखे गये है।

तिथि -दिनांक के पड़ोस में सटा तिथि का कॉलम हमारे लिये सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यहां आपको क्रमशः 1 से 15 के अंक शुक्लपक्ष के पृष्ठ पर लिखे मिलेगें और कृष्णपक्ष के पृष्ठ पर 1 से 14 के बाद लिखा हुआ अन्तिम अंक 30 अमावस्या का संकेत देता है। शुक्लपक्ष का 15 अंक पूर्णिमा का सूचक है। कभी-कभी आपको एक तिथि का अंक दो बार भी पढ़ने को मिल सकता है। इसी प्रकार एकाध बार कोई तिथि का अंक गायब भी हो सकता है। कहीं-कहीं एक वार का उल्लेख दो बाद भी हो सकता है। यह मुद्रण त्रुटि नहीं है। आगे हम इसी बात को समझ रहे हैं। तो तिथि है आपके पंचांग का पहला अंग।

वार -तिथि के पड़ोस में लिखे वार के नीचे आपको सप्ताह के प्रत्येक वार का पहला अक्षर छपा दिख रहा है। वार पंचांग का दूसरा अंग है। अब इन तीनों कॉलम दिनांक-तिथि-वार पर एक साथ निगाहें डालते हुए ऊपर से नीचे देखिये। दि. 24 के बाद का कॉलम खाली है। परन्तु तिथि में 5 अंकित है और मंगलवार दो बार लिखा गया है। योगा-कॉलम में क्षय लिखा है यानी यह क्षय तिथि है। इसी प्रकार दिनांक 28 शनिवार और 29 रविवार दोनों दिन नवमी तिथि है। अवधि की चर्चा आगे आ रही है।

घटीपल-घंटा-मिनिट - इन चारों कॉलमों का सम्बन्ध तिथि की अवधि से है। प्रत्येक तिथि के सामने उसकी अवधि के घटी-पल (सूर्योदय पश्चात) के लिखे गये हैं और घण्टा-मिनिट यह बतलाते हैं कि संबंधित तिथि कितने बजे तक रहेगी। अर्थात् उसके बाद अगली तिथि शुरू हो जाएगी। उदाहणार्थ 21 मार्च 2015 शनिवार के दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की अवधि 16 घटी 31 पल यानी 13 बजकर 10 मिनिट तक प्रतिपदा रहेगी उसके बाद चैत्रशुक्ल द्वितीया का प्रारम्भ हो जाएगा। 22 मार्च 2015 रविवार को द्वितीया 11 घटी 23 पल यानी 11 बजकर 6 मिनिट तक रहेगी फिर तृतीया शुरू हो जाएगी।

नक्षत्र-घटीपल-घंटा-मिनिट-

अब नक्षत्र की स्थिति देखने के लिये हमें 27 नक्षत्रों के नाम और उनका प्रथम अक्षर समझना आना चाहिए। 27 नक्षत्रों के नाम हैं- 1.'अश्विनी 2. भरणी 3. कृतिका 4. रोहिणी 5. मृगशिरा (मृगशीर्ष), 6. आर्द्रा 7. पुनर्वसु 8. पुष्य 9. अश्लेषा 10. मघा 11. पूर्वाफाल्गुनी 12. उत्तराफाल्गुनी 13. हस्त 14. चित्रा 15. स्वाती 16. विशाखा, 17. अनुराधा 18. ज्येष्ठा 19. मूल 20.. पूर्वाषाढ़ा 21. उत्तराषाढा 22. श्रवण, 23. धनिष्ठा, 24. शतभिषा 25. पूर्वाभाद्रपद 26. उत्तराभाद्रपद 27. रेवती

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा में उत्तरा भाद्रपद के लिये उ.भा.छपा है और उसकी अवधि 9 घटी 50 पल यानी 10 बजकर 30 मिनिट प्रातः तक की है। उसके बाद रेवती नक्षत्र प्रारम्भ हो जाता है। सामान्य दिनचर्या के लिये सबसे पहले हमें तिथि वार और नक्षत्र की अवधि ज्ञात कर लेना चाहिए। अधिकांश निर्णय इस आधार पर किये जा सकते हैं। शेष बचे योग-करण आदि का प्रयोग विशिष्ट मूहूर्तो के निर्णय में गणितीय आकलन द्वारा किया जाता है। विशिष्ट पर्व-संस्कार आदि के लिये सबसे अन्त के कॉलम में लिखी प्रविष्टि सहायक हो सकती है। विश्वास है आपको पंचाग की इन महत्वपूर्ण प्रविष्टियों को पहचानने की तकनीक समझ में आ गई होगी।

प्रस्तुति -श्रीमती शशिकला रावल, डी-11 आश्रय ऋषिनगर, उज्जैन (म.प्र.)

ऐसे थे तुलसी के श्रीराम

भये प्रकट कृपाला, दीन दयाला। इस पंक्ति से मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का चरित्र प्रकट होता है। श्रीराम पैदा नहीं हुए अपितु प्रकट अथवा अवतरित हुए थे तथा उनका अवतार दीनों पर दया करने के लिए ही हुआ है। सर्वप्रथम उन्होंने नारी (अहिल्या) उद्धार किया जिसे स्वाभाविक रूप से असहाय माना जाता है। पश्चात केवट पर कृपा कर उसके सात पुरखों तक को तार दिया। केवट के बाद जटायु का उद्धार तथा पश्चात शबरी को दर्शन देकर कृपा की। किशकिंधाकाण्ड में सुग्रीव से मित्रता कर उसे किश किंधा का राज्य सौंप दिया।

अंत में रावण का वध कर रावण द्वारा प्रताड़ित अनुज विभीषण को लंका का राज्य सोंप कर श्रीराम 14 वर्ष वनवास अवधिपूर्ण कर वापस अयोध्या लौट आए। इन उदाहरणों से श्रीराम का दीनदयाल होना स्वयं सिद्ध है। श्रीराम केवल दयालु ही नहीं थे अपितु उन्होंने ब्राह्मण, गाय देवता एवं संतादि तथा धर्म की रक्षार्थ अवतार लिया था।

'विप्र, धेनु सुर संतहित, लीज मनुज अवतार'

श्रीराम का रूप-सौंदर्य भी अद्भुत है। नीले कमल के समान श्याम और कोमल जिनके अंग है। सुन्दर विशाल नेत्र, रक्त कमल, समान मुख, हाथ और चरण है। गले में बन माला, हाथों में अमोघ बाण और सुन्दर धनुष सुशोभित हैं। ऐसे धीर, वीर-गम्भीर मर्यादा पुरुषोत्तम का 'शांताकारम' स्वरूप चकोरवत टकटकी लगाए देखते मन नहीं अघाता। रामचरित मानस में बाबा तुलसी ने श्रीराम के बाल स्वरूप को छोड़कर किसी अन्य रूप सौन्दर्य को अपना इष्ट देव नहीं माना। धनुष भंग के अवसर पर मंच पर श्रीराम की शोभा अलौकिक है। मंच रूपी उदयाचल पर्वत पर रघुनाथजी रूपी बालसूर्य उदय होते हुए सूर्य के समान अति सुन्दर लग रहे हैं। जिन्हें देखकर संत रूपी कमल खिल उठे तथा नैत्र रूपी भ्रमर हर्षित हो गये।

उदित उदय गिरिमंच पर, रघुवर बाल पतंग।
विकसे संत सरोज सन, हरषे लोचन भृंग।।

तुलसी ने श्रीराम के उक्त सौंदर्य रूप को अपना इष्ट देव नहीं माना। इसी प्रकार अरण्यकाण्ड में हड्डियों के ढेर के बारे में जब ऋषियों ने श्रीराम को अवगत कराया कि यह ढेर तो उन ऋषि-मुनियों का है जिन्हें मार कर राक्षसों ने खा लिया है। इतना सुनकर श्रीराम के नेत्र आंसुओं से भर गए और उन्होंने उत्साह से वहीं प्रतीज्ञा की। निसिरहीन कर हुं ताहि, भुज उठाय पन कीन्ह। तुलसी ने श्रीराम के इस वीर रस के स्वरूप को भी अपना इष्ट नहीं स्वीकारा है।

आगे चलकर सीता हरण पर श्रीराम के साधारण मनुष्य की भांति पत्नी विरह के विलाप के करुण स्वरूप पर भी तुलसी नहीं पिघले और श्रीराम और श्रीराम के इस करुणा मय स्वरूप को भी अपना इष्ट देव नहीं माना। यथा हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी। तुम देखी सीता मृग नयनी।। अथवा घायल गिद्धराज जटायु श्रीराम के अंकासीन है। जटायु की आदि करुण दशा देखकर उनके नेत्र जल भर आये। करुणा का यह हृदय विदारक दृश्य भी तुलसी को आकृष्ट न कर सका। सुन्दरकाण्ड में तुलसी ने श्रीराम के समुद्र पर क्रोध करने के रौद्र रूप को भी अपना इष्ट स्वीकार नहीं किया।

विनय न मानत जलधिजड़, गये तीन दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति।

रावण वध पश्चात लंका की युद्ध भूमि में श्रीराम अपने अनुज अंगद, हनुमानादि के साथ वृक्ष की छांह में शिला पर बैठे हैं तो वानर डाल पर, जिनकी पूंछ लटक कर श्रीराम के मस्तक पर हिलती-डुलती ऐसी लहरा रही है मानो वानर अनजाने में श्रीराम पर चंवर डुला रहे हो। इस दृश्य का तुलसी ने बालकाण्ड में अत्यंत मनोहरी वर्णन किया है।

प्रभु तरु तर कपि डार पर, ते किये आपु समान।
तुलसी कहुं, न राम से, साहिब तुलसीदास।।

यहां श्रीराम की सेवकों के प्रति कृतज्ञता प्रगट होती है कि अखण्ड ब्रह्माण्ड के नायक भगवान अपने सेवकों के प्रति कितने उदार है।

युद्धोपरांत इसी समय देवताओं ने पुष्पवर्षा की तथा राम के उस वीरोतोजक स्वरूप की

स्तुति की, लेकिन तुलसी ने श्रीराम के इस स्वरूप को भी अपना इष्ट नहीं माना। देखिये **सिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच, अति मनोहर राजही।**

जनु नील, गिरि पूर तड़ित पटल, समेत उड्डुगन भ्रात्रु ही।।

भुज दंड सर को दंड फेरत, रधिर कणतन अति बने।

जनु राय कुनी तमाल पर बैठी, विपुल सुख आपने।।

राज्याभिषेक के समय जानकी सहित स्नान उपरांत आभूषणादि धारण कर जब वशिष्ठ जी ने राज तिलक कर आशीर्वाद दिया तब सिंहासन पर विराजित श्रीराम-सीता की युगल जोड़ी के सौन्दर्य का जो जीवंत चित्रण किया है वह भी अलौकिक है। लेकिन तुलसी ने इस स्वरूप को अपना इष्टदेव नहीं माना। बानगी देखिये-

श्री सहित दिनकर बंस भूषण, काम छबि बहु सो हई।

नव अंबुधर वर गात अंबर, पीत सुर मन मोहई।।

मुकुटांगदादि विचित्र भूषण, अंग-अंगन्हि प्रति सजे।

अं भोत्र नयन विसाल उर भुज, धन्य नर निरखतिजे।।

अंत में कविवर तुलसीदास ने उत्तरकाण्ड में काग भुशुण्डजी ने वरुण को मानस कथा सुनाते हुए उनके माध्यम से राम के बाल स्वरूप को अपना इष्टदेव स्वीकार किया है। इष्टदेव मम बालक रामा। शोभा वपुस कोटि सतकामा।। तुलसी ने श्रीराम के बालस्वरूप को ही अपना इष्ट इसलिए अपनाया कि बालक को सहज, सरल एवं साधारण भाव से समझा-बुझाकर प्रसन्न किया जा सकता है, जबकि युवा स्वरूप को प्रसन्न करना दुर्लभ होता है। उसके लिए विशेष बुद्धिचातुर्य की आवश्यकता होती है। तुलसी अपने को कोई बड़ा बुद्धिमान या चतुर कवि नहीं मानते। **कवि न होहु नहि चतुर कहाऊँ। मति अनुरूप रामगुण गाऊँ।।** अथवा- जो बालक कह तोतरिबाता। सुनहि मुदित मन पितु और माता।। राम राज्य प्रजातांत्रिक प्रणाली का ज्वलंत उदाहरण है। उसमें श्रीराम की जनभावना का सम्मान स्पष्ट दिखाई देता है। श्रीराम प्रजा से कहते हैं-

जो अनीति कछु भाषो भाई। तो मोहिबूरजहु भय विसराई।।

इस प्रकार राम को चरित्र आज के परिप्रेक्ष्य में अनुकरणीय एवं हृदयांगम करने योग्य है।

-हरिनारायण नागर
'पत्रकार' देवास

जीवन अमृत

श्रीमद् भगवद्गीता के जीवनोपयोगी विश्वजनीन निर्देश

केवल-प्रेम ही चाहते हैं परमात्मा

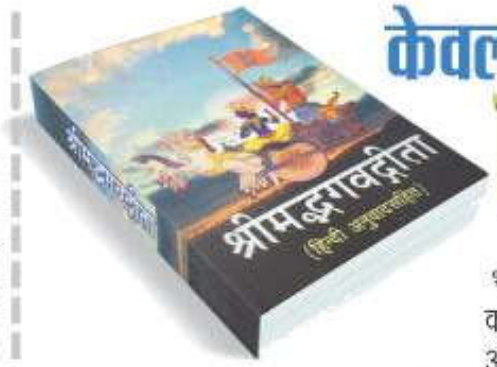

ईश्वर के विषय में बहुत-सी धारणायें हैं। कुछ धारणायें आपको ऐसी स्थिति में रख देती हैं, जिसमें आपको आपसे बार-बार दूर होते हुए भगवान के पीछे दौड़ना पड़ता है। वह भगवान रेगिस्तान में मृगमरीचिका के समान दृष्टिगोचर होता है। वह सदैव विजेता के रूप में आपके सामने आता है तथा आप स्वयं को निरन्तर भ्रमित अवस्था में पाते हैं।

आप इस उदासीन तथा निरन्तर पीछे हटने वाले भगवान के पचड़े में न पड़ें। उसे अपने रास्ते जाने दें। आप तो प्रेमाधीर, प्रेममय भगवान के विषय में विचार करें। आप उस भगवान के पीछे जाएं, जो आपके जाने पर आपके कदमों के निशानों पर निगाह रखता है तथा जो आपके वापस आने पर आपकी वापसी का उत्सव मनाता है। आप मनुष्य की ओर स्वयं चलकर आने वाले इस प्रेममय भगवान को याद कीजिए। यह मानवोन्मुख भगवान चाहता है कि आप इस तथ्य को भली-भांति जान लें कि भगवान से प्रेम करने से आप अविनाशी हो सकते हैं। आपकी सुरक्षा के प्रति प्रायः अधीर होकर, श्रीकृष्ण आग्रह करते हैं :

अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।

तू इस क्षणभंगुर और सुखरहित जगत में निरन्तर मेरा ही भजन कर (9-33) इसके अतिरिक्त :

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।

केवल मुझ पर ही अपना ध्यान केन्द्रित कर, मेरी ही भक्ति कर, अपने आपको मुझे ही अर्पित कर, मुझे ही नमस्कार कर। (9-34)

कितनी हृदय विदारक तथा पीड़ायुक्त प्रेमविह्वलता है परमात्मा के इस कथन में, जिसमें वे आपसे प्रेम की याचना करते हैं। भगवान की इस विह्वलता को, इस वेदना को, इस निरीहता को, कोई कब समझ पाता है।

- डॉ. तेज प्रकाश व्यास
'प्रभुकुंज'
135, सिल्वर हिल, धार
9425491336

प्रसन्नता से अधिक कुछ भी स्वास्थ्यवर्द्धक नहीं है।

क्रिकेट में बनाएं कॅरियर

दो-तीन दशक पूर्व परिवार के बुजुर्ग छोटे बच्चों को कहावत के रूप में सीख देते थे कि पढोगे लिखोगे तो होंगे नवाब और खेलोगे कूदोगे तो होगे खराब। वर्तमान समय मे उक्त कहावत झुठ परिलक्षीत होती है। वर्तमान समय में पढने लिखने से जितना अच्छा भविष्य नही बनता उतना खेल कूद से बन रहा है। आज संम्पूर्ण देश देशवासियों की खेल कूद के प्रति रूची बढ़ रही है। या यह कहने में भी अतिशियोक्ति नहीं होगी की खेल एक नशे की तरह पैर पसारने लगा है। लोगों की खेल कूद के प्रति रुचि होना स्वस्थ देश की निशानी है। खेल कूद में भी क्रिकेट खेल भारत में एक फैशन के रूप में लिया जा रहा है। आज के समय के अधिकांश बच्चे एवं युवा की इस खेल के प्रति दीवानगी देखने बनती है। अगर इसी दीवानगी या शौंक को कॅरियर के रूप में चुने तो कोई बुराई नही है। यह खेल मानसिक एवं शारीरिक के अतिरिक्त आर्थिक रूप से भी लाभकारी है। खिलाड़ी के रूप में कॅरियर बनाना सभी की पहली प्राथमिकता रहती है। देश के बड़े शहरों मे स्थापित क्रिकेट एकेडमी से प्रशिक्षण प्राप्त कर एवं कड़े अभ्यास से आप एक अच्छे क्रिकेट खिलाड़ी बन सकते हैं। विश्विद्यालय,जिला,संभाग,राज्य स्तर की स्पर्धाओं मे हिस्सा लेने वाली क्रिकेट खिलाड़ियों को देश के प्रमुख शासकीय विभाग जैसे एयर लाइन्स, रेल्वे, सेन्ट्रल एक्साइज, आयकर, बैंक इत्यादि नौकरी में सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करते है। शासकीय विभागों के अतिरिक्त कई निजी संस्थाऐं भी क्रिकेट खिलाड़ियों को नौकरी में प्राथमिकता देती है। खिलाड़ी कोटे से मिलने वाली नौकरियों में खेलने हेतु पूर्ण रूप से छूट मिलती है। क्रिकेट खेल से बनने वाले कॅरियरमें आकर्षण कॅरियर बतोर खिलाड़ी ही हो सकता है लेकिन इसके अलावा भी अनेक विकल्प है जिनके माध्यम से क्रिकेट में कॅरियर बना सकते है। ऐसे ही कुछ विकल्प निम्नानुसार है।

1- कोच (क्रिकेट गुरू):- एक खिलाड़ी की काबिलीयत की पहचान और उसकी प्रतिभा को निखारने वाला कोच ही होता है क्रिकेट संसार में कोच की बडी अहमियत रहती है क्योंकि यह अपने अनुभव के माध्यम से भविष्य की नींव तैयार करता है। दरअसल एक खिलाड़ी की उम्र बहुत सिमीत होती है। ऐसे मे उक्त खिलाड़ी रिटायरमेन्ट के बाद कोचिंग का रास्ता चुन लेता है। यानी ज्यादातर पूर्व खिलाड़ी ही इस पेशे मे आते है। लेकिन अब नये लोग भी प्रशिक्षण के बाद सीधे कोच के तोर पर कॅरियर शुरू कर सकते हैं।

2- अंपायर:- अगर आपको-क्रिकेट के सारे नियम पता है। क्रिकेट के हर पहलू का गहरा ज्ञान है त्वरित निर्णय लेने की क्षमता है,बहुत अधिक धैर्यवान है और अच्छे प्रबंधक है। तो अंपायर के तौर पर क्रिकेट से जुड सकते है। इसके लिए अनेक स्तर पर-परीक्षा होती है। क्रिकेट से जुड़े राज्य संगठन इसके लिए समय-समय पर लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षा आयोजित करते है। आपको उक्त परिक्षा उत्तीर्ण करना होती है। इसके बाद राष्ट्रीय स्तर के संगठन बी.सी.सी.आई. की दो स्तर की परीक्षा के लिए योग्य हो जाते है। बी.सी.सी.आई.की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आप उच्च स्तर पर अंपायरिगं कर सकते हैं।

3-क्यूरेटर:- क्रिकेट के खेल का सबसे अहम हिस्सा होता है मैदान के मध्य २२ यार्ड की जगह जिसे पिच कहते है और यह तैय्यार करता है क्यूरेटर, क्यूरेटर वह शख्स है,जो मेंच के लिये खेल मैदान खासकर पिच तैयार करता है। यह एक वैज्ञानिक व्यवसाय है जिसमें मिटट्ी और मौसम दोनों की अच्छी समझ रखना जरूरी है। कोई भी पिच किसी इलाके के मौसम को ध्यान में रखकर तैय्यार की जाती है। क्यूरेटर की पूरी कोशिश होती है कि स्पार्टिंग पिच तैय्यार करें, जिससे बल्लेबाज और गेंदबाज दोनों को बराबर लाभ हो। एक पिच का व्यवहार मुख्य रूप से पॉच चीजों पर निर्भर करता है: मिटट्ी,घास,नमी,रोल का साइज या वजन और मौसम। क्यूरेटर बनने के लिए आपके प्रथम श्रेणी का क्रिकेट खेलने या फिर राष्ट्रीय क्रिकेट केन्द्र में काम करने का अनुभव होना चाहिए। इसके बाद आप बी.सी.सी.आई. से १५ दिन से लेकर तीन सप्ताह का सर्टिफिकेट कोर्स कर सकते है। क्यूरेटर का काम अत्यन्त आवश्यक कार्य की श्रेणी में आता है। क्यूरेटर को हर नई टेक्नालाजी और टेक्निक से खुद को अपडेट रखना जरूरी होता है।

4- कमेंन्टेटर:- मैच की जानकारी स्टेडियम से बाहर देश-दुनिया के क्रिकेट प्रेमियो तक पहुंचाने का दिलचस्प काम रेडियों या टी वी का कमेन्टेटर करता है। टी वी के बजाय अगर रेडियो से शुरूआत करें तो अच्छा रहेगा खासतौर पर निजी एफ एम चैनलो से। रेडियो कार्यक्रम के लिए एक दो मिनट की स्क्रीप्ट लिखकर पडने से शुरूआत कर सकते हैं। कमेन्टेटर बनने के लिए निम्नलिखित विशेषताएं आवश्यक है।

1-क्रिकेट खेल का प्रायोगिक ज्ञान होना आवश्यक है। 2-क्रिकेट से जुडे पुराने आंकडें भी याद होने चाहिए और ताजे अपडेट्स भी पता होना चाहिए। 3-बातचीत करने की कला अच्छी तरह आना चाहिए। 4-हंसमुख स्वभाव एवं हाजिर जवाब होना चाहिए। 5-बोरिगं से बोरिगं मैच को भी अपने कमेन्ट्स से चुटीला बनाने का हुनर आना चाहिए। 6-अपना-अपना दिलचस्प स्टाईल होना चाहिए। 7-अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा पर अच्छा कमाण्ड होना चाहिए।

- राजेश शर्मा
इन्दौर(म.प्र.)

खान-पान पर ही आधारित है स्वास्थ्य

भोजनालयों के विज्ञापनों में हम पढ़ते हैं कि यहां घर जैसा खाना मिलता है, परन्तु कभी-कभी सोचता हूं कि आज घर जैसा खाना नयी पीढ़ी को पसंद ही कहां आता है और पसंद आता तो शनिवार, रविवार या छुट्टियों के दिन बाहर ही खाना खाने का आग्रह क्यों रहता है। कुछ भोजनालयों में लम्बी कतार रहती है, जैसे वहां मुफ्त में ही भोजन परोसा जा रहा हो। हम प्रसन्नता का भी उसी तरह अनुभव करते हैं जैसे कोई किला फतह कर लिया हो। हमारा जीवन भी इसी तरह के विरोधाभासी और उलटवासियों से भरा हुआ है। जब कभी स्वास्थ्य की चर्चा होती है तो रोगों में मांसाहार को एक कारण बताकर शाकाहारी होने का आग्रह किया जाता है। ऐसी स्थिति में मांसाहारी व्यक्ति अण्डे को शाकाहारी सिद्ध करने के तर्क प्रस्तुत करने लगते हैं और स्वास्थ्य वर्धक दूध को भी मांसाहारी की श्रेणी में रख देते हैं, क्योंकि यह माता और पशुओं के गर्भ से प्राप्त किया जाता है, वैसे ही जैसे अण्डा, इस तरह हम दूध के सभी उत्पादों के सेवन से ही वंचित होने लगते हैं। हमारे शरीर की मशीनरी को सुचारू रूप से चलाने के लिए ऋषि मुनियों ने पतंजलि योगपीठ बाबा रामदेव जी और श्री श्री रविशंकर जी ने सुदर्शन क्रिया के प्रचार प्रसार से मानव को विश्व योग दिवस की महत्ता का प्रतिपादन किया। सुबह उठकर तांबे के बर्तन से एक लोटा पानी पीने का आग्रह किया, जिससे कब्जियत से मुक्ति मिल सके, परन्तु ऋषि मुनियों और पशु पक्षियों के स्वास्थ्य का राज बारह बजे तक पानी नहीं पीने का आग्रह रोग निवारण पुस्तक में श्री बी.वी. चौहान ने किया है। बिना चुल्हे के रसोईघर की कल्पना आज कर सकते हैं। उन्होंने अपने तर्कों से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि पके हुए भोजन ही कई बीमारियों की जड़ है जब से आग जलाने का हमें ज्ञान हुआ है हम प्रकृति से बिछुड़ने लगे हैं और जाने अनजाने डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, मोटापा, टी.बी., कैंसर, किडनी और हार्ट की बीमारियों को निमंत्रण दे दिया है, अगर हम बिना पका हुआ भोजन पेड़ पत्तों से प्राप्त भोजन करने लगेंगे तो आंख, नाक, कान और गले के रोगों से भी मुक्ति मिलेगी। चर्मरोग, आर्थाराईटीज, फ्ल्यू, बर्ड फ्ल्यू, स्वाइन फ्ल्यू से मुक्ति प्राप्त कर लेंगे। दोपहर भोजन करने के लिए प्रकृति ने गाजर, ककड़ी, मूली, टमाटर, आलू, गोभी, बीट, गिल्की, लोकी, कद्दू, शकरकंद, तुरई, भिंडी, बैंगन, मटर का आग्रह करते हैं। साथ ही पालक, मेथी धणा, बील पत्र के साथ मुली की पतियां, गाजर के पत्ते, बीट के पत्ते, कच्ची मक्कई और अंकुरित धन्य धान्य जिसे पकाने की कोई आवश्यकता ही नहीं। स्वाद के लिए मसालों से परहेज नहीं है। रस निकालकर भी पी सकते हैं और चटनी बनाकर भी खा सकते हैं। चुला बिना नु रसोइ पुस्तक में श्री कालुभाई डी.सावलीया और श्रीमती रसीलाबेन सावलीया ने कई बानगियों को प्रस्तुत किया है, जिसमें हल्के बघार को भी सम्मिलित किया है। स्वस्थ जीवन की चाबी-नवी भोजन प्रथा, नवी भोजन प्रथा भाग एक-दो रोग निवारण शंका समाधान भाग एक, दो-तीन, भोजन प्रथा में सरल परिवर्तन, काचु खाओ, आयुष्य वधारो, रामबाण इलाज जैसी कई पुस्तकों को बाजार में उतारा है और बाकायदा कैम्प लगाकर भी उसकी जानकारी दी जाती है। इस प्राकृतिक चिकित्सा के प्रावधान हमारे विस्मय का कारण भी बन सकते हैं। क्योंकि दवाओं से राहत मिलती है रोगों का नाश नहीं होता। भोजन से वजन बढ़ता है शक्ति नहीं मिलती- धन से सामान खरीदा जा सकता है, ज्ञान नहीं। पुस्तकों में जानकारी होती है ज्ञान नहीं। पानी पीने से साफ मोशन आ जाती है, किसी को चाय पीने के बाद ही मोशन लगती है। अगर सुबह में दोनों ही छोड़ दिया तो हम निरोगी रह पाएंगे-यह शंका है तो उसका समाधान भी है। तम्बाकू, बीड़ी, सिंगरेट, दारू आदि व्यसन छोड़ने पर मानव की जो परिस्थिति होती है वैसा होगी हो सकता है। एक माह तक स्वच्छ पानी का एनीमा भी लगाना पड़े, परन्तु एक बार व्यसन छुट जाने के बाद स्वस्थ महसूस करेंगे। साहित्य का अध्ययन करने के बाद महसूस हुआ कि इस प्रथा के प्रचारक स्वयं भी जानते हैं कि इतना कठिन जीवन आज का मानव जीने को तैयार नहीं होगा, वह समाज नई बात नौ दिन तक अपना सकता है, करोड़ों लोगों ने योग शिविरों में भाग लिया, परन्तु योगी कितने निकलें। उसी प्रकार इस पद्धति को अपनाने वाला समाज से कट जाएगा यही नहीं एकाकी और दुर्लभ प्राणी की श्रेणी में आ जाएगा धीरे-धीरे डिप्रेशन का भी शिकार होने लगे, इसलिए आग्रह किया है कि कुछ समय तक दूध की सभी सामग्री और पकाया भोजन बंद करना चाहिए और बाद में रात्रि को पकाया हुआ भोजन रोटी, दाल-चावल, खिचड़ी, कड़ी, सब्जी, अचार, पापड़ और पानी की अनुमति है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की नेचरोपैथी इलाज ने खांसी सर्दी दूरकर दी, परन्तु क्या इस तरह का ही प्रावधान बेंगलोर का हो तो उसे चालू रख सकते हैं। सदा निरोगी रहने के लिए एलोपैथी, होम्योपैथी, आयुर्वेद, नेचरोपैथी और योगासन जैसी कई रोग निवारक पद्धतियों का अस्तित्व है, सबके अपने अपने दावे है। रिएक्शन के खतरे भी है किसी पद्धति को अपनाकर निरोगी होना हमारा लक्ष्य होना चाहिए, ना कि अंधानुकरण- हमारा मंत्र सर्वे भवन्तु सुखीन : सर्वे सन्तु निरामय :

सर्वे भद्राणी पश्यन्तु मा कश्चीत दु:ख भागमवेद्

एक बार हम मित्रों ने रायपुर (म.प्र.) में बिहार का एक योग केन्द्र ज्वाइन किया। नेती, असली घी की खिचड़ी और योग ने एक मित्र की सारी चरबी खतम कर दी, शरीर उतर गया। लोगों ने बीमार हो? क्या हुआ है पूछना शुरू किया। सौ लोगों ने कुत्ते को गधा कहा तो उन्होंने उसे गधा मान लिया वाली कहानी चरितार्थ हो गई। देखते ही देखते भारी अवसाद में आ गया रोज मरने के और उसके बाद बच्चों का क्या होगा? सपने देखने लगे। उससे बाहर निकालना हमारे लिए चुनौती बन गया था। एक रोज सभी मित्रों ने दो-दो नए ड्रेस सिलवाने की इच्छा उसके सामने रख दी। उसने भी सहर्ष स्वीकार कर लिया। नये कपड़ों की फिटिंग भी दुरुस्त थी वह अच्छा दिखाई देने लगा। कपड़ों की तारीफ के साथ उसकी भी आकर्षक दिखने की तारीफ होने लगी और वह बीमारू परिस्थिति से बाहर आकर सचमुच विजयी बन गया।

उपरोक्त लेख का उद्देश्य भी यही है अंकुरित भोजन अच्छा व स्वास्थ्यवर्धक है परन्तु सुबह पानी छोड़कर पका हुआ भोजन छोड़कर व्यक्ति अपने आपको बीमार न समझ ले। अगर बीमार है तो उपचार आवश्यक है, परन्तु मोटापा कम करने और कुछ नया करने की लालसा परेशानी में डाल सकती है।

- प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा (राज.)
8003063616

'भगवान के नाम' का आश्रय लेने वाला है भाग्यवान

अमृत बिन्दु

1- जो मनुष्य, सचमुच भगवान के नाम का आश्रय ले लेता है, वही भाग्यवान है, वही सुखी है और वही सच्चा साधक है।

2- संसार में अनुकूल-प्रतिकूल-वृत्तियां रखना ही संसार में बंधाना है।

3- प्रकृति और पुरुष एकता ही मान्यता वाला सम्बन्ध छटने पर क्रियाएं तो होंगी, पर कर्म नहीं होंगे।

4- न्यायोपार्जित द्रव्य से एक मुट्ठी चना ही मिले तो वह भी मेवा-मिठाइयों से बढ़कर है।

5- पर स्त्री के दर्शन चिन्तन एवं स्पर्श का तो त्याग कर ही देना चाहिये, यदि किसी कार्य से आवश्यक बात करनी ही पड़े, तो नीची दृष्टि रखकर माता-बहन समझते हुए ही सम्भाषण करना चाहिए।

6- सद्व्यवहार और सद्भाव से परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है।

7- प्रतिकूल परिस्थिति साधक को शुद्ध बनाने तथा सजग करने वाली होती है।

8- समय का ठीक सदुपयोग न करने वाला व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता।

9- संसार के पदार्थों से वैराग्य और सब में ईश्वर-दृष्टि से प्रेम करने का उद्देश्य रखना चाहिए।

10- भगवान का भय और भगवान का भरोसा ही मनुष्य को पाप से बचाने का एक मात्र सर्वोत्तम साधन है।

11- जैसे सूर्योदय होने पर अंधकार को कहीं जगह नहीं मिलती, इसी प्रकार ईश्वर प्रेम की जागृति होने पर विषयासक्ति का नाश हो जाता है।

12- जो एक क्षण भी नहीं टिकता, उस संसार को प्राप्त मान लिया, इसी से जो परमात्मा नित्य निरन्तर प्राप्त है, उनका अनुभवन नहीं होता।

- डॉ. रेनु नागर, मथुरा

स्वरचित भजन- ओढी रे चुनरिया...

(तर्ज-गोरे तन पर चमके बिजुरिया)
माया के तन पे ओढ़ी रे चुनरिया
गुरू ने ओढाई मोहे, ज्ञान चुनरिया
मोरे रामा दाग ना लग जाए,
प्रभुजी कहीं मैली ना हो जाए। माया...

1- बड़ी मुश्किल से मिली है चुनरिया।
बड़े ही जतन से मैं राखूंगी सांवरिया।।
मोरे रामा, रंग ना उतर जाए।
प्रभुजी कहीं दाग ना लग जाए।। माया...

2- प्रेम को निर्मल नीर ले आऊं।
भक्ति को साबुन मैं लगाऊं।।
मोरे रामा मैली ना रह जाए।
प्रभु कहीं दाग ना लग जाए।। माया...

3- लाल गुलाबी रंग नहीं भावे,
नीलो-पीलो रंग ना सुहावे।।
मोरे रामा श्याम ही रंग भावे।
प्रभुजी केसरिया ही रंग भावे।। माया...

4- चुनरी ओढ़ सत्संग में मैं आऊंगी।
तोरे आगे नाचूं कान्हा तोहे ही रिझाऊंगी।।
मोरे रामा नजर ना लग जाए।
प्रभुजी रंग फीको ना पड़ जाए।। माया...

नागर को ओढ़ाई रे चुनरिया
बड़े ही जतन से मैं ओढूंगी सांवरिया
मोरे रामा ज्यों ओढू रंग आवे,
प्रभुजी कहीं फट तो नहीं जाए।। माया...

-सौ. सुमनलता नागर
मोहन बडोदिया,
शाजापुर

आयुर्वेद में है रोग को उखाड़ फैंकने की क्षमता

आज के इस वर्तमान युग में प्रत्येक मानव अपने आहार-विहार की ओर ध्यान नहीं देने के कारण-अपचन-गैस-शुगर-उदररोग-यकृत प्लीहा रोग-मदात्यय-मोटापा-स्नायविक शूल गृधसी-हिस्टीरिया आदि कई रोगों से जूझना होता है। वैद्य के द्वारा रोग के निदान रूप पूर्वरूप लक्षण के परीक्षण के उपरान्त ही चिकित्सा की जाकर रोगी को रोगमुक्त किया जा सकता है। सही परीक्षण नहीं होने से रोगी स्वस्थ नहीं हो सकता।

वर्तमान समय में रोग उपचार के लिए निम्नानुसार योग दिए जा रहे हैं। जिससे जनहित में लाभ मिलेगा।

1- **मधुमेह-शुगर रोग** :- भावप्रकाश निघन्टु-
1- बड़ी जामुन (यूजेनिया जम्बोलेना) 100 ग्राम
2- गुढ़मार (अजयंगी) मधुनाशिनी-100 ग्राम
3- जारूल (लाजर स्ट्रोमिया फ्लोसरेजिनी) 50 ग्राम

अनुपात-उपरोक्त औषधियों को पीसकर मेदे की छलनी से छानकर

एक-2 चम्मच सुबह शाम जल के साथ उपयोग करें।

पथ्य - शुगर का उपयोग नहीं करें। हमेशा हरी सब्जियों का उपयोग करने के साथ-साथ प्रातः काल घूमने अवश्य जावें। औषधि प्रारम्भ के बाद 20 दिन में जांच आवश्यक करवाएं।

2- रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) भावप्रकाश निघन्टु
1- सर्पगन्धा (धवल बरुआ) लेटिन-राकेलफिया सर्पेन्टाइना)
2- अर्जुन छाल (कहू-कोइ) लेटिन-टर्मिनलिया अर्जुन
1- गुण-सर्पगंधा द्वारा रक्तचाप वाताउन्माद अनिद्रा एवं मानसिक विकारों में उत्कृष्ट औषधि सिद्ध हुई है। उक्त औषधि का प्रभाव 3-7 दिनों में होकर 3-6 सप्ताह में इसका पूर्ण प्रभाव स्पष्ट होता है। रक्तचाप की अधिकता के लिये यह सबसे कम विषेली तथा उत्कृष्ट औषधि है।

लाभ :- इसमें विशेष लाभ यह है कि एकाएक परिवर्तन जन्य रक्तभारात्पता तथा बहुत अधिक रक्त भारात्यता नहीं होती। विशेषकर बढ़े हुए रक्तचाप के लिए अमृत तुल्य औषधि है।

2- गुण-लाभ अर्जुन छाल पूर्णशीत-वीर्य कफ पित्त श्यामक हृदयोत्तेजक रक्तसंग्राहिक हृदय के विकास तथा रक्तवाहिनियों का सेमोय होकर इसमें चुने के कारण रक्त के जमने के कार्य बढ़ने से लाभ होता है। अतः लोरक्तचाप में अर्जुन छालपूर्ण तथा सर्पगंधा चुर्ण दोनों को समान भाग में पीसकर 500 मि.ग्रा. केपसूल में भरकर जल के साथ उपयोग करने से उच्च रक्तचाप-लो रक्तचाप में नियंत्रण होता है।

3- **अर्श (बवासीर)** - भावप्रकाश निघन्टु
1- एलुआ (मुसब्बर) (लेटिन-एलोबार्बा डेन्सिस)

गुण एवं प्रयोग इससे यकृत की क्रिया में सुधार होकर अन्न का सात्मीय करण ठीक होता है। इसका प्रभाव बड़ी आंत पर होता है, जिससे कटिस्थ अंगों जैसे गुदा एवं अन्य अवयवों में रक्ताधिक्य होकर विरेयक गुण होने के कारण विबंध-अर्श रोग में लाभकारी है।

2- **हरीतकी**- (हरड़) लेटिन टर्मिनेलिया चेब्युला)

गुण प्रयोग- यह कटु उष्ण विरेचन दीपन कफ वातहर अत्यंत तीव्र विरेचन है। यह अर्श रोग खूनी एवं बादी में मलों का हरण कर अर्श रोग ठीक करता है। (क्रमशः)

- डॉ. व्ही.डी. शर्मा
'आयुर्वेद भूषण'
शाजापुर
मो. 9424875332

पुष्पांजलि

प्रेरक शमित भाव से शिशु को
मात जगाती दे ताली
वह तो बनी प्यार की पूजा
उषा की अनुपम लाली
माता की मधुरम बगिया में तो
देव मरुत साकार हुए
वसुधा पर अंकित माय भाव सब
पिक स्वर में नूतन गान हुए
दिवा चक्र का शुभम समय है
श्री चरणों में नमन करू
पोषक प्यार नवल बेला में पद-
पराग से तिलक करू

जननी ज्योर्तिमय सित-सरोज
वसुधा पर अनुपम दर्शन है
हृदय सिंधु में प्यार बसा
भूतल का मधुरम मोती है
युग जननी के आशीषों से
जन-मन की ज्वाला दूर हुई
नव कोमल आलोक धरा पर
अविरत ममता गति मान हुई
हे वासुदेव विनती तुमसे
तुम मात्र भाव गतिमय करना
अध-तम तिमिर हटा दुनिया से
हे अरूप नव-लय देना
दिखता शून्य हृदय तल सर है
हर तन्वी में भाव नहीं
कौशल्या अनुसूया ओ सीता
सा पावन सम्मान नहीं
झूठे पथ की इन राहों में अविरत
निश्छल भाव नहीं

सावित्री-शिव प्रिया अहिल्या,
सा तप बल आसान नहीं
विकसित नहीं ज्ञान की बेदी
जीवन में बलिदान नहीं
संस्कृति की अनुपम चिंगारी
का होना आसान नहीं
माता हमरे सब कर्म तुम्हारे
चरण कमल में अर्पित हो
हर कर्म सुकृत सा प्यार बने
और पुष्पांजलि समर्पित हो

- सुभाष नागर आशु
राजगढ़

RYDAK

(RED)

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

75, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

अच्छे स्वास्थ्य का सूत्र

उठो, ब्रह्म मुहूर्त

प्रातः लगभग चार बजे से सूर्योदय का समय ब्रह्म मुहुर्त कहलाता है। ब्रह्म मुहुर्त अर्थात भगवान का समय। इस समय प्रकृति के पांचों तत्व- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश समान अवस्था में रहते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य के दर्शन होते हैं। यह समय हमारे तन-मन और आत्मा के विकास के लिए आनंद दायक होता है। वातावरण में पक्षियों की चहचहाहट, हवा की सरसराहट और शीतल मंद, समीर, शुद्ध, स्वास्थ्य वर्धक, जीवन प्राण वायु सर्वत्र व्याप्त रहती है। हरी-हरी दूब जो कि ओस से भीगी होती है। उस पर नंगे पांव चलना सुखकर लगता है। कई प्रकार की व्याधियों से राहत मिली है। नेत्र ज्योति तेज होती है। इस समय हमारे शरीर में स्फूर्ति और ताजगी रहती है। इस समय कार्य करना अच्छा रहता है। इसलिए हमारे पूर्वजों ने दिनचर्या का शुभारंभ ब्रह्म मुहूर्त करने का निर्देश दिया। इस पर अमल करने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। दुर्गुण दूर होकर सद्‌गुणों का विकास होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि जो व्यक्ति आलस्य का त्यागकर सुबह जल्दी उठता है वो सुन्दर चरित्र का वीर पुरुष पुत्र पौत्रादिक और आयु को बढ़ाकर, निरन्तर सुखी रहता है। सुबह नींद तो बहुत अच्छी आती है क्योंकि वातावरण शान्त और शीतल रहता है। परन्तु ऐसे में इच्छा नहीं होने पर भी बिस्तर त्याग देना चाहिए। प्रातः जल्दी उठना मनुष्य को स्वास्थ्य और बुद्धिमान, आरोग्य व बल प्रदान करने वाली सूर्य की किरणों का लाभ प्राप्त करवाता है।

आयुर्वेद के अनुसार ब्रह्म मुहुर्त में उठने से वर्ण, कीर्ति, मति, लक्ष्मी, स्वास्थ्य आयु की प्राप्ति होती है।

आरोग्य शास्त्र के अनुसार जो व्यक्ति सूर्योदय के बाद उठते हैं उनकी श्वास-प्रश्वास की क्रिया सही तरीके से नहीं चलती है। ऐसे व्यक्ति कई प्रकार की व्याधियों के शिकार हो जाते हैं। उन्हें बैचेनी, आलस्य, थकावट जैसी कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसके लिए अंग्रेजी में कहावत है-

**'अरली टू बेड एण्ड अरली टू राइज,
मैक्स ए मैन हैल्थी-वेल्थी एण्ड वाइज'।**

- अर्चना आशुतोष याज्ञिक
बड़ौदा, 9574993479

विकास देशी हो

हम जिस विकास को चाहते हैं वो देश का है
हम इसके लिए समर्पित हैं पूरी तरह
न जाने क्यों फिर भी हमें विकसित नहीं मानते
मुख्य बात है जो विकास के आड़े आ रही है
वो हमारा सोच है जो अभी तक नहीं बदला है
हम अकर्मण्य तो नहीं हैं, लेकिन सुविधाभोगी है
एक पैसा भी यदि मिले तो स्वयं के जेब में जाता है
इसलिये सार्वजनिक सम्पत्ति भी हमारी अपनी है
इस साख के साथ हम विदेशों से स्पर्द्धा नहीं कर सकते
वहां की व्यवस्थाओं को हम आदर्श मानते हैं लेकिन
भारत में कायम नहीं कर सकते
हर सृजन का विरोध करना क्या जरूरी है
हमारे आदर्श भी तो बंटे हुए हैं दिशाओं में
पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
असहनीय से भारत का व्यक्ति भले ही बाहर सुरक्षित है
लेकिन भारत में ही स्वजन असुरक्षित है
अनुशासन की दुहाई हम देते जरूर हैं, लेकिन
तोड़न की राह सबसे पहले तलाशते हैं
सीने का सुर्खदाग अमेरिका में है तो हम उसे
डेनमार्क का दूध भी पिला सकते हैं और
अध्ययन के लिए ऑक्सफोर्ड भेज सकते हैं
हम वहां अनुशासित रह सकते हैं, लेकिन यहां नहीं
राष्ट्र और नस्ल का निर्माण आसान नहीं
उसके लिए सदियां बीत जाती हैं
और कहा जाता है सौ दिन चले ढाई कोस
जितना हजम हो उतना ही खाओ
सुधार के लिए अनुशासित कदम जरूरी है
लेकिन राजनीति हमारी बड़ी मजबूरी है
हम शुरू से ही बंटवारे से खुश रहे हैं
आज भी देश को बांटना चाहते हैं
क्षेत्र, जाति, भाषा, दिशा आदि के आधार पर
एकता को तोड़ने का प्रयास जारी है हमारे द्वारा
प्रयास के प्रकार विभिन्न हैं जो आमजन को नहीं रूचते
सिर्फ अराजकता फैलाकर अपनी अहमियत दिखाते हैं
अरे यही मापदण्ड रहा तो टुकड़े टुकड़े हो जाओगे
खड़े रहकर खाने को जगह भी नहीं पाओगे
पर्यावरण तो दूर होगा ही प्रदूषण मिटा न पाओगे
पहले कर्म के कारण बांटते थे हम लोगों को
बाद में धर्म के कारण बांटने लगे हम लोगों को
आदमी का सिर उत्तर है तो पैर दक्षिण भी है
बाहें भी तो पूरब व पश्चिम कहलाती है
यही स्थिति हमारे राष्ट्र की है जिसे हम
कश्मीर से कन्याकुमारी तक व दाहिने बायें है
अरुणाचल से द्वारका भी तो सबको भाये है
बंटवारे की रेखा से मत करो छलनी देश को
गंगाजल पीने को भी खुद ही तरस जाओगे
इन फुटकर विचारों को त्यागो लाओ अनुशासन
एकता के साथ मजबूत कदम बढ़ाओ प्रगति दर
निर्माण में समय तो लगता है जान लो
छोटे-छोटे स्थानों को संवार दो मान लो
राष्ट्र की एकता के साथ खेलमत खेलो सुन लो
स्मारक बनाना बंद कर इन्हें प्रगति पर वार दो
अलग न हो हम अपनी जड़ से वृक्ष हो सर्वदानी
प्रगति, पल्लवित, पुष्पित, गुम्फित हो महके अगिया सयानी
इस राह पर हम अकेले नहीं अरबों जन हैं
एक साथ उठे तो कदम नहीं कम हैं
आओ संकल्प लें हम उस विकास का जो शुद्ध देसी है
सारी कुंठाओं को छोड़ चल पड़ें मिल जुलकर।

ब्रजेन्द्र नागर
251 श्रीमंगल नगर, इन्दौर

।। ममता की मूर्ति हमारी माँ ।।

क्या होती है माँ की ममता
क्या होता है माँ बिन जीवन
पूछो उनसे जिनके माँ नही है

हमारी माँ जिन्हें हम सब भाई बहन 'बाई' कहते थे। माँ को मम्मी कहना उस समय प्रचलन में नही था। एक वर्ष गुजर गया परन्तु माँ का अभाव, यादें आज भी भुलाए नहीं भूलती अतीत में खोती हूँ तो उनके जीवन की बहुत सी महत्वपूर्ण बाते, घटनाएं मस्तिष्क मे कौध जाती है। मध्यप्रदेश के देवास जिले के सोनकच्छ तहसील का एक छोटा सा ग्राम इकलेरा (जो इकलेरा माताजी के नाम से प्रसिद्ध है) में जन्मी, पली बडी व १२ वर्ष की अल्प आयु मे ''बालिका वधू'' बन गई च चांचोड़ा आ गई। उस युग में आवागमन के साधन इतने सुगम नही थे। इकलेरा से चांचोड़ा आना जाना किसी विदेश यात्रा से कम नहीं था। आज हम भाई बहन सोचते है कि हमारे नानाजी पं. अनन्त नारायण जी ने इतनी दूर अपनी छोटी सी प्यारी बेटी पुष्पा को कैसे व क्या देखकर विवाह के बंधन में बांध दिया। हमारे दादा जी स्व. पं. चतुरभुज जी उस समय जमीदार थे। समाज में संपन्न घराना कहलाता था। जैसा कि सभी जानते है कि हर लडकी अपनी किस्मत साथ लेकर आती है जो जीवन पर्यंत कर्तव्य, कर्म निभाते हुए स्वय ने सुखी जीवन जिया और पूरे चांचोड़ा व हमारे परिवार को एक सूत्र में बांधे रखने की प्रमुख सदस्यों में बनी रही। छोटी उम्र मे विवाह होने के कारण उनके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास तो सम्भवतः ससुराल में ही हुआ होगा। घर में सासूजी (हमारी दादी) तो विवाह पूर्व से ही नही थी। जेठानी, देवरानी, ननंद, भतीजे, भतीजियों के साथ रहते हुए तालमेल बैठाना उनका सम्मान करना संभवतः उनकी धार्मिक प्रवृत्ति का पैतृक गुण ही कहा जाएगा।

हमारी 'बाई' के विषय में जैसा हमने देखा और वरिष्ठों से सुना यदि लिखने बैठूं तो पुस्तक का आकार ले ले। कडी मेहनत, परिश्रम से न घबराते हुए कार्य को सुलभ बनाना उनके स्वभाव में था। उनके लिये कोई काम छोटा व कठिन नही था। चाहे वह चक्की (घट्टी) पीसना हो या गोबर के कण्डे थेपना हो। गाय हमारे घर में हमेशा रही। जिससे हमें कभी दूध, दही की कमी महसूस नही हुई। हमारे काकाजी (पिताजी) के खादी के कपडे जितने साफ वो धोती थी शायद आज की कोई वाशिंग मशीन नही धो सकती। लगभग सारा काम हमारे घर मे हाथ से होता था, यहां तक कि शादी विवाह में भी। उनके कार्यो मे हम बच्चे भी सहयोग करते थे।

जब भी उज्जैन आती महाकालेश्वर मंदिर के दर्शन किए बगैर नही जाती थी। महाकाल मे आस्था का परिणाम ही कहा जाएगा कि ०७ मई २०१४ की अंतिम सांस भी उज्जैन में महाकाल के चरणो मे ही ली। यद्यपि हमारे काका जी (पिताजी) बहुत धार्मिक प्रवृत्ति के नही रहे किन्तु उन्होंने उनके सभी धार्मिक अनुष्ठानो को पूर्ण करने में पूर्ण सहयोग किया। चाहे वह सोमवार उद्यापन हो, एकादशी उद्यापन हो या प्रदोष उद्यापन। सब धार्मिक कार्यों से चूंकि उन्हे संतुष्टि मिलती थी। इसलिये उनकी खुशी के लिए वे ये सब काम उनके करवा देते।

अन्त में वे क्षण लिखे बगैर नही रहूंगी जब वे दिल्ली में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से उनके निवास पर मिली। साथ मे मैं व काकाजी भी थे। मै छोटी थी किन्तु समझ थी। इंदिरा जी द्वारा ग्रामीण महिलाओं कीसामाजिक स्थिति पर बाई ने जिस प्रकार उत्तर दिये इंदिरा जी बहुत प्रभावित हुई। अच्छे बच्चे अच्छी बहुएं, नाती पोते, भरापूरा

श्रीमती पुष्पाजी नागर-अवसान 7 मई 2014

परिवार। उनके आशीर्वाद से सभी उच्च शिक्षित हुए। अंतिम समय में बहु बेटे, बेटी पति के साथ थी। उन्होंने जो पूजा पाठ अनुष्ठान किये उसका फल भी उन्हे मिला और उन्होंने सौभाग्यवती के रूप में अपने भरे पूरे परिवार से महाकाल की नगरी से बिदा ली, जो कि हर स्त्री की एक मात्र चाह होती है। अब जी चाहता है बीते समय को वापस ले आउं।

माँ की ममता को समझ पाउं
हर पल मे खुशी देती है माँ
भगवान को क्या पूजे
पूजना है तो माँ को पूजो
क्योंकि भगवान को भी जन्म देती है माँ

- डॉ. सुधा मेहता, उज्जैन

यज्ञाचार्य पं. त्रिवेदी का निधन

शाजापुर के समीपस्थ ग्राम बिरगोद निवासी यज्ञाचार्य पं. छगनलाल त्रिवेदी का 75 वर्ष की उम्र में लम्बी बीमारी के पश्चात शुक्रवार को सायं निधन हो गया। आप दस वर्ष की उम्र से ही अपने पिताजी के साथ यज्ञ में जाते थे। आपके निर्देशन में करीब 351 यज्ञ सम्पन्न हुए। पं. त्रिवेदी ज्योतिष के भी विद्वान थे। शनिवार को प्रातः ग्राम बिरगोद से निकली पं. त्रिवेदी की अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में समाजजनों, ग्रामीणजनों ने भाग लिया। अंतिम संस्कार पं. त्रिवेदी के कृषि फार्म हाउस पर किया गया। जहां चिता को मुखाग्नि उनके ज्येष्ठ पुत्र सुरेशचंद्र त्रिवेदी ने दी। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। कृषि फार्म हाउस पर आयोजित शोकसभा में नागर युवा परिषद शाजापुर के अध्यक्ष संजय नागर, रमेशचंद्र नागर, महेश नागर, रामेश्वर नागर, छगनलाल मेहता, जगदीश नागर, महेश मेहता, गजेंद्र शर्मा, मनोहरलाल शर्मा, कैलाश मेहता आदि ने पं.त्रिवेदी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

माँ की भक्ति से मिल सकते हैं परमात्मा...

स्मृति शेष- स्व. श्रीमती इन्दिरा बलिराम पंडित
11 अप्रैल 1979

माँ शब्द में सम्पूर्ण सृष्टि समाई हुई है। 'मां' शब्द के अनेक अर्थ है साथ ही मां सुनते ही हमारे दिमाग में अनेक छबियां आने लगती है। मां दुनिया की एक ऐसी हस्ती है, जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती है।

किसी ने ठीक ही कहा है-

भगवान हर व्यक्ति के घर जाकर उसे प्रेम नहीं दे सकता, इसीलिए उसने- मां बनाई और साथ ही देखिए, भगवान की भक्ति करने से शायद हमें मां न मिले, लेकिन मां की भक्ति करने से भगवान अवश्य मिलेंगे ...

कहने का तात्पर्य यह है कि मां वह शख्सियत है जो प्रेम, प्यार, समर्पण, कर्त्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी, परोपकारी होती है। एक निर्झर झरने की तरह होती है। अपने परिवार-बच्चों के लिए पूरी तरह समर्पित रहती है। माँ ईश्वर से कभी भी अपने लिए नहीं कुछ मांगती है- वो हमेशा अपने पति अपने बच्चों की खुशी व सुखी होने की कामना करती है।

बस ऐसी ही थी हमारी 'मां' - श्रीमती इन्दिरा बलिराम (खण्डवा)

11 अप्रैल 1979 की सुबह आज भी हमें याद है। हमारे सबसे बड़े भाई- डॉ. रमाकांत पंडित के यहां 3 अप्रैल 1979 को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।

सभी बहुत खुश थे, हमारी पीढ़ी में पहला चिराग हमारे परिवार में आया। चारों तरफ खुशी का माहौल था। हमारी मम्मी जो कालमुखी (खण्डवा) रहती थी, दूसरे ही दिन खण्डवा आई, अपनी बहू विपूला रमाकान्त पंडित और अपने पोते 'सोनू' (पीयूष पंडित) से मिली- उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। हर चीज वे करना चाहती थी, अपने पोते के लिए। उसी दिन उसके लिए कई वस्तुएं खरीद कर लाई और अपनी सास 'जमना देवी पंडित' यानी हमारी दादी मां को दिखा-दिखाकर खुश होती रही। दूसरे ही दिन अचानक तबीयत कुछ खराब लगने लगी, हमारे मामाजी आये और कहने लगे जीजी चलो इन्दौर डॉ. को दिखाकर आते हैं। वे सहज भाव में मान भी गई। मामाजी उन्हें इन्दौर ले गए... जाते समय वे कहने लगी तुम लोग सब तैयारी करके रखना अपने को पूजा कार्यक्रम बहुत अच्छा करना है... बस वे चली गई... और बस फिर वहां से लौट कर नहीं आई... उन्हें डॉ. को दिखाया- उन्होंने कहा इन्हें अस्पताल में भर्ती करना होगा- इन्दौर एम.वाय हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया, कई तरह के टेस्ट हुए- इलाज शुरू लेकिन हम लोगों को पता नहीं था, अब कुछ नहीं होगा- अच्छे से अच्छा इलाज हुआ, लेकिन विधि का विधान तो कुछ और ही था। 11 अप्रैल 1979 उस दिन 'रेणुका चौदस' थी- हमारे लिए मनहूस दिन साबित हुआ। हमारा सब कुछ खत्म हो गया।

36 साल हो गए हमारी मां को गए, लेकिन आज भी वो दिन आते ही सब याद आ जाता है और आंखों से बरबस नीर बहने लगता है। आज सब कुछ है सभी अपने-अपने परिवारों में बच्चों के साथ खुश है, लेकिन मां का न होना आज भी अखरता है। मां का ही आशीर्वाद और प्यार है जिसकी वजह से आज हम सब एकसाथ खुशहाली से सुखी जीवनयापन कर रहे हैं। उन्हीं की प्रेरणा से हम लोग विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए भी साहस और धैर्यता से हर काम को पूरा कर रहे हैं। उनके दिए संस्कार ही हमारी सबसे बड़ी दौलत है- आज हमारा पूरा परिवार उन्हें उनकी पुण्यतिथि पर विनम्रता से अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। मैं उनकी सबसे छोटी बेटी अणिमा दीप याज्ञनिक हूं- कोलकाता में रहती हूं। अपने दोनों बच्चों के साथ मां को श्रद्धा-सुमन अर्पित कर रही हूं।

- अणिमा दीप याज्ञनिक
कोलकाता, 9831724829

रामभक्त श्री जानकीलाल जी नागर

अवसान 14 अप्रैल 2009

जहां श्रद्धा और विश्वास है, वहीं ईश्वर है। भगवान भोले नाथ और पार्वती माता को एक नाम बहुत प्रिय है और वह है प्रभू श्रीराम भगवान का नाम। भोले बाबा राम नाम में ही मगन रहते हैं, जिस पर शंकर की कृपा होती है, उसको प्रभू राम की भक्ति अवश्य प्राप्त होती है। संसार में जितने भी जड़, चेतन और जीवात्मा रहते हैं। उन सभी को राममय जानकर उनको प्रणाम करना चाहिए। कलियुग में राम नाम सभी पापों को जलाकर भस्म कर देता है। श्री प्रभूराम की प्रभुता ऐसी अकथनीय है, फिर भी इसको कहे बिना कोई रह नहीं सकता। भगवान के भजन करने का भी अपना प्रभाव है। भगवान की महिमा का वर्णन करना तो कठिन है, लेकिन जितना बने, भगवान का नाम अवश्य जपना चाहिए। क्योंकि प्रभु परम दयालु है, तथा थोड़े में ही प्रसन्न होकर अपने भक्तों को भव से पार कर देते हैं। कलयुग में यह राम नाम मनोकामनाएं पूर्ण कर देता है और अन्त समय आने पर श्री हरि के परमधाम में पहुंचा देता है। हमारे पूज्य पिताजी श्री जानकीलाल जी भी रामभक्त थे, तथा भगवान राम का नाम ही उनका आधार था, वे भले ही आज हमारे बीच नहीं है, परन्तु उनके आशीर्वाद हमारे साथ ही है।

नतमस्तक समस्त नागर परिवार
डिकैन, रतलाम, इंदौर, अहमदाबाद।

- सीमा शर्मा, इंदौर
मो. 9926563129

एक कर्म योगी

श्री गमनीराम जी नागर
अवसान - 1 फरवरी 2015

भगवान भास्कर अपनी स्वर्णीम के साथ पूर्वांचल में उदित हो रहे थे। उस मधुर समय वि. संवत 1983 मगसर शुक्ल 6 के दिन सर्व श्री हिंदुमल जी नागर की धर्मपत्नी श्रीमती टीपूबाई की कोख से पुत्ररत्न ने जन्म लिया। पिताश्री के बहिन तो थी नहीं तो तत्कालीन पंडित जी ने चंद्रमा की स्थिति को देखकर उनका नामकरण संस्कार किया और नाम दिया 'गुमनाराम'। परिवार में हर्ष व आनंद का माहौल था पिताश्री का तखतगढ़ में बहुत बड़ा व्यवसाय था। पुत्र प्राप्ति की इतनी खुशी थी कि बाजार के सभी व्यापारियों व सगे सम्बन्धियों को होली के त्यौहार पर गोट दी। जिसमें भंग मिश्रित ठंडाई व भंग के पकोड़े विशेष थे। भाई साहब श्री गुमनाराम जी का नाम अपभ्रंश होकर गमनाराम हो गया। पांच वर्ष की आयु तो खेल-खेल में ही बीत गई। सन् 1912 में पिताश्री हिंदुमल जी सुमेरपुर आ गए थे। उस समय सुमेरपुर में केवल प्राथमिक पाठशाला ही थी। कहते हैं कि होनहार बिरवान के होत न चिकने पात, भाई साहब के अंतर में बैठा कवि प्रकट होने लगा। उन्होंने सप्तम वर्ग से ही सामाजिक सौहार्दय पर एक कविता रची थी, उसमें राष्ट्र प्रेम स्पष्ट झलकता था। आपने सप्तम वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उच्च शिक्षा के लिए आप जोधपुर गए परन्तु वहां का पानी रास नहीं आया। सालभर में तो आप बीमार हो गए। कई प्रसिद्ध डॉक्टरों को बताया। उन्होंने आंत में क्षय रोग बताया जो शल्य क्रिया से ही ठीक होगा, परन्तु पिताश्री शल्य क्रिया के लिए सहमत नहीं हुए। कई प्रसिद्ध डॉक्टरों का इलाज लिया पर मरज बढ़ता ही गया। हमारी नानी मां ने मीरादातार उनावा गुजरात जो ऊझा के पास स्थित है, ले जाने का आग्रह किया वहां पर भी ले गए। वहां पर 6 महीने ठहरने पर परिणाम कुछ नहीं। भाईसाहब के स्वास्थ्य में कोई प्रगति नहीं हुई। आखिरकार थक कर उन्हें सुमेरपुर लाना पड़ा। सुमेरपुर से डेढ़ कि.मी. दूरी पर शिवगंज नाम का कस्बा है वहां माणसा वाले वैद्य थे। जो क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध थे। उनसे आयुर्वेदिक उपचार प्रारंभ किया व वैद्य जी ने गाय का धारोष्ण दूध पिलाने की सलाह दी। पिताश्री वह भी व्यवस्था कराई पर बीमारी पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। तब वैद्य जी ने बकरी का धारोष्ण दूध पिलाने की सलाह दी। पिताजी ने एक बहुत ही सुंदर बकरी खरीद ली। घर में श्री चारभुजी विष्णु भगवान की पूजा है, इसलिए घर में बकरी बांधना निषेध है। दूसरे दिन से ही बकरी को भयंकर दस्ते होने लगी व बकरी मरणासन अवस्था में पहुंच गई। इधर भाईसाहब का स्वास्थ्य भी गंभीर स्थिति में। पिताजी ने परिस्थिति गंभीरता को भांपते हुए बकरी को बिना मूल्य लिए ही उसके मालिक को लौटा दी। भाईसाहब इतने कमजोर हो गए थे कि उठना बैठना दो कदम भी चलना फिरना उनके वश की बात नहीं रही। सुमेरपुर के निम्बेश्वर महादेव का प्राचीन मंदिर है वहां पिताश्री ने भाईसाहब के निरोग होने की मानता मांगी थी। उसके लिए वैषाख शुक्ल पूर्णिमा पर लगने वाले मेले में ठंडा जल की व्यवस्था करने का संकल्प लिया। पिताश्री के शुभ संकल्प को 70 साल तक निभाया। मंदिर परिसर में मंदिर ट्रस्ट ने शीतल जल की स्थाई व्यवस्था करवा दी। अतः हमें अपनी ओर की व्यवस्था को विवश होकर स्थगित करना पड़ा।

श्री मोतीलाल जी परमार पिताजी के अच्छे मित्र थे। उन्होंने सलाह दी कि इनको प्रातः काल सूर्य की किरणों में प्रतिदिन 2 घंटे केवल अंडरवीयर या गमछा लपेट कर सीधा सुला दो। गरमी से बचने के लिए सारा शरीर केले के पत्तों से ढक दो। इस प्रयोग का चमत्कारिक ढंग से प्रभाव होने लगा। भाईसाहब 6-8 महीनों में स्वस्थ हो गए। स्वस्थ होने के बाद आपने जी. रुघनाथमल बैंक लि. में लिपिक पद पर सेवा दी।

संवत 2004 जेठ सुद 10 को मुंडारा श्रीचारभुजा जी की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ, उसमें पिताश्री प्राण प्रतिष्ठा के पहले दिन सुबह व रात्रि महाप्रसाद की घोषणा कर दी। भाईसाहब बचपन से ही मितव्ययता पर जोर देते थे। इस कारण 3 दिन तक अनमने रहे। उनकी कथनी में सादा जीवन उच्च विचार का आदर्श करनी में करके दिखाया। सन् 1954 अप्रैल माह को मेरे परम श्री घिरंजीलाल जी बोहरा के सानिध्य में गायत्री हवन का आयोजन हुआ। तब 'अखंड ज्योति' व युग निर्माण योजना के सदस्य बने थे। उस समय से स्वाध्याय की रुचि जागृत हुई तो अंत समय तक बरकरार रही। कभी-कभी कहा करते थे कि - खाऊं के न खाऊं तो कबहु न खाइये, जाऊ के न जाऊ तो जरूर चले जाइये।

अर्थात खाने की इच्छा न तो कभी मत खायें, तथा शौच जाने की अनइच्छा हो तो जरूर चले जाना चाहिए।

नवम्बर सन् 2003 भीनमाल (राज.) में 108 गायत्री हवन के अवसर पर गायत्री संस्थान के प्रमुख प्रणव पांड्या ने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा दी। उस दिन से दोनों समय संध्या व गायत्री जाप करते थे। भाईसाहब गायत्री हवन को अधिक महत्व देते थे! जहां पर गायत्री प्रज्ञा मंडल द्वारा यज्ञ का आयोजन वहां पर अचूक पहुंच जाते वे एक भजन गाया करते थे।

शक्ति न रहेगी तब भक्ति करो कब, अंतिम दिनों में शरीर में सुगर व नमक की कमी से बीमार हो गए थे। इलाज कराने पर निरोग हो गए थे।

होनहार भावी प्रबल बिलखी कह मुनीनाथ।
यश अपयश जीवन मरण हानि लाभ विधि हाथ

1 फरवरी 2015 शाम को नश्वर शरीर से सम्बन्ध छोड़ कर देव लोक सिधार गए। आपकी धर्मपत्नी गजरा बाइ दो पुत्र भरत कुमार बीई नटवर एमबीए व तीन लड़कियों सबसे छोटी लड़की पद्मा जालोर हायर सेकंडरी स्कूल में प्रिंसीपल के पद पर सेवाएं दे रही है।

आप हम सबके प्रेरणा स्त्रोत थे व भविष्य में उनकी प्रेरणा पथ पर चलेंगे। ऐसे थे वे कर्मयोगी।

उस समय मारवाड़ क्षेत्र में कांग्रेस पार्टी नहीं थी प्रजा मंडल नाम की पार्टी थी उसके भाई साहब सचिव रहे, उस समय आपने सफेद टोपी धारण की थी, जो अंत समय तक उनके साथ रही।

- दयाराम नागर
सुमेरपुर (राज.)
मो. 7742035036

सादगी, सरलता और विनम्रता के धनी थे

नागर ज्ञाति शिरोमणी (मुम्बई की संस्थाओं द्वारा दिया गया अलंकरण), प्रख्यात सेवी तथा गत लगभग 70 वर्षों से कर्मठ कार्यकर्ता भावनगर (गुजरात) निवासी श्रीमान हरकांत भाई देसाई का 93 वर्ष की आयु में दिनांक 13 फरवरी 2015 को प्रातः दिल का दौरा पड़ने से स्वर्गवास हो गया। श्रीमान स्व. हरकांतभाई देसाई ने भावनगर की समस्त ज्ञाति संस्थाओं का 70 से अधिक वर्षों तक नेतृत्व एवं मार्गदर्शन किया, वे राष्ट्रीय स्तर पर भी नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान नई दिल्ली के सलाहकार तथा अखिल भारतीय नागर परिषद के उपाध्यक्ष के पदों पर रहकर वर्षों तक ज्ञाति की सेवा करते रहे।

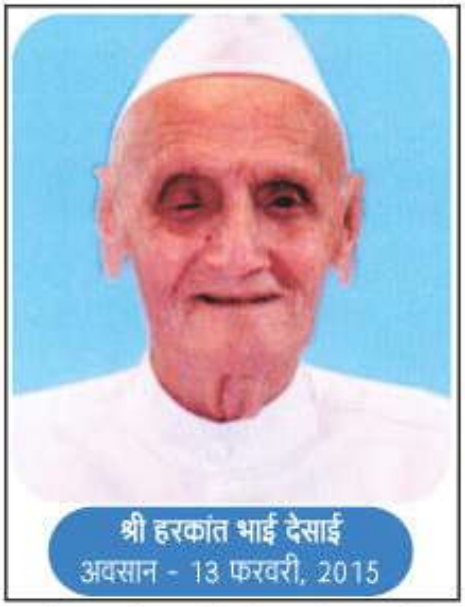

श्री हरकांत भाई देसाई
अवसान - 13 फरवरी, 2015

स्व. श्रीमान हरकांतभाई देसाई जीवन के अंतिम समय तक राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर के ग्राहक सुरक्षा, महिला एवं बाल कल्याण रेड कांग्रेस, परिवार नियोजन से सम्बन्धित मंत्रालयों, विभागों कार्यक्रमों का व्यक्तिगत रूचि लेकर संचालन, क्रियान्वयन करते रहे। आजीवन खादीधारी एवं राजनीति में भी सक्रिय श्रीमान स्व. हरकांतभाई देसाई स्वतंत्रता सेनानी थे। इससे जुड़ी कोई वित्तीय या अन्य सहायता उन्होंने नहीं ली। वे सादगी, सरलता और विनम्रता के लिए प्रेरणास्त्रोत रहे। परिवारजन नौकरी व्यवसाय और सहकारी बैंकों में शिखर पर होते हुए भी अभिमान तो उन्हें छू तक नहीं गया था। वयोवृद्ध श्रीमान स्व. हरकांत भाई देसाई ने आधुनिक विचारों, रीति-रिवाजों को बड़ी सहजता से अपनाया, जिसके कारण वे युवापीढ़ी के भी आदर्श बन गए। उनके कार्यों को गतिशील रखना ही उन्हें सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी। प्रभु स्वर्गस्थ की आत्मा को चिर शांति दें।

- रश्मि पाठक
राष्ट्रीय मंत्री एवं जनसंपर्क अधिकारी

रतलाम में दो भाइयों की पगड़ी रस्म एक साथ

विधि का विधान भी अजीब है, इसे आज तक कोई नहीं समझ पाया। रतलाम में श्री ओमप्रकाश लक्ष्मीनारायण जी शुक्ल का देहावसान 21 फरवरी 2015 को हो गया। उनका उत्तर कार्य 2-3 मार्च को उज्जैन में सम्पन्न हुआ और द्वादश के दिन 4 मार्च को उनके काका के युवा बेटे श्री मुकेश शुक्ल का देहावसान हो गया। परिवार के सदस्यों ने धैर्य रखते हुए निर्णय लिया कि दोनों भाइयों का त्रयोदशा (पगड़ी रस्म) एक साथ 16 मार्च 2015 को सम्पन्न की जावे। दोनों भाइयों की आत्मा को शांति प्रदान करने कीप्रार्थना करने सभी रिश्तेदार एवं समाजजन उपस्थित हुए। शोकाकुल परिवार के मनीष, नितिन, लक्की, दिनेश शुक्ल, कमलेश, निर्मल, गोपाल, कपिल, जयेश, कृतज्ञ, अनीष (हनि) एवं समस्त शुक्ल परिवार ने दोहरे दुःख की घड़ी में संबल देने वाले गणमान्यजनों के प्रति आभार व्यक्त किया है।

श्री हेमेन्द्र नागर को श्रद्धासुमन अर्पित

मात्र 16 वर्ष की आयु में पत्रकारिता क्षेत्र में पदार्पण करने वाले झाबुआ के श्री हेमेन्द्र नागर की तृतीय पुण्यतिथि पर 5 मार्च को श्रद्धांजलि कार्यक्रम स्थानीय श्रद्धानंद बाल आश्रम अन्तरबेलिया पर आयोजित किया गया। गौरतलब है कि श्री नागरजी पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े रहकर क्षेत्रीय समस्याओं के समाधान एवं जन-जागरण के पावन कार्यों में संलग्न रहे। वे कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे तथा उनकी सक्रिय सेवाओं के प्रतिफलस्वरूप नागर समाज, नवदुर्गा उत्सव समिति ने इनका अभिनंदन भी किया।

श्री हेमेन्द्र नागर की तृतीय पुण्यतिथि के श्रद्धांजलि कार्यक्रम में आजाद जिला पत्रकार संघ के कार्यकारी अध्यक्ष राजेश अहिर एवं पदाधिकारियों ने इनके छोटे भ्राता गिरीश नागर को श्रीनागरजी का स्मृति पत्र प्रदान किया गया।

पुण्य स्मरण

स्व. श्री भवानीशंकर जी नागर

सुतारखेड़ा (देवास) 10 अप्रैल 2014

जीवनपथ पर प्रेरणा हो आप, स्मृति में खुशनुमा एहसास हो आप। आसपास नहीं हो तो क्या, पर सदैव हमारे साथ हो आप,

सादर श्रद्धासुमन- समस्त नागर परिवार, कल्पना नागर (पुत्री), पं. मनीष नागर (दामाद), पवन, रवि, जया (भानेज)

नागर परिवार करनावद (घुंसी)

श्रीमती हेमलता दीक्षित, खंडवा

श्री प्रेमलाल दीक्षित सिर्रा की पत्नी, नवीन कुमार, रवीन्द्र कुमार की माताजी श्रीमती हेमलता दीक्षित का देहावसान मार्च 2015 को हो गया।

शोकाकुल- प्रेमलाल दीक्षित, प्रकाशचंद्र दीक्षित, प्रवीण कुमार दीक्षित एवं समस्त दीक्षित परिवार खंडवा

॥ जय श्री कृष्ण ॥

तृतीय पुण्यतिथि

आपकी प्रेरणा, स्नेह, यादें
हमारे जीवन की अमूल्य धरोहर है।
आपका जीवन हमें
मार्गदर्शित करता रहेगा।

श्रीमती
आशा मेहता

अश्रुपूरित श्रद्धासुमन

ओमप्रकाश मेहता
एवं समस्त मेहता परिवार, भोपाल

सादर श्रद्धासुमन

आपके बिन जीवन अधूरा है
मगर आपकी यादों के सहारे
आपके आशीष के दम पर
जीवन की डगर पर
हम चलें आपके
आदर्शों पर ऐसा है
हमारा संकल्प आपके
पुण्य स्मरण पर...

स्व. डॉ. श्री पी.एन. नागर

पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष म.प्र. प्रायवेट मेडिकल प्रैक्टिसनर्स एसो.

24 अप्रैल

श्रद्धानवत- डॉ. श्रीमती ज्योति-डॉ. ओ.पी.नागर, डॉ. संजय-श्रीमती सुमन नागर,
श्रीमती निशा-पं.अशोक जी भट्ट, विकास-श्रीमती कुलदीप नागर,
मोहन नागर-श्रीमती सविता नागर, श्रीमती पुष्पा-छगनलालजी शर्मा,
श्रीमती अनिता-सुरेन्द्र जी मेहता, श्रीमती भावना-रमेशजी मंडलोई,
श्रीमती गायत्री-प्रभात जी मेहता, श्रीमती आशा-सुधीरजी दवे, सपना-आशीष जी दुबे,
डॉ. प्रणव-बरखा नागर, शरद नागर, विशाल नागर, पार्थ भट्ट, पिंगाक्ष नागर, नियति भट्ट,
आयुषी नागर, आयुष नागर एवं समस्त नागर परिवार

अमर स्मृति

पूज्य स्व.
पं. रामस्वरुपजी नागर

पूज्य स्व.
श्रीमती रामप्यारी नागर

समाज की धरोहर को संवारने-संरक्षित करने का बीड़ा उठाया पूज्य गुरुदेव ने, नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास, हरसिद्धि पाल स्थित **श्री हाटकेश्वर धाम** का निर्माण पूर्णता की ओर है।

यह दुर्लभ एवं महान कार्य मालव माटी के प्रवर संत परम पूज्य गुरुदेव **पं. श्री कमलकिशोर जी नागर महाराज** की असीम कृपा से ही पूर्ण होने जा रहा है। पूज्य गुरुवर ने इस महान ऐतिहासिक धरोहर के निर्माण में अपना तन-मन-धन सब कुछ न्यौछावर कर स्वयं रात-दिन लगकर इस धरोहर को समय सीमा से पूर्व पूर्ण किया है। श्री हाटकेश्वर धाम, सुंदर आकर्षक मजबूत स्थायी धरोहर जो कि लाल पत्थरों से सुसज्जित कलाकृतियां के द्वारा बनाई गई है। कुछ समय पश्चात पूज्य गुरुवर इस धरोहर को नागर समाज को लोकार्पित करने वाले हैं। नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास मंडल एवं पूरा नागर समाज हमेशा गुरुदेव को स्मरण करता रहेगा।

पूज्य गुरुदेव को न्यास मंडल की ओर से कोटिशः नमन।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा चैतन्य लोक प्रिंटर्स, 20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यहीं से प्रकाशित
सम्पादक : सौ. संगीता शर्मा (52) मो. 94250 63129
LATE POSTING